‘सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलित संघर्ष’

पाठ्यक्रम कोड़ एवं शीर्षक : HIN – 675 शोध प्रबंध

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

अंबिशा गजानन प्रभू

अनुक्रमांक: 22P0140024

PR Number: 201905513

मार्गदर्शक

दीपक प्रभाकर वरक

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक: दीपक प्रभाकर वरक

Seal of the School

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, "सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलित संघर्ष" is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Mr. Deepak Prabhakar Varak and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

AGPrabhu

Ambisha Gajanan Prabhu

22P0140024

Date: 16-04-2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report "सुशीला टाकभौरे की कहानीयों में दलित संघर्ष" is a bonafide work carried out by Ms. Ambisha Gajanan Prabhu under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Deepak Prabhakar Varak

Date: 16-04-2024

Prof. Anuradha Wagle

Dean, SGLL, Goa University

School Stamp

Date : 16-04-2024

Place : Goa University

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Internship report entitled, **"सुशीला टाकभौरे की कहानीयों में दलित संघर्ष"** is based on the results of investigations carried out by me in the Master of Arts in Hindi at the Shenoi Goembab Languages and literature, Goa University, under the mentorship of Mr. Deepak Prabhakar Varak and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the internship report/work.

I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

APrabhu

Ambisha Gajanan Prabhu

22P0140024

Date: 16-04-2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the internship report **"सुशीला टाकभौरे की कहानीयों में दलित संघर्ष"** is a bonafide work carried out by Ms. Ambisha Gajanan Prabhu under my mentorship in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Masters in the Discipline Master of Arts in Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Deepak Prabhakar Varak

Date: 16/04/2024

GOA UNIVERSITY
SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE
TALEIGAON PLATEAU

School Stamp

Prof. Anuradha Wagle

Dean, SGSLL, Goa University

Date:

Place: Goa University

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय - ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

(Accredited by NAAC)

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/227

Date: 2/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Ambisha Gajanan Prabhu, a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 11hours& 5 minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Deepak Prabhakar Varak.

2/5/24

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Dr. Sandesh B. Dessai
UNIVERSITY LIBRARIAN
Goa University
Taleigao - Goa.

GOA UNIVERSITY
LIBRARY
GOA

VISITS TO THE GOA UNIVERSITY LIBRARY

SR. NO	DATE	TIME	HOURS
113	27-06-2023	1.15pm to 1.30pm	15 min
265	28-07-2023	5.10pm 6.16pm	1 hour 6 min
268	02-08-2023	5.30pm to 5.50pm	20 min
129	07-09-2023	11.50am to 1.25pm	1 hour 35 min
197	12-09-2023	4.40pm to 4.55pm	15 min
181	25-09-2023	4.35pm to 5.10pm	36min
134	06-10-2023	12.05pm to 12.18pm	13min
136	14-10-2023	3.30pm to 5.00 pm	1 hour 30 min
236	16-10-2023	5.30pm to 6.00pm	30 min
18	31-10-2023	10.15 am to 11.35am	1 hour 20 min
84	06-11-2023	05.01pm to 5.45pm	44 min
66	06-12-2023	11.20 am to 12.40pm	1 hour 20min
201	15-01-2024	4.59pm to 6.10pm	1 hour 11 min
13	10-02-2024	11.35am to 11.45am	10 min
TOTAL HOURS			**11 Hours 5 Minutes**

Signature of the Guide
Asst. Prof. Deepak Prabhakar Varak

Signature of the University Librarian
Dr. Sandesh B. Dessai

Signature of the Student
Miss Ambisha Gajanan Prabhu

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ क्र.
	कृतज्ञता ज्ञापन	4
	अनुक्रम	
	भुमिका	1-3
1	दलित अवधारणा एवं स्वरुप 1.1 दलित शब्द का अर्थ एवं परिभाषा 1.2 दलित साहित्य की परिभाषा 1.3 दलित आंदोलन	6-28
2	सुशीला टाकभौरे की कहानियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन 2.1 संघर्ष 2.2 जन्मदिन 2.3 बदला 2.4 सिलिया 2.5 छौआ माँ 2.6 नयी राह की खोज 2.7 धूप से भी बड़ा 2.8 संभव असंभव 2.9 दमदार	30-62
3	सुशीला टाकभौरे की कहानियों में संघर्ष	64-84

	3.1 सामाजिक संघर्ष 3.2 आर्थिक संघर्ष 3.3 राजनीति संघर्ष	
4	सुशीला टाकभौरे की कहानियों की भाषाशैली 4.1 भाषा 4.2 शैली	86-102
	उपसंहार	104-106
	संदर्भ	107-109

भूमिका

इन दिनों हिंदी में दलित साहित्य की व्यापक चर्चा है। यह दलित वर्ग का प्रयोग, हिन्दू समाज व्यवस्था के अन्तर्गत परम्परागत रूप से शूद्र माने जाने वाले वर्षों के लिए रूढ़ हो गया है। दलित वर्ग में वे सभी जातियाँ सम्मिलित हैं, जो जातिगत सोपान पर निम्न स्तर हैं और जिन्हें सदियों से दबाकर रखा गया है। भारतीय समाज में दलित के लिए विभिन्न शब्द प्रयुक्त होते रहे हैं। इनमें शूद्र सर्वाधिक प्रचलित शब्द है, जिसका प्रयोग अधिकांश हिन्दू धर्मशास्त्रों में हुआ है। इसके अतिरिक्त अछूत, अंत्यज, पंचम हरिजन, अस्पृश्य आदि शब्दों का प्रयोग होता रहा है, जो सभी हिन्दू समाज की मानसिकता के परिचायक हैं।

वर्तमान समय में अनेक दलित साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से दलित साहित्य का सृजन कर रहे हैं। इस दृष्टि से देखा जाय तो समकालीन दलित साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन एक विस्तृत एवं वृहद् कार्य बन जाता है। हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान देनी वाली लेखिका सुशीला टाकभौरे के योगदान ने हिंदी साहित्य को महत्वपूर्ण दिशा में आगे बढ़ाया है। सुशीला टाकभौरे दलित साहित्य की महत्वपूर्ण कवयित्री लेखिका एवं विचारक हैं। उनके लेखन में साहित्य और समाज के बुनियादी सरोकारों पर बल दिखाई पड़ता है। सुशीला जी दलित समाज व स्त्री का उत्थान चाहती हैं। इनके साहित्य में दलित समाज, दलित स्त्री व हाशिए पर रहें लोगों का मार्मिक यथार्थ दृष्टिगत होता है। सुशीला जी के विचारों में दलित व स्त्री की समानता का स्वर दिखाई देता है। यथार्थ को प्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्ति करने में सुशीला जी सिद्धहस्त है। सुशीला टाकभौरे जी ने साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे

कविता कहानी, नाटक, उपन्यास, आत्मकथा, निबंध, वैचारिक लेखों के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त किया है।

दलित साहित्यकारों में सुशीला जी ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवायी है। सुशीला जी का व्यक्तित्व बहुआयामी प्रतीभा और विलक्षणा से युक्त है। सुशीला जी स्वयं दलित समाज से होने के कारण

दलितों की व्यथा को नजदीक से देखा और भोगा है। यही कारण है कि इनके साहित्य में यथार्थ प्रकट हो सका है। सुशीला जी की यह विशेषता है कि वे दलित शोषित वर्ग प्रति सहानुभूति नहीं दिखाती बल्कि शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने की संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। मेरे लघु शोध का मुख्य विषय "सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलित संघर्ष" को समझना है। दलित साहित्य भारतीय साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जो समाज के हाशिये पर स्थित लोगों की आवाज़ बनकर सामने आया है। इस शोध में सुशीला टाकभौरे की कहानियों के माध्यम से दलित समुदाय के विभिन्न संघर्षों को जानने और समझने का प्रयास किया गया है।

प्रथम अध्याय में 'दलित' शब्द के अर्थ और परिभाषा का विस्तारपूर्वक विश्लेषण किया गया है। साथ ही, दलित आंदोलन के ऐतिहासिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत किया गया है, जिससे पाठक दलित साहित्य के मौलिक तत्वों को समझ सकें।

दूसरे अध्याय में सुशीला टाकभौरे की कहानियों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें कथानक, पात्र-चित्रण, भाषा शैली, और उद्देश्य जैसे तत्वों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। इन कहानियों में दलित संघर्ष के विविध पहलुओं को दर्शाया गया है, जो उनके साहित्य की समृद्धि को प्रदर्शित करते हैं।

तृतीय अध्याय में, सुशीला टाकभौरे की कहानियों में सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक संघर्ष के विषयों का विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय में इन संघर्षों के विभिन्न रूपों को समझने का प्रयास किया गया है, जो दलित समुदाय के जीवन की जटिलताओं को दर्शाते हैं।

चौथे अध्याय में, सुशीला टाकभौरे की कहानियों में प्रयुक्त भाषा शैली की विशेषताओं का अध्ययन किया गया है। इस अध्याय में उनकी भाषा की अनूठी शैली और प्रभावशाली प्रस्तुति पर विचार किया गया है, जो पाठक को उनके साहित्य से जुड़ने में सहायक है।

इस शोध के माध्यम से मैंने सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलित संघर्ष को गहराई से समझने और उसका मूल्यांकन करने का प्रयास किया है। उनके साहित्य में चित्रित सामाजिक, आर्थिक,

और राजनीतिक संघर्षों को जानने के लिए उनका विस्तृत विश्लेषण किया है। इस शोध के दौरान, दलित समुदाय की जटिलताओं और उनकी वास्तविकताओं को सुशीला टाकभौरे की कहानियों के माध्यम से उजागर किया है। उनकी कहानियों में प्रयुक्त भाषा शैली, कथानक, और पात्र-चित्रण पर ध्यान केंद्रित करते हुए, आपने उनके साहित्य की समृद्धि और प्रभावशीलता को समझने का प्रयास किया है। कुल मिलाकर, इस शोध ने सुशीला टाकभौरे की कहानियों के माध्यम से दलित संघर्ष के विविध पहलुओं को उजागर करने और दलित साहित्य की महत्वपूर्णता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

कृतज्ञता ज्ञापन

कोई भी शोध कार्य करने के लिए एक मार्गदर्शक की जरूरत होती है। प्रस्तुत शोध कार्य पूर्ण करने में मेरे मार्गदर्शक सहायक प्रोफेसर दीपक प्रभाकर वरक जी के निरंतर समर्थन और प्रोत्साहन के लिए मैं आभारी हूँ। उनकी सलाह और मार्गदर्शन ने मेरे शोध प्रबंध को संपूर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने मुझे कई किताबों और विषयों से परिचित कराया, जिससे मेरा काम सरल हो गया। आपने अपने व्यस्त समय होने के पश्यात भी मुझे मार्गदर्शन दिया, मुझे अनेक पुस्तकों से परिचित करवाया उसके लिए मैं आपका हृदयपूर्वक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

शणै गोंयबाब भाषा एवं साहित्य संकाय की उप अधिष्ठाता प्रो. वृषाली मांद्रेकर जी ने मुझे इस शोध प्रबंध को पूरा करने के लिए प्रेरित किया, उनके प्रति मैं आभारी हूँ। हिंदी विभाग की सहायक प्राध्यापिका श्वेता गोवेकर ने भी मेरी मदद की, इसलिए मैं आपका दिल से आभार व्यक्त करती हूँ।

इसके साथ ही, मैं मेरी सहेलीया ज्योति भोसले, तस्मिया खान और स्नेहा नाईक को धन्यवाद प्रकट करती हूँ, जिन्होंने मेरे शोध कार्य में मेरी सहायता की। शोध सामग्री प्राप्त करने के लिए गोवा विश्वविद्यालय के ग्रंथालय और कर्मचारियों की मदद के लिए मैं आभार व्यक्त करती हूँ। इसके साथ ही, मैं अपने माता-पिता, परिवार और दोस्तों की भी आभारी हूँ, जिन्होंने मेरी इस यात्रा में मेरा समर्थन किया।

दिनांक: 16-04-2024 अंबिशा गजानन प्रभू

प्रथम अध्याय

दलित अवधारणा एवं स्वरुप

1.1 दलित शब्द का शाब्दिक अर्थ और परिभाषा

दलित कहा जाने वाला ही कभी 'शूद्र', 'अनार्य', 'अस्पृश्य', 'अछूत' और गांधी जी का 'हरिजन' कहा जाता रहा है। इसमें 'आदिवासी', 'घुमंतु' 'अपराधशील जातियाँ', 'महिलाएँ' और 'बंधुआ मजदूर' भी सम्मिलित हैं। सदियों से इन पर विचार किया गया। इनका अपमान, शोषण, दलन, प्रताड़न किया गया। पशुओं से भी बदतर इन्हें माना गया। इनको छूना भी पाप माना गया। भगवान और भाग्य का भय दिखाकर इन्हें यथास्थिति में बने रहने पर विवश किया गया। दूसरे वर्षों की सेवा करना ही इनका धर्म निर्धारित किया गया। सेवाकर्म से च्युत होने पर जहाँ विधान में राजकीय दण्ड किये गये, वहाँ पर धर्मग्रन्थों में भी नरक का भय दिखाया गया है। इनमें चेतना पैदा न हो, इसलिए इनके लिए शिक्षा प्रतिबन्धित रही। वर्णाश्रम व्यवस्था द्वारा इन्हें समाज से पृथक कर दिया गया। आगे चलकर वर्ण व्यवस्था से ही जाति व्यवस्था बनी। शूद्र के घर पैदा होने वाला अस्पृश्य ही माना गया, चाहे वह कितना ही विद्वान, सदाचारी और ज्ञानी ही क्यों न हो।

व्युत्पति के आधार पर 'दलित' शब्द का वास्तविक अर्थ जानना आवश्यक है। 'दलित' शब्द की व्युत्पति संस्कृत धातु 'दल' से हुई है जिसका अर्थ तोड़ना, हिस्से करना, कुचलना है। ''भत्ते भुकुंभ दलेन भुवि सत्ति शूराः । इस शब्द के संदर्भ में विभिन्न शब्दकोशों में विभिन्न अर्थ दिये हुए हैं। जैसे- दल (अक)-विकसना, फटना, खंडित होना, द्विधा होना।

दल (सक)-चूर्ण करना, टुकड़े करना।

दल (नपु.) सैन्य, लश्कर, पत्र, पत्ती।

[पाइअसददमहण्णवो (प्राकृत शब्दकोश) से न्याय व्याकरण तीर्थ पं. हरगोविंददास सेठ]

संस्कृत शब्दकोशों में 'दलित' शब्द दिये गये हैं। जैसे दलित (सं. वि.) दल त्त रुरु टूटा हुआ, पिसा हुआ,

चिरा हुआ, खुला हुआ, फैला हुआ।

[संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, संपा, चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा, पृ-524]

'दलित' शब्द संस्कृत के 'दल' धातु से बना है। 'दल' का अर्थ "काटना, टुकड़े करना, चूर्ण करना"।[1] आदि है। दलित शब्द का अर्थ विभिन्न कोशों में इस प्रकार दिए गए हैं-

"दलित – 1. मोड़ा हुआ। मसला हुआ। मर्दित।

2. रौंदा हुआ। कुचला हुआ।

3. खंडित। टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

4. विनष्ट किया हुआ।

5. जो दबा कर रखा गया है। दबाया हुआ। जैसे भारत की दलित जातियां भी अब उठ रही है।[2].

डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर के अनुसार "दलित जातियों वे हैं जो अपवित्र होती है। इनमें निम्न श्रेणी के कारीगर, धोबी, मोची, भंगी, बसीर, सेवक जातियाँ जैसे- चमार, डंगारी (मरे हुए पशु उठाने के लिए), सउरी (प्रसूति गृह कार्य के लिए), ढोल, डफली बजाने वाले आते हैं। कुछ जातियाँ परम्परागत कार्य करने के अतिरिक्त कृषि मजदूरी का भी कार्य करती हैं। कुछ दिनों पूर्व तक उनकी स्थिति अर्द्धदास, बंधुआ मजदूर जैसी रही है"।[3]

ओमप्रकाश वाल्मीकि के अनुसार "दलित शब्द का अर्थ है-जिसका दलन और दमन हुआ है, दबाया गया है, उत्पीड़ित, शोषित, सताया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणित, रौंदा हुआ, मसला हुआ, कुचला हुआ, विनिष्ट, मर्दित, पस्त-हिम्मत, हतोत्साहित, वंचित आदि।"[4]

डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने 'दलित' शब्द को इस अर्थ में लिया हैं "दलित वह है जिसे भारतीय संविधान ने अनुसूचित जाति का दर्जा दिया है इसी प्रकार कंवल भारती का मानना है कि 'दलित

वह है जिस पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया है। जिसे कठोर और गन्दे कार्य करने के लिए बाध्य किया गया है। जिसे शिक्षा ग्रहण करने और स्वतंत्र व्यवसाय करने से मना किया और जिस पर सूछतों ने सामाजिक निर्योग्यताओं की संहिता लागू की, वही और वही दलित है, और इसके अंतर्गत वही जातियां आती हैं, जिन्हें अनुसूचित जातियां कहा जाता है"।[5]

डॉ. कुसुमलता मेघवाल 'दलित' शब्द को परिभाषित करते हुए लिखती हैं "दलित का शाब्दिक अर्थ है कुचला हुआ। अतः दलित वर्ग का सामाजिक संदर्भों में अर्थ होगा, वह जाति समुदाय, जो अन्यायपूर्वक सवर्णों या उच्च जातियों द्वारा दमित किया गया हो, रौंदा गया हो। दलित शब्द व्यापक रूप में पीड़ित के अर्थ में आता है, पर 'दलित वर्ग का प्रयोग, हिंदू समाज व्यवस्था के अंतर्गत, परम्परागत रूप में शूद्र माने जाने वाले वर्षों के लिए रूढ़ हो गया है। दलित वर्ग में वे सभी जातियाँ सम्मिलित हैं, जो जातिगत सोपान क्रम में निम्न स्तर पर रही हैं और जिन्हें सदियों से दबाकर रखा गया है"।[6]

कँवल भारती के अनुसार "दलित वह है जिसपर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया है। जिसे कठोर और गंदे कार्य करने के लिए बाध्य किया गया है। जिसे शिक्षा ग्रहण करने और स्वतंत्र व्यवसाय करने से मना किया गया और जिस पर सछूतों ने सामाजिक निर्योग्यताओं की संहिता लागू की, वही और वही दलित है, और इसके अंतर्गत वही जातियाँ आती हैं, जिन्हें अनुसूचित जातियाँ कहा जाता है"।[7]

हिंदी के वरिष्ठ आलोचक डॉ. मैनेजर पाण्डेय दलित शब्द का अर्थ समझाते हुए कहते हैं "जब मैं दलित शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ तो मेरे ध्यान में वे हैं जिन्हें भारतीय वर्ण-व्यवस्था में शूद्र कहा जाता है या जिन्हें समाज में अछूत माना जाता है"।[8]

दलित चिंतक और लेखक मोहनदास नैमिशराय ने 'दलित' शब्द को विस्तृत रूप में परिभाषित किया हैं। वे कहते हैं "दलित शब्द मार्क्स प्रणीत सर्वहारा शब्द के लिए समानार्थी लगता है। लेकिन इन दोनों शब्दों में पर्याप्त भेद है। दलित की व्याप्ति अधिक है, तो सर्वहारा के सीमित। दलित के अंतर्गत सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक शोषण का अन्तर्भाव होता है, तो

सर्वहारा केवल आर्थिक शोषण तक ही सीमित है। प्रत्येक दलित सर्वहारा वर्ग के अंतर्गत आ सकता है, लेकिन प्रत्येक सर्वहारा को दलित कहने के लिए बाध्य नहीं हो सकते... अर्थात् सर्वहारा की सीमाओं में आर्थिक विषमता का शिकार वर्ग आता है, जबकि दलित विशेष तौर पर सामाजिक विषमता का शिकार होता है"।[9]

डॉ. एन. सिंह के अनुसार "हमारे विचार में दलित शब्द का अर्थ है जिसका दलन या उत्पीड़न किया गया हो। यह उत्पीड़न चाहे शास्त्र के द्वारा हो अथवा शस्त्र के द्वारा"।[10]

डॉ. सुभाष चंद्र के अनुसार "दलित एक ऐसा विशिष्ट वर्ग है, जो शोषण की अन्य संरचनाओं को झेलते हुए अमानवीय छुआछूत का शिकार भी रहा है और अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष करता रहा है"।[11]

'दलित पैंथर' के घोषणा पत्र के अनुसार "दलित अर्थात् अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के सदस्य, नवबौद्ध, मजदूर लोग, भूमिहीन तथा गरीब कृषक, महिलाएँ तथा वे सभी लोग जिन्हें धर्म के नाम पर एवं राजनैतिक तथा आर्थिक तौर पर शोषित किया जा रहा है"।[12]

शरण कुमार लिंबाले 'दलित' शब्द को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं- "सर्वप्रथम दलित साहित्य में 'दलित' शब्द की व्याख्या निश्चित करनी होगी। दलित केवल हरिजन और नव बौद्ध नहीं। गांव की सीमा से बाहर रहने वाली सभी अछूत जातियां, आदिवासी, भूमिहीन खेत मजदूर, श्रमिक कष्टकारी जनता और यायावर जातियां सभी की सभी 'दलित' शब्द से व्याख्यायित होती हैं। दलित शब्द की व्याख्या में केवल जाति का उल्लेख करने से नहीं चलेगा। इसमें आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए लोगों को भी शामिल करना होगा"।[13]

इस तरह 'दलित' शब्द अपने साथ व्यापक अर्थ को लेकर चला है। दलित शब्द जाति सूचक नहीं एक समूह सूचक शब्द है। यह दलन, शोषण, अत्याचार का सूचितार्थ है। दलित अर्थात् ऐसा वर्ग जिसका शोषण आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक सभी कोणों से हुआ हो। जिसे सदियों से दबाया-कुचला गया हो। जिसने अस्पृश्यता के दंश को झेला है। समाज में जिसे

अभिव्यक्ति का मौका नहीं दिया गया। जिन्हें सदियों से हमारे समाज में हाशिए पर रखा गया और जिसे भारतीय संविधान में 'अनुसूचित जाति' कहा गया है। वही दलित है।

'दलित' शब्द की तमाम परिभाषाओं के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ओम प्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, नारायण सूर्वे और शरण कुमार लिंबाले द्वारा 'दलित' शब्द को व्यापक अर्थों में व्याख्यायित किया गया है। गंगाधर पानतावणे 'दलित' शब्द के अर्थ को वैचारिक स्वरुप प्रदान करते हुए इसकी अवधारणा को भी स्पष्ट करते हैं। कहा जा सकता है कि 'दलित' शब्द अस्मिताबोध का सूचक है। जो साहित्य के साथ जुड़कर एक ऐसी साहित्यिक धारा की ओर संकेत करता है, जो मानवीय सरोकारों और संवेदनाओं की यथार्थवादी अभिव्यक्ति है। जनमानस और मीडिया की दृष्टि में दलित शब्द भारतीय समाज के वंचित एवं हाशिए की जातियों-उपजातियों की सामुदायिक पहचान के रूप में भले ही जाना जाता हो लेकिन ऐतिहासिक सच यह है कि दलित विमर्श एवं साहित्य के संदर्भ में दलित शब्द स्वयं में चेतना का प्रतिरूप है। यह सिर्फ किसी विशेष जाति-उपजाति से सम्बद्ध न होकर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति हेतु अम्बेडकरवादी एवं अन्य परिवर्तनकामी विचारधारात्मक वर्गों के संघर्ष का प्रतीक है।

1.2 दलित साहित्य की परिभाषा

विभिन्न विद्वानों ने दलित साहित्य को अलग-अलग तरीके से व्याख्यायित किया है। दलित साहित्य के मुख्य पैरोकार ओमप्रकाश वाल्मीकि दलित साहित्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं "दलित साहित्य जन साहित्य है यानी 'मास लिटरेचर' (Mass literature) सिर्फ इतना ही नहीं 'लिटरेचर ऑफ एक्शन' (Literature of Action), भी है जो मानवीय मूल्यों की भूमिका पर सामंती मानसिकता के विरुद्ध आक्रोशजनित संघर्ष है। इसी संघर्ष और विद्रोह से उपजा है दलित साहित्य"।[14]

डॉ. कँवल भारती के अनुसार ‘‘दलित साहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है जिसमें दलितों ने स्वयं अपनी पीड़ा को रूपायित किया है, अपने जीवन-संघर्ष में दलितों ने जिस यथार्थ को भोगा है, दलित साहित्य उनकी उसी अभिव्यक्ति का साहित्य है। यह कला के लिए कला नहीं, बल्कि जीवन का और जीवन की जिजीविषा का साहित्य है। इसलिए कहना न होगा कि वास्तव में दलित द्वारा लिखा साहित्य ही दलित साहित्य की कोटि में आता है’’।[15]

प्रो. चमनलाल का मानना हैं ‘‘दलित साहित्य वह साहित्य है जो दलितों के जीवन, उसके सुख-दुख, उनकी सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों, उनकी संस्कृति, उनकी आस्थाओं- अनास्थाओं, उनके शोषण व उत्पीड़न तथा इस उत्पीड़न शोषण के दलितों द्वारा प्रतिरोध की परिस्थितियों को व्यापकता तथा गहराई के साथ कलात्मकता से प्रस्तुत करता है’’।[16]

मराठी दलित कवि नारायण सूर्वे का कहना है कि ‘‘दलित साहित्य’ संज्ञा मूलतः प्रश्न सूचक है। महार, चमार, माँग, कसाई, भंगी जैसी जातियों की स्थितियों के प्रश्नों पर विचार तथा रचनाओं द्वारा उसे प्रस्तुत करने वाला साहित्य ही दलित साहित्य है’’।[17]

डॉ. धर्मवीर के अनुसार ‘‘दलित साहित्य वह है जिसे दलित लेखक लिखता है। वह श्रेष्ठ और कम श्रेष्ठ हो सकता है लेकिन शर्त यह है कि गैर-दलित कैसा भी दलित-साहित्य नहीं लिख सकता। डॉ. एन. सिह के अनुसार ‘‘दलित का अर्थ है, जिसका दलन, शोषण और उत्पीड़न किया गया हो, सामाजिक, आर्थिक और मानसिक धरातल पर। सम्पूर्ण दलित साहित्य ऐसे ही उत्पीड़ित और शोषित लोगों की बेहतरी के लिए दलित लेखकों द्वारा लिखा गया साहित्य है’’।[18]

मोहनदास नैमिशराय के अनुसार ‘‘दलित साहित्य यानी बहुजन समाज के सभी मानवीय अधिकारों और मूल्यों की प्राप्ति के उद्देश्यों से लिखा गया साहित्य है जो संघर्ष से उपजा है, जिसमें समता और बंधुता का भाव है और वर्ण-व्यवस्था से उपजे जातिभेद का विरोध है’’।[19]

श्री प्रेमकुमार मणि के अनुसार ‘‘दलितों के लिए दलितों द्वारा लिखा जा रहा साहित्य दलित साहित्य है, वह विलास का साहित्य नहीं आवश्यकता का साहित्य है। सम्पूर्ण विज्ञान उसकी

दृष्टि है और पीड़ित मानवता का उद्धार उसका इष्ट है। दलित साहित्य वह प्रकाशपुंज है, जो अँधेरे में उतरा है"।[20]

डॉ. प्रेमशंकर के अनुसार "दलित साहित्य दलितों का, दलितों द्वारा, दलितों की भाषा में लिखा गया जीवंत साहित्य है जो अपने सच्चे अनुभवों से सोए हुए साथियों को जगाकर उसकी गरिमा, गौरव, अस्मिता, आत्माभिमान तथा अस्तित्व के प्रति विश्वास करने का साहित्य है"।[21]

डॉ. सी.बी. भारती के अनुसार "नव युग का एक व्यापक वैज्ञानिक व यथार्थपरक संवेदनशील साहित्यिक हस्तक्षेप है। जो कुछ भी तर्कसंगत, वैज्ञानिक, परम्पराओं का पूर्वाग्रहों से मुक्त साहित्य सृजन है हम उसे दलित साहित्य के नाम से संज्ञायित करते हैं"।[22]

डॉ. सोहनपाल 'सुमनाक्षर' के अनुसार "दलित साहित्य दलितोत्थान हेतु लिखा गया, यह एक ऐसा साहित्य है जो भोगे हुए सच पर आधारित है। जमीन से जुड़े दलित, शोषित, उपेक्षित, सर्वहारा वर्ग से संबंधित है जो दशा और दिशा को इंगित करता है और जिसमें विद्रोह और उद्बोधन के साथ संवेदना जागृत करने की ऊर्जा है"।[23]

दलित साहित्य की इन समस्त परिभाषाओं के मूल में सामाजिक परिवर्तन का स्वर सुनाई देता है। यह सामाजिक परिवर्तन अम्बेडकरवादी विचारधारा से आता है क्योंकि दलित साहित्य का प्रेरणा स्त्रोत डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर का मानवतावादी स्वर है। यह सदियों से दमित, 'शोषित, उपेक्षित और प्रताड़ित जन की संवेदनाओं का साहित्यिक प्रस्तुतीकरण है। यह सदियों से संतप्त लोगों के आक्रोश, विद्रोह एवं मुक्ति का साहित्य है, जिसके मूल में समता, स्वतंत्रता और बंधुता का भाव है। दलित साहित्य किसी एक व्यक्ति की वेदना से उठा हुआ साहित्य नहीं है। पूरे समाज की वेदना का सामूहिक रूप इसमें देखने को मिलता है। अतः दलित साहित्य आवश्यकता का साहित्य है जिसके मूल में मानव-उद्धार की भावना है।

1.3 दलित आन्दोलन

भारतीय समाज में ऐतिहासिक रूप से उत्पन्न असमानताओं और भेदभाव के खिलाफ एक प्रतिक्रिया है। यह आंदोलन मुख्य रूप से जाति-आधारित भेदभाव और उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष करता है, जिसने सदियों से दलितों के जीवन को प्रभावित किया है। दलित समुदाय ने सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक अधिकारों की मांग की है, जिनसे उन्हें लंबे समय से वंचित रखा गया है।

दलित आंदोलन ने भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता को उजागर किया है, जिसमें सभी वर्गों के लिए समानता, न्याय, और अवसरों की मांग की जाती है। यह आंदोलन दलितों के अधिकारों की सुरक्षा और उनके उत्थान के लिए काम करता है, जिसमें शिक्षा, रोजगार, भूमि अधिकार, और राजनीतिक प्रतिनिधित्व जैसे मुद्दों पर ध्यान दिया जाता है। इस आंदोलन ने भारतीय समाज में असमानताओं और भेदभाव के खिलाफ जागरूकता पैदा की है, और सामाजिक न्याय की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है। यह आंदोलन जातिवादी समाज के खिलाफ लड़ाई के साथ-साथ अन्य सामाजिक और आर्थिक मुद्दों पर भी ध्यान केंद्रित करता है, जैसे कि गरीबी, शिक्षा की पहुंच, और लैंगिक समानता।

1.3.1 दलित आन्दोलन विभिन्न चरण

सामाजिक आन्दोलन किसी भी समाज में अलगाव तथा असमानता की परिस्थितियों के खिलाफ मानवीय प्रतिक्रिया स्वरूप निर्मित होते हैं। हर एक आन्दोलन किसी विशेष उद्देश्य के लिए कुछ व्यक्तियों, समूहों या समुदाय का संगठित प्रयास होता है। एम.एस. राव के अनुसार “एक सामाजिक आन्दोलन एक समाज के एक भाग में आंशिक या पूर्ण बदलाव लाने के लिए एक विचारधारा के साथ एवं सामूहिक संचालन के साथ संगठित प्रयास है।”[24] ज्यादातर सामाजिक आन्दोलन मौजूदा सामाजिक व्यवस्था से असंतुष्ट होकर उसके खिलाफ छेडे जाते हैं। अधिकतर

सामाजिक आन्दोलनों की जड़ सामाजिक समस्याओं में है। इस लिए किसी भी प्रकार के सामाजिक आन्दोलन के कारक असहमति और विद्रोह है। सामाजिक आन्दोलन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक और राजनैतिक व्यवस्था के साथ मौलिक असहमति के परिणाम स्वरूप लोगों के संगठन के साथ प्रारंभ होता हैं। किसी भी आन्दोलन की भाँति दलित आन्दोलन भी एक सामाजिक आन्दोलन है। दलितों ने अपने आन्दोलनों को भारतीय समाज में व्याप्त वर्णवादी, जातिवादी व्यवस्था के अत्याचारों और असमानताओं के खिलाफ छेड़ा है। घनश्याम शाह के अनुसार, “There has not been a single, unified Dalit movement in the country, now or in the past. Different movements have highlighted different issues related to Dalits, around different ideologies. However, all of them, overtly or covertly, assert a Dalit identity, though its meaning is not identical and precies for everyone. Identity is concerned with the self-esteem and self-image of a community- real or imaginary dealing with the existence and role: ‘Who are we?” “What position do we have in society vis-à-vis other communities?” “How are we related to others?” Notwith- standing differences in the nature of Dalit movements and the meaning of identity, there has been a common quest the quest for equality, self-dignity and eradication of untouchability”[25] अस्पृश्यता का संबंध धर्म और जाति से है। धार्मिक विचारधारा केवल मानव मन को ही नहीं प्रभावित करती बल्कि सामाजिक संस्कार और आर्थिक संरचना को भी निर्धारित करती है।

दलित आन्दोलनों को अछूत जातियों द्वारा जातिगत दमन के विरुद्ध किये गये असंख्य संघर्ष के रूप में देखा जा सकता है। यह संघर्ष औपनिवेशिक काल में आकर सामाजिक और आर्थिक बदलाव के साथ साथ राजनैतिक बदलाव को भी परिलक्षित करता है। इसमें ज्योतिबा फूले, ई.वी. रामस्वामि नायकर, डॉ. अंबेडकर आदि की रणनीतियाँ महत्वपूर्ण हैं। 19वीं शताब्दी के समय यह आन्दोलन ज्यादा ताकतवर दिखता है। ये प्रत्यक्ष कार्यवाही द्वारा मानवाधिकारों के

लिए लड़ते हैं और दूसरी तरफ हिंदू जाति व्यवस्था को तोड़ने का कार्य करते हैं। इस प्रकार दलित विरोध मानवता को स्थापित करने का संघर्ष है और बाद में यह धार्मिक, शैक्षिक तथा राजनीतिक मोड़ देता है।

1.3.1.1 आत्मसम्मान आन्दोलन

'आत्मसम्मान आन्दोलन' बीसवीं सदी के दूसरे और तीसरे दशक में ई.वी. रामस्वामि नायकर के नेतृत्व में तमिलनाडु में हुआ था। "ई.वी. रामस्वामि नायकर पेरियोर के नाम से जाने जाते हैं। इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य था आम जनता के हित में सामाजिक सुधार, दक्षिण के उग्र और क्रांतिकारी विचारों के लिए प्रसिद्ध ई.वी. रामस्वामी नायकर की छवि सर्वथा मौलिक और सामाजिक विषमताओं पर प्रहार करने वाले अग्रणी समाज सुधारक दलित नेता के रूप में आंकी गई है"।[26] उन्होंने धर्म को दुनिया में अन्याय के कारण माना। उनका कथन है "जब मैं सामाजिक कार्यों में लगा हुआ था तब मैंने जाना कि धर्म के नाम पर किए जाने वाले कार्य ही मनुष्य के विकास में अधिक बाधक है"।[27] धर्म को नकारते हुए उन्होंने हिन्दुत्व को धर्म मानने से इनकार किया। उनके अनुसार, "यह ब्राह्मणों का षड्यंत्र है। उन्होंने लोगों को यह विश्वास दिला दिया है कि हिन्दुत्व भी एक धर्म है"।[28] वह धर्मशास्त्रों की पवित्रता में विश्वास नहीं करते थे और उनकी होली जलाते थे। "उन्होंने रामायण का अपने स्तर से अध्ययन किया था और रामायण एट्र रीडिंग' पुस्तक लिखकर उन समस्त धारणाओं को ध्वस्त कर दिया था जो ब्राह्मणों ने आम जनता में पैदा की थी"।[29] उनमें ब्राह्मणवाद के खिलाफ इतना विद्रोह था कि उन्होंने दशहरे के अवसर पर रावण दहन के विरुद्ध राम, लक्ष्मण और भरत के पुतले जलाए। उन्होंने कहा, "भारत में जब तक ईश्वर का अस्तित्व रहेगा तब तक छुआछूत रहेगा"।[30] अस्पृश्यता का घोर विरोध करने वाले पेरियोर ने अछूत समुदाय से स्पष्टतः सामाजिक क्रांति का आह्वान किया। अछूतों के शिक्षा के अधिकार पर बल देते हुए उन्होंने हिन्दुत्व को घटिया धर्म मानकर उसको खत्म कर देने की बात उठाई "हिन्दुत्व एक मायने में अन्य धर्मों से भिन्न है। इस धर्म में सभी ब्राह्मण शिक्षित हैं और सिर्फ वे

ही ज्ञान और बौद्धिकता की बागडोर संभाले हुए हैं। दूसरे लोगों में 90 प्रतिशत से भी अधिक अशिक्षित और मूर्ख हैं। एक ही धर्म को मानने वाले समाज में यदि सिर्फ एक समुदाय शिक्षित और प्रभावी बन सकने का अधिकार रखता है तो क्या हमें यह नहीं समझना चाहिए कि यह धर्म अन्य समुदायों के लिए अनिष्टकर है? इसलिए मैं कहता हूँ कि हिन्दुत्व एक घटिया धर्म है। इसका नाश हो जाना चाहिए"।[31] पेरियोर अछूत और पिछड़ी जातियों तथा स्त्रियों की शिक्षा के समर्थक थे। हिन्दू वर्णवाद व्यवस्था में ब्राह्मण ही शिक्षा और ज्ञान का अधिकारी था। इसलिए उन्होंने हिन्दुत्व की नाश की बात कर हिन्दू वर्णवादी व्यवस्था का खुलकर विरोध किया। वे एक क्रांतिकारी के रूप में अछूतों का नेतृत्व करते रहे।

1.3.1.2 आदि-धर्म आन्दोलन

आदि हिन्दू आन्दोलन से प्रेरणा ग्रहण कर पंजाब में सन् 1926 ई. में आदि-धर्म आन्दोलन का प्रारंभ हुआ। इस आन्दोलन का दावा था कि वे भारत के आदि या मूल निवासी हैं और उनकी अपनी धार्मिक मान्यताएँ भी हैं। उनके ऊपर हिन्दू धर्म जबरन थोंपा गया है। आदि-धर्म आन्दोलन समान अधिकारों की प्राप्ति का संघर्ष था। पंजाब में संगठन चलाने वाले नेताओं ने यह भी माँग की और प्रचार किया कि आगामी जनगणना (1931) में उन्हें हिन्दू की बजाय आदि धर्मी लिखा जाना चाहिए। उन्होंने माँग की कि उन्हें सार्वजनिक कुओं से पानी भरने दिया जाए और हिन्दू जमीन्दारों की तरह समान भूमि अधिकार दिया जाएं। सार्वजनिक जातीय संपत्तियों का उपयोग करने की छूट हो और उन्हें ऊँची जातीयों के अत्याचारों से बचाया जाए। साथ ही उनके बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार दिया जाए। सन् 1931 ई. के जनगणना के आधार पर देखे तो सन् 1911 ई. के मुकाबले सन् 1931 ई. में पंजाब के अछूतों की जनसंख्या में गिरावट आई है। इसका जिक्र लोथियन समिति के लिए अछूतों की जनसंख्या संबंधी तथ्य प्रस्तुत करते हुए डॉ. अंबेडकर ने कहा "इसकी वजह आदि-धर्म आन्दोलन है। सन् 1931 ई. की जनगणना में भाग लेने वाले आन्दोलन के कार्यकर्ताओं ने अपने लोगों और स्वयं को आदि-धर्मी लिखवाया था,

हिन्दू नहीं, जैसा कि पहले होता आया था।"[32] सरकार ने उनकी बात मान ली और जनगणना अधिकारियों के लिए आदेश जारी किया कि उन्हें नए शीर्षक में आदि-धर्मी लिखें। इससे अछूत जाति पंजाब में कई हिस्से में बंट गई। और सवर्ण हिन्दू और अछूतों में कई स्थानों में संघर्ष हुए। इस प्रकार पंजाब का आदि-धर्म आन्दोलन आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक, धार्मिक अधिकारों का बहुआयामी आन्दोलन था जो पूर्ण सफल नहीं बना फिर भी आंशिक सफलता मिली थी।

1.3.1.3 नाम शूद्र आन्दोलन

नाम शूद्र आन्दोलन बंगाल में हुआ। बंगाल में शूद्र 'चंडाल' कहा जाता था। वे लोग शिक्षा से वंचित थे क्योंकि उन लोगों के बीच यह गलत धारणा फैला दी गयी थी कि शिक्षा ग्रहण करना पाप है। इसी प्रकार की गलत फहमियों को दूर करना इस आन्दोलन का मकसद था। सन् 1891 ई. में 'चंडाल' शब्द के विरुद्ध 'नामशूद्र' शब्द प्रयुक्त करने के लिए ब्रिटिश सरकार को निवेदन दिया गया। इसके फलस्वरूप सरकार ने चंडाल शब्द के विरुद्ध आदेश जारी किया। 'चांद गुरु' इस आन्दोलन का प्रमुख प्रवर्तक था। कँवल भारती के अनुसार "चांद गुरु ने ब्राह्मणवाद से टक्कर लेने के लिए मतुआ धर्म' चलाया ओर नामशूद्रों में अंधविश्वास और गलत धारणा का विरोध किया। इस आन्दोलन के द्वारा चांद गुरु ने स्पष्ट घोषणा की थी कि छुआछूत की जो व्यवस्था ब्राह्मणों ने बनाई है उसे हम नहीं मानते। ब्राह्मणों के मंदिर में उन्हें प्रवेश नहीं चाहिए, उनके लिए अलग मंदिर होगा। वे समाज के निकृष्ट काम अब नहीं करेंगे।"[33] सन् 1912 ई. में उन्होंने 'नमः शूद्र' पत्रिका का प्रकाशन किया। इस प्रकार स्वयं दलितों में व्याप्त अंधविश्वासों को मिटाने के लिए स्कूल खोलकर उसमें दलित बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था की। यह आन्दोलन बंगाल में नमः शूद्र शब्द और मतुआ धर्म का प्रचार प्रसार करने में और शूद्रों में व्याप्त अंधविश्वासों को मिटाने में समर्थ निकला।

1.3.1.4 सतनामी आन्दोलन

मध्य प्रदेश में छत्तीसगठ इलाके में गुरु घासीदास द्वारा 'सतनामी संप्रदाय' को स्थापित किया गया। दलितों के बीच के जातीय भेदभाव को दूर करने का प्रयस इस आंदोलन द्वारा हुआ था। उनके आन्दोलन के तीन सूत्र थे-सतनामी बने, संगठन बनाओ और संघर्ष करो। इसके बारह नियमों का उल्लेख कंवल भारती ने अपनी पुस्तक 'दलित विमर्श की भूमिका' में यूं लिखा गया है 1. मनुष्य की एक ही जाति है, वह है मानव जाति, 2. हिंसाचार न करे, 3. मनुष्य का एक ही धर्म सतधर्म है 4 मदिरा पान न करो 5 अंधविश्वासी और परंपरावादी न बनो, 6. भाईचारा और मेल-मिलाप बढ़ाओ, 7. हीन भावना को त्याग दो, 8. स्त्री-पुरुष समान है, 9. मूर्ति-पूजा मत करो, मंदिर में मत जाओ, 10.मेहनत करके कमाओ, खाओ, 11. अपनी व्यवस्था पर अटल रहो और 12. जीवन शरीर को मुर्दा बनाकर मत रखो।"[34] इस प्रकार दलितों के बीच जाती**य भेदभाव दूर करने में सतनामी आन्दोलन ने बहुत बड़ी भूमिका अदा की।**

1.3.1.5 डॉ. आंबेडकर का आन्दोलन

अंबेडकर-पूर्व दलित आन्दोलनों ने भारत में सामाजिक परिवर्तन का जो वातावरण बनाया, उसे दलितों ने पसंद किया, पर ब्राह्मण व्यवस्था पर ज्यादा प्रभाव या परिवर्तन नहीं पड़ा था। क्योंकि इन आन्दोलनों में अपीलों और प्रतिरोधों पर जोर दिया था। लेकिन इन आन्दोलनों ने आगे के आन्दोलनों के लिए मार्ग प्रशस्त किया था। सन् 1919 ई. से लेकर डॉ. अंबेडकर दलित आन्दोलन के प्रमुख प्रवर्तक बने। इस आन्दोलन की विशेषता को व्यक्त करते हुए कँवल भारती का कहना है इस आन्दोलन की विशेषता यह है कि इसने हिन्दू व्यवस्था के विरुद्ध सीधी कार्यवाही (डायरक्ट एक्शन) के रूप में खुला विद्रोह किया। खुले शब्दों में आप समझ सकते हैं कि सामूहिक रूप से हिन्दू व्यवस्था का घन उल्लंघन किया था। यह परिवर्तन सन् 1920 ई. के आसपास आया।"[35] इस परिवर्तन के कारणों को डॉ. अंबेडकर अपने निबंध 'अछूतों का विद्रोह'

में इस प्रकार व्यक्त किया है कि "पहला कारण यह था कि दलितों को यह अनुभव होने लगा था कि अपीलों और प्रतिरोध हिन्दू व्यवस्था को बदल नहीं सकते, क्योंकि हिन्दुओं के दिलों पर इसका कोई असर नहीं होता था। दूसरा कारण यह था कि सरकार ने सभी सार्वजनिक सुविधाएँ और संस्थाएँ दलितों के लिए खोलने की घोषणा कर दी थी। नहीं कर पा रहे थे। परन्तु, हिन्दुओं के विरोध के कारण दलित उसका उपयोग अंततः सीधी कार्यवाही करने के सिवा अपने अधिकार को पाने के लिए अन्य कोई रास्ता दलितों के पास बचा नहीं था।"[36] इसलिए अंबेडकर आन्दोलन सीधी कार्यवाही और खुले विद्रोह से युक्त है। बाबा साहेब अंबेडकर के आन्दोलन को सहज रूप में समझने के लिए उनके आन्दोलन को तीन पडावों में विभाजित कर सकते हैं। पहला है सामाजिक सुधार आन्दोलन, दूसरा राजनीतिक आन्दोलन और तीसरा धार्मिक आन्दोलन।

1.3.1.6 सामाजिक सुधार आन्दोलन

अछूतोद्धार आन्दोलन के जरिए डॉ. अंबेडकर ने अपने सामाजिक आन्दोलन की शुरुआत की। सन् 1919 ई. में साउथ बरो समिति के सामने दलितों के पक्ष में साक्ष्य प्रस्तुत करते हुए उन्होंने शुरुआत की थी। इस साक्ष्य में हिन्दू समाज में अछूत वर्ग के शोषण, सामाजिक- राजनीतिक उपेक्षा का उल्लेख था। उन्होंने यह तथ्य का भी उद्घाटन किया कि "अछूतों के साथ जुडी हुई अस्पृश्यता ही उनके भौतिक एवं नैतिक उत्थान में बाधक होती है।"[37] इसी 1 अस्पृश्यता ने उनके व्यक्तित्व को नष्ट कर दिया है और सामाजिक, धार्मिक अशक्तताओं ने इसे मानव से गिरा दिया और दास बना दिया है। अस्पृश्यता को दलितों के विकास में बाधा मानते हुए अंबेडकर ने लिखा "अस्पृश्य शब्द में उनकी विपत्तियों और कष्टों का निचोड आ जाता है। अस्पृश्यता ने न केवल उनके व्यक्तित्व के विकास को अवरुद्ध कर दिया है, बल्कि उनके आर्थिक उन्नति के रास्ते में भी कांटे बोए हैं। उसने उनके कतिपय नागरिक अधिकारों को भी हड़प लिया है।"[38] नागरिकता की सार्थकता के लिए दो अधिकारों को उन्होंने महत्वपूर्ण माना। वे हैं प्रनितिनित्व का अधिकार,

राष्ट्र के अधीन पद धारण करने का अधिकार। लेकिन अस्पृश्यों की अस्पृश्यता ने उन्हें इन अधिकारों से कोसों दूर रखता है।

इस साक्ष्य पर अंबेडकर ने अछूतों के साथ जुडी हुई अस्पृश्यता को उनके भौतिक और नैतिक उत्थान में बाधक माना। धन संपदा का मुख्य स्रोत व्यापार, उद्योग और राजकीय तथा अन्य क्षेत्रों में नौकरी है। अछूत वर्ग के लोग अस्पृश्यता के कारण इसमें किसी भी क्षेत्र में काम नहीं कर सकते। इसलिए यह उनकी आर्थिक कमी का भी कारण बना। अस्पृश्यों के मताधिकार और निर्वाचक मंडल की आवश्यकता पर अंबेडकर ने जोर दिया और समिति में अस्पृश्यों के प्रतिनिधित्व के बारे में निर्णय करते समय अस्पृश्यों की आवश्यकता का ध्यान रखने की बात को भी उठाया। सवर्ण हिन्दुओं के शोषण को अंग्रेज़ों ने मजबूत और गतिशील बनाया है। अछूत लोग इन सबसे अनभिज्ञ है। इन सब विसंगतियों और दुहरे शोषण के कुचक्र को तोडने के लिए और अछूत समाज को अवगत कराने के लिए डॉ. अंबेडकर ने पत्रिकाओं का संपादन किया।

1.3.1.7 महाड तालाब सत्याग्रह

दलित आन्दोलन के इतिहास में पीने के पानी के अधिकार के लिए दलितों द्वारा किया गया 'महाड तालाब मार्च' का महत्वपूर्ण स्थान है। "बंबई विधान परिषद में ए.के. बोले ने एक प्रस्ताव के जरिए अस्पृश्यों हेतु सार्वजनिक जल-स्रोतों, कुओं, सरकारी कार्यालयों, स्कूलों- कचहरियों, सरकार द्वारा निर्मित धर्मशालाओं, दवाखानों के उपयोग की माँग की। 11 सितंबर 1923 को सरकारी आदेशानुसार इस प्रस्ताव को कार्यान्वित किया गया।"[39] लेकिन स्थानीय निकायों और मुनसिपल बोर्डों ने इस आदेश का पालन नहीं किया। दलितों को फिर एक बार अपने नागरिक अधिकारों से वंचित रखा गया। तीन वर्ष बाद सन् 1926 ई. में एस. के. बोले ने पुनः प्रस्ताव रखा कि उन स्थानीय निकायों और मुनिसिपल बोडौं की आर्थिक सहायता स्थगित की जाए जो परिषद के आदेश का पालन नहीं करते। उक्त प्रस्ताव के संदर्भ में महाड मुनिसिपल बोर्ड ने महाड तालाब (चौदार तालाब) सभी जातियों के उपयोग के लिए खोल दिया। लेकिन सवर्ण इससे क्रुद्ध हुए।

इस संदर्भ में 18 से 20 मार्च तक 1927 को द्विदिवसीय दलित जातियों की सभा आयोजित की गयी। इसमें 10,000 प्रतिनिधियों मौजूद थीं। जिसमें डॉ. अंबेडकर ने आहवान किया कि दलित अपने मौलिक अधिकारों के लिए आगे आए। स्वसहयोग, स्वाभिमान और स्व-ज्ञान के माध्यम से प्रगति करें। सम्मेलन समाप्ति पर डॉ. अंबेडकर से प्रेरणा ग्रहण कर उनके नेतृत्व में प्रतिनिधियों ने अपने मौलिक अधिकार का प्रयोग करने के लिए चौदार तालाब की ओर पानी पीने के लिए प्रस्थान किया और तालाब से पानी लेने के उद्यम में सफल भी हुए। सवर्णों द्वारा संघर्ष भी हुआ और अनेक दलित सवर्णों द्वारा बुरी तरह से पीटे गए। फिर भी यह दलित आन्दोलन के इतिहास में एक संघर्षपूर्ण अध्याय की शुरुआत बनी।

1.3.1.8 धार्मिक आन्दोलन

धार्मिक आन्दोलन का पहला पडाव अंबेडकर ने नासिक से शुरु किया था। नासिक के कलाराम मंदिर में अछूतों का प्रवेश निषिद्ध था। सन् 1930 ई. मार्च 2 को डॉ. अंबेडकर के नेतृत्व में ने अछूतों ने कालाराम मंदिर की ओर बढ़ा। अछूतों और हिन्दुओं के बीच संघर्ष हुआ। वे लोग मंदिर में प्रवेश न कर पाये इस उद्देश्य से मंदिर का द्वार बन्द कर दिया गया। 3 साल बाद सन् 1933 ई में कानूनी लडाई के परिणामस्वरूप कालाराम मंदिर अछूतों के लिए खोल दिया गया।

चावदार तालाब आन्दोलन और कालाराम मंदिर आन्दोलन के बाद भी समाज में किसी भारी परिवर्तन न देखकर उन्होंने सन 1929 ई. में धर्मांतरण की घोषण की। हिन्दू धर्म त्यागकर बौद्ध धर्म अपनाने के लिए उन्होंने लगभग 27 साल का चिंतन मनन किया। अंततः 14 अक्तूबर 1956 को एक विशाल जनसभा में लाखों दलितों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। इस प्रकार अम्बेडकर ने धर्म परिवर्तन से वर्ण-वादी हिन्दु धर्म को अघात पहुँचाया और जातिभेद से मुक्ति का एक नया मार्ग प्रस्तुत किया।

1.3.1.9 हरिजन आन्दोलन

महात्मा गाँधी ने हरिजन आन्दोलन का नेतृत्व किया। ‘‘उन्होंने दलितों को ‘हरिजन’ नाम दिया।’’[40] गाँधी अस्पृश्यता के सामाजिक अभिशाप को मिटाना चाहते हैं, भारत के सर्वाधिक उत्पीडित वर्ग को सदियों से चली आ रही जन्मजात छुआछूत को मिटाना चाहते हैं। गाँधी वर्णाश्रम धर्म के समर्थन करते हुए छुआछूत या अस्पृश्यता मिटाना चाहते थे, यानी हिन्दू धर्म में सुधार करना चाहते थे। छुआछूत को हिन्दू धर्म के कलंक मानते हुए भी अंबेडकर की तरह वर्णाश्रम धर्म के विरुद्ध लड़ना नहीं चाहते थे। गाँधीजी का कथन है कि ‘‘हिन्दू धर्म में अस्पृश्यता को कोई स्थान नहीं है। यदि यह अस्पृश्यता प्रथा न गई तो हिन्दू समाज और हिन्दू धर्म का अस्तित्व संकट में पड़ जाएगा।’’[41] यहाँ स्पष्ट है कि गाँधी की अवधारणा सिर्फ अस्पृश्यता का नाश चाहती थी। वह वर्ण व्यवस्था की समर्थक थी और उसे हिन्दुत्व की रीढ़ मानते थे। उन्होंने मंदिर प्रवेश का समर्थन तो किया किन्तु वर्णगत पैतृक पेशे त्यागने का भी विरोध किया। गाँधी दलितोद्धार के लिए वर्ण व्यवस्था का विरोध करने का साहस नहीं जुटा पाये थे।

गाँधी ने अस्पृश्यता निवारण के कार्य को गहरी निष्ठा से प्रारंभ किया लेकिन इसके लिए वर्णाश्रम धर्म, ईश्वर का नकार नहीं करता है। गाँधी विजातीय विवाह और सहभोज जैसे कार्यों को मानने के लिए तैयार नहीं थे। एक ओर वे सनतानी हिन्दू हैं तो दूसरी ओर स्वतंत्रता आन्दोलन में बहुसंख्यक हिन्दूओं को नाराज नहीं कर सकते थे।

अछूतोद्धार आन्दोलन के तहत गाँधी जी ने जो कार्य किया वह स्मरणीय हैं ‘‘गाँधीजी ने 1932 में दलित उद्धार के हेतु ‘हरिजन सेवक संघ’ की स्थापना की थी। हरिजन पत्रिका भी प्रकाशित की थी।’’[42] उन्होंने हरिजन सेवक संघ की कार्यों को पूरे राष्ट्र पर फैला दिया। फिर भी पूना पैक्ट के जरिए भारतीय राजनीति में दलितों की प्रतिनिधित्व पर असहमति भी व्यक्त किया। अतः स्पष्ट है कि उनका लक्ष्य अछूतों को हिन्दू धर्म का हिस्सा बनाये रखना चाहते थे। इसलिए गाँधी का हरिजन आन्दोलन सफल नहीं रहा।

1.3.1.10 दलित पैंथर आन्दोलन

सन् 1959 ई तक आते आते भारतीय रिपब्लिक पार्टी का विघटन हुआ। इसने दलित जनता को भी विघटित किया। इस जनता को एकीकृत करने के लिए और दलित जनता को उसके राजनैतिक एवं सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने तथा उसे संघर्ष के पद पर लाने के लिए महाराष्ट्र में दलित पैंथर आन्दोलन का प्रारंभ हुआ। "जो भारतीय यथास्थिति के विरोध स्वरूप उत्पन्न हुआ एवं सामन्तवादी हिन्दू राजशाही का कट्टर विरोधी या जो यथास्थिति के स्थान पर क्रांति या समग्र क्रांति द्वारा सामाजिक न्याय स्थापित करना चाहता था, जिसमें अंबेडकर और मार्क्स विचारधारा की झलक थी।[43] सन् 1970 ई. के आसपास देशभर में अनुसूचित जातियों पर प्रत्यक्ष रूप से अत्याचार की घटनाएँ बढ़ गई थीं। इसके विरुद्ध जुलाई 9 को मुम्बई के सिद्धार्थ नगर में दलित युवकों की बैठक हुई। इस बैठक का प्रारंभ दलित पैंथर संगठन के निर्माण को घोषित करने वाले 'मानिफेस्टो' के रूप में हुआ। इस "मानिफेस्टो' ने दलित जनता को दलित पैंथर के झंडे तले आ जाने का आह्वान किया। राजा ढाले इसका प्रेसिडेंट', नाम देव दसाल इसके प्रतिरोधमंत्री और जे.वी. पवार जेनरल सेक्रटरी हुए। दलित पैंथर के लिए पूरा शोषित जन दलित है। उसके अनुसार अनुसूचित जाति और जनजाति, नव-बौद्ध, श्रमिक गण, भूरहित किसान, स्त्री आदि राजनैतिक, आर्थिक और धार्मिक रूप से शोषित दलित है। "They made popular the term "Dalit', in preference to terms like Harijans and untouchables"[44] दलित पैंथरों ने अमरिका ब्लैक पैंथर आन्दोलन से प्रभावित होकर अपने आन्दोलन के लिए 'दलित पँथर आन्दोलन' शब्द का प्रयोग किया गया।

पैंथरों ने स्पष्ट रूप से डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर की विचारधारा को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। उन्होंने इसी विचारधारा को विकसित किया। लेकिन बाद में उन्होंने मार्क्सवादी विचारधारा को भी आत्मसात किया। नाम देव दसाल और उनके अनुयायी मार्क्सवाद से प्रभावित थे। उनके लिए दलित आन्दोलन विश्व भर के पददलितों के लिए है। इसी कारण ही उन्होंने दलित को जाति के साथ वर्ग की संयुक्तता में पारिभाषित किया। "उन्होंने अपने मुद्दे को मानवीय मुक्ति

के लिए वैश्विक सर्वहारा संघर्ष से जोड़ा जैसे कि अमेरिकी ब्लैक पैंथर आन्दोलन तथा वियतनाम, कम्बोडिया एवं आफ्रिका में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष।"[45] वैश्विक सर्वहारा वर्ग के समान दलित पँथरों ने भी दलितों की ज्वलंत समस्याओं को दर्शाया जैसे भोजन, पानी, आवास, रोजगार तथा भूमि की कमी तथा उनकी असमान सामाजिक स्थिति।

अस्पृश्यता, जातिभेद, सामाजिक असमानताओं, शोषण और दासता के शिकार रहे भारत के दलितों ने सामाजिक परिवर्तन हेतु भारत की प्रत्येक दिशा में आन्दोलन चलाये। आधुनिक भारत में फूले से लेकर कांशीराम तक के नेताओं के आन्दोलन से दलितों की सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति में आंशिक सुधार ही हो पाया है। दलितों ने एक और धर्मपरिवर्तन भी किया और दूसरी ओर हिन्दूवादी व्यवस्था के अंग भी बनकर रहे, पर वे अभी भी शोषण एवं उत्पीडन का शिकार हैं। बहुतसारे आन्दोलनों के ब बावजूद जाति-वर्ण व्यवस्था से पीडित दलित जनता की हैसियत में बुनियादी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इसलिए आज भी दलित आन्दोलन सक्रिय रूप से जारी है। फिर भी आज के दलित आन्दोलन पूर्व के आन्दोलनों से बिलकुल भिन्न रूप का है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि, 'दलित' शब्द की तमाम परिभाषाओं के आधार पर ओम प्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, नारायण सूर्वे और शरण कुमार लिंबाले आदि द्वारा 'दलित' शब्द को व्यापक अर्थों में व्याख्यायित किया गया है। कहा जा सकता है कि 'दलित' शब्द अस्मिताबोध का सूचक है। जो साहित्य के साथ जुड़कर एक ऐसी साहित्यिक धारा की ओर संकेत करता है, जो मानवीय सरोकारों और संवेदनाओं की यथार्थवादी अभिव्यक्ति है। यह सिर्फ किसी विशेष जाति-उपजाति से सम्बद्ध न होकर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति हेतु अम्बेडकरवादी एवं अन्य परिवर्तनकामी विचारधारात्मक वर्गों के संघर्ष का प्रतीक है।

दलित आंदोलनों ने भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव और उत्पीड़न के खिलाफ एक महत्वपूर्ण लड़ाई लड़ी है। इन आंदोलनों ने दलित समुदाय को आत्म-सम्मान, गरिमा, और अधिकारों के लिए एकजुट किया है और उनकी आवाज को मुख्यधारा में लाया है। दलित आंदोलनों ने समाज में जागरूकता बढ़ाई है और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में प्रगति की है। उन्होंने दलित समुदाय को शिक्षा, रोजगार, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, और सामाजिक समरसता के क्षेत्रों में नई संभावनाएं दी हैं। इन आंदोलनों ने समाज में असमानताओं को चुनौती दी है और दलितों के अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए कानूनी और संवैधानिक सुधार किए है।

संदर्भ सूची

1) वर्मा धीरेन्द्र, हिंदी साहित्य कोश, भाग-1, पारिभाषिक शब्दावली, पृ.243

2) दास, श्यामसुंदर, हिंदी शब्द सागर, प्रथम भाग, पृ. 2229

3) जाधव डॉ. सुनील, हिंदी साहित्य दलित विमर्श, पू. 30-31

4) वाल्मीकि ओमप्रकाश, दलित साहित्य का सौन्दर्यशाख, पृ. 13

5) युद्धरत आम आदमी (अंक 41-42), सं. रमणिका गुप्ता, 1998,

6) मेघवाल डॉ. कुसुमलता, हिंदी उपन्यासों में दलित वर्ग, पृ.1

7) युद्धरत आम आदमी (अंक 41-42), पृ. 41

8) पाण्डेय डॉ. मैनेजर, राख ही जानती है जलने का अनुभव (साक्षात्कार), दलित चेतना, सं. रमणिका गुप्ता, पृ. 3

9) नया पथ (अंक 24-25), जुलाई-सितंबर, 1997, पृ. 104-105

10) सिंह डॉ. एन, दलित साहित्य का प्रतिमान, पृ. 68

11) चंद्र डॉ. सुभाष, दलित मुक्ति आन्दोलनः सीमाएं और संभावनाएं, पृ. 15

12) कुमार, अजय, दलित पैंथर आन्दोलन, पृ. 86

13) लिंबाले शरण कुमार, दलित साहित्य का सौदर्यशास्त्र, पृ० 38

14) वाल्मीकि, ओमप्रकाश, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ. 15

15) युद्धरत आम आदमी (अंक 41-42), सं. रमणिका गुप्ता, 1998, पृ. 41

16) चमनलाल, प्रो, दलित साहित्यः एक मूल्यांकन, पृ. 15

17) वाल्मीकि, ओमप्रकाश, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ. 15

18) दलित साहित्य, सं. जयप्रकाश कर्दम, 1999, पृ. 39

19) उद्धृत, सिंह, डॉ. एन, दलित साहित्य का प्रतिमान, पृ. 7

20) दलित साहित्यः एक परिचय (लेख), प्रेम कुमार मणि, वर्तमान साहित्य, पृ. 48

21) डॉ. प्रेमशंकर दलित संघर्ष, संस्कृति और साहित्य की सबल अभिव्यक्ति, पृ. 212-213

22) सिंह डॉ. एन. दलित साहित्यः क्रांति और विद्रोह का शाश्वत साहित्य (लेख), पृ.30

23) भारती, डॉ. सी. बी, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, अंक 41-42, 1998, पृ.41

24) राव एम.एस., भारत के सामाजिक आंदोलन, पृ.3

25) Shah Ganashyam, Dalit Identity and Politics, P.no. 19

26) चंचरीक कन्हैयालाल, भारत में दलित आन्दोलन, भाग-1, पृ. 215

27) नायकर रामस्वामि ई.वी., सामाजिक क्रांति का दस्तावेज, भाग-2, पृ.121

28) नायकर रामस्वामि ई.वी., सामाजिक क्रांति का दस्तावेज, भाग-2, पृ. 1219

29) भारती कंवल, दलित विमर्श की भूमिका, पृ. 5

30) नायकर रामस्वामि ई.वी., सामाजिक क्रांति का दस्तावेज, भाग-2, पृ. 121

31) नायकर रामस्वामि ई.वी., सामाजिक क्रांति का दस्तावेज, भाग-2, पृ. 122

32) आंबेडकर डॉ. बाबासाहेब, संपूर्ण वाड्मय, खण्ड पृ. 49

33) भारती कँवल, दलित विमर्श की भूमिका, पृ.5

34) कँवल भारती, दलित विमर्श की भूमिका, पृ. 57

35) कॅवल भारती, दलित विमर्श की भूमिका, पृ.5

36) डॉ.बी.आर. अंबेडकर, अछूतों का विद्रोह, पृ. 15

37) आंबेडकर डॉ., सामाजिक क्रान्ति के दस्तावेज, सं. शंभुनाथ, पृ.88

38) आंबेडकर डॉ. बाबासाहेब, डॉ. आंबेडकर संपूर्ण वाड्मय, पृ.2

39) चंचरीक कन्हैयालाल, भारत में दलित आन्दोलन, खंड-1. पृ. 10

40) कॅवल भारती, दलित विमर्श की भूमिका, पृ.

41) गाँधी, हरिजन पत्रिका, दिनांक, 10.02.194

42) वणकर डॉ. नरसिंहदास खेमदास, दलित विमर्श, पृ. 55

43) कुमार अजय, दलित और आन्दोलन, पृ. 56

44) Paswan Sanjay, Parasmansi Jai Deva (Edi), Encyclopaedia of Dalits in India, Volume 3, Movement P.328

45) कुमार अजय, दलित और आन्दोलन, पृ. 105-106

द्वितीय अध्याय

सुशीला टाकभौरे की कहानियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सुशीला टाकभौरे की कहानियाँ भारतीय साहित्य में दलित अनुभवों को प्रभावी तरीके से उजागर करती हैं। उनकी कहानियाँ दलित समुदाय की जीवन स्थितियों, संघर्षों, और सामाजिक अन्यायों का सटीक और ईमानदार चित्रण करती हैं। उनकी लेखनी का प्रभाव इस बात में निहित है कि वे दलितों की आवाज़ को मुख्यधारा में लाने में सफल होती हैं, जो अक्सर उपेक्षित रह जाते हैं।

सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलित समुदाय की रोजमर्रा की चुनौतियों के साथ-साथ उनकी आकांक्षाओं, महत्वाकांक्षाओं, और निराशाओं को भी दर्शाया गया है। उनके लेखन में सामाजिक विभाजन, जातिगत भेदभाव, और उत्पीड़न जैसे विषयों को गहराई से छूने की क्षमता है। वे अपने पात्रों के माध्यम से दलित समुदाय के संघर्षों को मानवीय और व्यक्तिगत दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती हैं, जिससे पाठक उनके दर्द और दुख को गहराई से महसूस कर सकते हैं। इन की कहानियों में उनके पात्रों का जीवंत चित्रण और कथानक की गहराई पाठकों को दलित अनुभवों के प्रति संवेदनशील बनाती है। उनकी कहानियाँ सामाजिक न्याय और समानता के मुद्दों पर सवाल उठाती हैं और पाठकों को समाज में बदलाव लाने की प्रेरणा देती हैं।

2.1 संघर्ष

2.1.1 कथानक

'संघर्ष' कहानी में दलितों के साथ हो रहे छुआछूत, शोषण और अन्याय को दर्शाया है। लेखिका ने शंकर नाम के कहानी पात्र के माध्यम से सम्पूर्ण दलित जातियों पर हो रहे अत्याचार शोषण जातिभेद दमन को चित्रित किया है। संघर्ष कहानी में लेखिका ने बताया है कि गांवों में छुआछूत की भावना हमेशा से ही ज्यादा रही है। अगर कोई दलित जाति का व्यक्ति सवर्ण के घर चला

जाता है तो उसको बाहर ही खड़े रहने का ईशारा किया जाता है घर में मत आ बाहर भाग बाहर दूर खड़ा होकर बात कर अगर कोई गलती से घर में घुस जाता तो, घर की एक- एक चीज पर पानी छिड़ककर शुद्ध करते हैं, घर में जमीन पर पानी डालकर घर को पवित्र करते हैं। हिन्दू समाज व्यवस्था में जाति ऐसी चीज है जो इन्सान के जन्म के साथ ही उससे जुड़ जाती है और वह इन्सान के मरने के बाद भी नहीं जाती है। चाहे गांव हो या शहर-जातिभेद की भावना लोगों के हृदय में रहती ही है। फर्क बस इतना रहता है कि कुछ लोग जातिभेद की भावना को खुल्लम-खुल्ला उजागर करते रहते हैं और कुछ लोग अप्रत्यक्ष रूप से अपने व्यवहार और कार्यकलापों से जातिभेद को मान्यता देते हुए अपनी उच्चता को हमेशा के लिए कायम रखना चाहते हैं।शंकर के मैट्रिक में पहुंचने पर उसके परिवार को उस पर गर्व होता है। शंकर की बढ़ती शारीरिक शक्ति और पहलवानी के कारण, लोग उसे 'दादा' कहने लगते हैं। एक बार पहलवानी के दौरान, उच्च जाति के लोगों ने शंकर के साथ कुश्ती लड़ने का निर्णय लिया। शंकर ने अपनी कुश्ती कौशल और गुस्से का परिचय देते हुए उच्च जाति के बच्चों को हरा दिया और उन्हें गंभीर रूप से पीटा। इस घटना के बाद, बच्चों ने इसकी शिकायत स्कूल के मास्टर जी से की। मास्टर जी ने शंकर का ट्रांसफर सर्टिफिकेट बनाकर उसे सौंप दिया, जिससे शंकर का नाम स्कूल से हटा दिया गया। शंकर के लिए यह एक बड़ा झटका था, क्योंक़ि उसकी शिक्षा बाधित हो गई और उसका भविष्य अंधकारमय प्रतीत होने लगा। वह सोचने लगा कि अब वह क्या करेगा और क्या उसे पिता की तरह मजदूरी करनी पड़ेगी या अपनी बिरादरी का परंपरागत काम करना पड़ेगा।

शंकर के परिवार ने मास्टर जी से माफी मांगी और उसकी शिक्षा जारी रखने का अनुरोध किया, लेकिन दलित जाति के होने के कारण किसी ने उनकी बात नहीं सुनी। अंत में, शंकर ने निर्णय लिया कि उसे संघर्ष करके ही अपने सम्मान को वापस पाना होगा। वह एक मजबूत लट्ठा उठाता है और स्कूल के सामने खड़ा हो जाता है यह उसका रूप देखकर बच्चे और मास्टर जी घबरा जाते हैं और उसका अंत में स्कूल में वापस लेते हैं। इस प्रकार, कहानी में संघर्ष, जातिगत भेदभाव, और शंकर के प्रतिशोध की झलक देखने केलिए मिलती है।

2.1.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण

इस कहानी में हमें जो मुख्य पात्र के रूप में दिखाई देता है वह है शंकर का पात्र। कहानी में मुख्य पात्र सिर्फ एक ही है और बाकी के सभी गौण पत्र के रूप में हमें दिखाई देते हैं।

शंकरः शंकर एक दलित जाति का साहसी, स्वाभिमानी, और जुझारू लड़का है। वह अन्याय के खिलाफ खड़ा होता है और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष करता है। मेहनती और आत्मनिर्भर होने के साथ-साथ, उसकी दृढ़ निश्चय और साहसिकता उसे अपने सपनों को पूरा करने की प्रेरणा देती है। शंकर की दृढ़ निश्चय और संघर्ष करने की भावना उसके जीवन में आने वाली मुश्किलों का सामना करने में मदद करती है। स्कूल से ट्रांसफर सर्टिफिकेट मिलने पर वह निराश होता है, लेकिन हार नहीं मानता। वह अपनी शक्ति और संघर्ष की भावना से अपनी स्थिति को बदलने का प्रयास करता है, जिससे उसकी दृढ़ता और साहसिकता स्पष्ट होती है।

शंकर की नानी: शंकर की नानी एक मेहनती महिला है जो गांव का झूठा उठाने का काम करती है और सूअर पालती है। वह अपने पोते की भलाई के लिए चिंतित रहती है और उसकी शिक्षा को महत्व देती है। नानी शंकर को समझाती है कि उसे उच्च जाति के लोगों के साथ समस्याएँ नहीं बढ़ानी चाहिए, लेकिन शंकर की भलाई के लिए उसके संघर्ष का समर्थन करती है। जब शंकर को स्कूल से निकाल दिया जाता है, तो नानी गांव के पटेल से विनती भी करती उच्च जाति के सहपाठीः शंकर के उच्च जाति के सहपाठी उसके साथ भेदभाव करते हैं और उसे ताने देते रहते हैं। वे उसे अपने घरों के अंदर नहीं आने देते और बाहर ही रुकने के लिए कहते हैं। उनका व्यवहार छुआछूत की समस्या को दर्शाता है और शंकर को सामाजिक रूप से अलग-थलग महसूस कराता है।

मास्टर जी : मास्टर जी शंकर के साथ हुए अन्याय के लिए जिम्मेदार हैं। कहानी में मास्टर जी का व्यक्तित्व प्रत्यक्ष रूप से जातिवाद के दृष्टिकोण को दर्शाता है। वे उच्च जाति से हैं और अपने व्यवहार में दलितों के प्रति भेदभाव का परिचय देते हैं। जब उच्च जाति के बच्चों ने शंकर के खिलाफ शिकायत की, तो मास्टर जी ने तुरंत उसकी सजा का निर्णय लिया। उन्होंने शंकर का

ट्रांसफर सर्टिफिकेट बनाकर उसे स्कूल से निकाल दिया, बिना उसकी पक्ष की बात सुने। यह दिखाता है कि मास्टर जी पूर्वाग्रह के साथ फैसले लेते हैं और दलितों के प्रति उनकी उदासीनता है। मास्टर जी का चरित्र कहानी में सामाजिक और शैक्षणिक संस्थानों के भीतर जातिगत भेदभाव को उजागर करता है। उनका रवैया स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वे ऊंची जातियों को प्राथमिकता देते हैं और दलितों को उनके अधिकारों से वंचित करते हैं।

शंकर के माता-पिताः शंकर के माता-पिता अपने बेटे के लिए चिंतित रहते हैं। वे उसे उच्च जाति के लोगों के साथ विवादों से बचने की सलाह देते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि दलित जाति के होने के कारण शंकर को समाज में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। वे शंकर को उसके दायरे में रहने की सलाह देते हैं।

2.1.3 भाषा शैली

संघर्ष कहानी की भाषा शैली सरल, सहज और बोलचाल की भाषा में है। यह कहानी की प्रामाणिकता और वास्तविकता को बढ़ाती है, क्योंकि यह ग्रामीण क्षेत्रों की आम बोलचाल की भाषा को प्रतिबिंबित करती है। लेखिका ने कहानी में स्थानीय भाषा, मुहावरे, और संवादों का उपयोग करके पात्रों के अनुभवों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। कहानी की भाषा शैली सरल, सुगम, संतुलित, प्रवाहपूर्ण है, जिससे पाठक सरल भावप्रवाह का रसास्वादन कर सकता है। इनके गद्य की भाषा जीवन्त प्रतीत होती है। इस कहानी में अंग्रेजी शब्द, फारसी शब्द, आंचलिक शब्द, शब्द युग्म, पुनरुक्ति शब्द, मुहावरे आदि दिखाई देते हैं। लेखिका ने इस कहानी में वर्णनात्मक शैली और विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया है।

2.1.4 उद्देश्य

इस कहानी का उद्देश्य जातिगत भेदभाव और छुआछूत की समस्या को उजागर करना है। यह कहानी दिखाती है कि कैसे समाज में जातिगत असमानता और भेदभाव के कारण दलित जाति के लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शंकर के संघर्ष और उच्च जाति के लोगों द्वारा किए गए अपमान के बावजूद उसकी आत्मसम्मान और दृढ़ता को भी कहानी में उजागर किया गया है। यह कहानी सामाजिक अन्याय, भेदभाव, और उत्पीड़न के मुद्दों को सामने लाकर उनकी गंभीरता पर प्रकाश डालती है।

2.2 जन्मदिन

2.2.1 कथानक

'जन्मदिन' कहानी में लेखिका ने भंगी समाज की व्यथा को दर्शित किया है। इनके साथ समाज में कैसा अमानवीय व्यवहार किया जाता है। कहानी के माध्यम से लेखिका ने बताया है कि जातिव्यवस्था में अछूत माने गये इन दलित भंगियों को भी बस्ती से बाहर बसाया गया है। इनके मौहल्लों के आसपास सवर्ण जाति के घर नहीं होते हैं। अछूत होने के कारण इनको बस्तियों के बाहर रहने के लिए मजबूर किया जाता है और ये भी शिक्षित सभ्य समाज से अलग-थलग रहने के कारण जैसे इनकी दुनिया ही अलग हो गई है। यहां रहकर ये लोग कुछ और न सोच पाते है और न ही कर पाते हैं। सदियों की परम्परा को ये अपनी नियति अपना भाग्य मान बैठे हैं। ये दूसरों का मैला अपने सिर पर ढोते रहते हैं लेकिन अब शिक्षा से आगामी पीढी जागरूक हो रही है- हमारा देश स्वतन्त्र होकर कितने वर्ष बीत गए फिर भी हम वहीं के वहीं है। मुन्ना नाम का एक युवक प्रेम के बेटे के जन्मदिन के अवसर पर प्रेम के घर जाता है। वहाँ प्रेम ने उसे मेल गाड़ी के बारे में बताया, जो मोहल्ले की साफ-सफाई के लिए इस्तेमाल होती है। मुन्ना इस पर सवाल करता है और समझता है कि उनके समाज को यह काम करने के लिए मजबूर किया जाता है

क्योंकि उनकी जाति से यही अपेक्षा की जाती है। मुन्ना ने महिलाओं से भी पूछा कि क्या उन्हें यह काम करना अच्छा लगता है। उनके जवाबों से मुन्ना को एहसास होता है कि भंगी समाज के लोग अपनी नियति को स्वीकार कर चुके हैं। मुन्ना ने जन्मदिन के मौके पर मौजूद लोगों के सामने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं और उन्हें अपनी स्थिति बदलने के लिए प्रेरित किया। कहानी के एक पात्र मुन्ना ने निश्चय करता है कि वह अंबेडकर के विचारों को सभी लोगों तक पहुंचाएगा। कहानी में लेखिका ने दिखाया है कि भंगी समाज के लोग सदियों से इस तरह के काम करने के लिए मजबूर हैं, लेकिन शिक्षा और जागरूकता से नई पीढ़ी बदलाव की ओर बढ़ रही है। मुन्ना की बातों ने लोगों को सोचने पर मजबूर किया कि उन्हें अपने जीवन में बदलाव लाने की जरूरत है।

2.2.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण

जन्मदिन कहानी में हमें सिर्फ दो ही पात्र मिलते है। वह है मुन्ना और प्रेम राठौर।

मुन्ना : मुन्ना इस कहानी में मुख्य पात्र है, जो भंगी समाज से ताल्लुक रखता है। वह एक जागरूक और साहसी युवक है जो अपने समुदाय की कठिनाइयों और चुनौतियों को भली- भांति समझता है। समाज में भंगी जाति के साथ हो रहे भेदभाव और अपमानजनक व्यवहार के कारण वह उच्च जातियों के प्रति गुस्सा और असंतोष महसूस करता है। मुन्ना एक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी जाति के लोगों के लिए आवाज उठाने की क्षमता रखता है। वह उन्हें अपने भाग्य को बदलने के लिए प्रेरित करता है और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। मुन्ना शिक्षा और जागृकता के महत्व को समझता है और चाहता है कि उसकी जाति के लोग अपनी स्थिति सुधारें और समाज में समानता प्राप्त करें। मुन्ना ने निश्चय किया है कि वह अपने समुदाय को बाबासाहेब के कार्यों और विचारों से परिचित कराएगा। उसकी दृष्टि है कि अपने समुदाय को सच्चाई का ज्ञान कराया जाए ताकि वे अपने अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा कर सकें। मुन्ना का चरित्र साहस, जागरूकता, और दृढ़ संकल्प का प्रतिनिधित्व करता है। उसकी कहानी में उसकी यात्रा समाज की असमानताओं को समझने और उनके खिलाफ संघर्ष करने की है। मुन्ना अपने समुदाय के

लिए एक प्रेरणा बनकर सामने आता है और उन्हें सुधार और बदलाव की दिशा में आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शन करता है।

प्रेम राठौर : प्रेम राठौर का व्यक्तित्व सरल, भावुक, और सोचने वाला है। वह एक भले और सीधे स्वभाव का व्यक्ति हैं, जो अपने परिवार की भलाई के लिए समर्पित हैं। प्रेम के पास पप्पू नाम का एक लड़का है, जिसे वह पढ़ाना चाहता है ताकि उसका भविष्य उज्ज्वल हो। प्रेम राठौर की सोच अलग है वह नहीं चाहता कि उसका बेटा उसके पूर्वजों की तरह सफाई कर्मचारी बन जाए। इसके बजाय, वह अपने बेटे को सेनेटरी इंस्पेक्टर बनाना चाहता है, ताकि वह सफाई कर्मचारियों की निगरानी कर सके और उनकी देखरेख कर सके। प्रेम की यह आकांक्षा बताती है कि वह अपने बेटे के लिए एक बेहतर भविष्य चाहता है, जहां उसे मेहनत और संघर्ष का सामना न करना पड़े। अंत में, मुन्ना की बातों को सुनकर प्रेम राठौर पर गहरा असर पड़ता है। वह मुन्ना की बातों से प्रेरित होकर अपने समाज की स्थिति पर विचार करता है और संभवतः बदलाव की आवश्यकता को महसूस करता है। प्रेम राठौर का चरित्र भोलेपन, सरलता, और अपने बेटे के लिए एक उज्ज्वल भविष्य की चाहत से भरा है।

2.2.3 भाषा शैली

इस कहानी की भाषा साधारण, सजीव, और स्पष्ट है, जो कहानी के ग्रामीण और सामाजिक पृष्ठभूमि के साथ मेल खाती है। लेखिका ने कहानी में आम बोलचाल की भाषा का उपयोग किया है, जिससे पात्रों की भावनाओं और उनकी स्थिति का प्रभावी चित्रण हो सके। कहानी की भाषा शैली सरल, सुगम, संतुलित, प्रवाहपूर्ण है, जिससे पाठक सरल भावप्रवाह का रसास्वादन कर सकता है। इनके गद्य की भाषा जीवन्त प्रतीत होती है। इस कहानी में अंग्रेजी शब्द, फारसी शब्द, आंचलिक्क शब्द, शब्दा मुग्म, पुनरुक्ति शब्द, मुहावरे आदि दिखाई देते हैं। लेखिका ने इस कहानी में वर्णनात्मक शैली और विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया है।

2.2.4 उद्देश्य

'जन्मदिन' कहानी का उद्देश्य समाज में जातिव्यवस्था के कारण भंगी समाज के साथ हो रहे भेदभाव और उनके संघर्षों को उजागर करना है। कहानी के माध्यम से लेखिका ने दिखाया है कि भंगी समुदाय के लोग कितनी कठिनाइयों और अपमानजनक स्थितियों का सामना करते हैं। वे अपने समुदाय के साथ हो रहे अन्याय और असमानता से पीड़ित हैं। कहानी के द्वारा लेखिका ने शिक्षा और जागरूकता के महत्व को भी रेखांकित किया है। मुन्ना का चरित्र शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से अपने समुदाय के लोगों को उनके अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए प्रेरित करता है। मुन्ना का संघर्ष और उसकी आवाज भंगी समाज के लोगों को अपने भाग्य को बदलने और समाज में समानता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। कहानी का उद्देश्य पाठकों को समाज में जातिव्यवस्था के कारण होने वाली असमानताओं और भंगी समाज के लोगों की कठिनाइयों के प्रति संवेदनशील बनाना है। इसके साथ ही, यह शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से समाज में बदलाव लाने की दिशा में प्रेरित करती है।

2.3 बदला

2.3.1 कथानक

'बदला' कहानी में कल्लू नाम का एक दलित लड़का उच्च्च जाति के बच्चों के साथ अक्सर संघर्ष में पड़ता है। उसके माता-पिता ने उसे यह सिखाया कि वह निम्न जाति का है और उच्च्च जाति के बच्चों से दूर रहना चाहिए। एक दिन उच्च जाति के बच्चों ने कल्लू के साथ झगड़ा किया और उसे अपमानित किया, जिससे कल्लू को गुस्सा आया और उसने उन बच्चों को पीट दिया। इस घटना के बाद उच्च जाति के बच्चों के माता-पिता ने कल्लू के घर आकर उसे और उसके परिवार को अपमानित किया। कल्लू के माता-पिता ने उसे बाहर नहीं आने दिया, क्योंकि वे उच्च्च जाति के लोगों से डरते थे। हालांकि, कुछ दिनों बाद, उच्च्च जाति के लोगों ने कल्लू पर हमला किया और उसे मारने की कोशिश की। कल्लू के परिवार ने भी उसका बचाव किया और

उच्च जाति के लोगों से लड़ाई की। कल्लू की नानी ने कहा कि वे अब किसी से डरेंगे नहीं और मजबूती से सामना करेंगे। कहानी से यह संदेश मिलता है कि दलित जाति के लोगों को अक्सर उच्च जाति के लोगों से भेदभाव और अत्याचार का सामना करना पड़ता है, लेकिन संघर्ष करके वे अपनी पहचान और सम्मान के लिए खड़े हो सकते हैं।

2.3.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण

'बदला' कहानी में कल्लू मुख्य पात्र हैं। इसके अलावा छौआ माँ, कल्लू के माता-पिता, कल्लू के सहपाठी राजन, सुनील और गुड्डू, गुड्डू के काका-काकी जैसे पात्र भी मिलते हैं। कल्लू : कल्लू एक दलित लड़का है जो अपनी पहचान को लेकर संघर्ष करता है। उसे अपने घर से ही यह सिखाया गया है कि वह निम्न जाति का है। वह उच्च जाति के लोगों से दूरी बनाए रखे। । कल्लू का जीवन संघर्षों से भरा है, क्योंकि उसे अपने गाँव में उच्च जाति के लोगों के दुर्व्यवहार और अपमान का सामना करना पड़ता है। हालाँकि, वह चुपचाप सहने वाला नहीं है और अपनी गरिमा के लिए खड़ा होता है। कल्लू में साहस और आत्मसम्मान है, जो उसे अपने आत्मविश्वास से प्रेरित करता है। जब उच्च जाति के बच्चे उसे अपमानित करते हैं, तो वह जवाब देने के लिए तैयार होता है। कल्लू अपनी भावना में दृढ़ है और सही समय पर अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है। उसकी सहनशीलता उसकी ताकत है, लेकिन जब उस पर अत्याचार होता है, तो वह उसका विरोध करता है। कल्लू का संघर्ष न केवल उसके स्वयं के लिए है, बल्कि यह उसके पूरे समुदाय के लिए भी है। वह न्याय की तलाश में है और अपने परिवार और समुदाय की रक्षा करने के लिए तैयार है। उसकी नानी के शब्दों से उसे प्रेरणा मिलती है, जिससे वह भविष्य में संघर्ष के लिए तैयार होता है। कल्लू एक ऐसा पात्र है जो अपने आत्मसम्मान और गरिमा के लिए संघर्ष करता है, और अपने समुदाय के अधिकारों की रक्षा के लिए तत्पर है।

छौआ माँ : छौआ माँ एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली पात्र है, जिसे कहानी में एक मजबूत और साहसी नानी के रूप में चित्रित किया गया है। वह अपने नाती कल्लू के प्रति बेहद स्नेहशील

और सुरक्षात्मक है। छौआ माँ को उच्च जाति के लोगों के दुर्व्यवहार के बारे में पूरी तरह से अवगत है, लेकिन वह अपने नाती की भलाई के लिए उनका सामना करती है। छौआ माँ में मातृत्व की गहरी भावना है, जो उसे अपने नाती के लिए किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार करती है। वह अपने परिवार की गरिमा के लिए खड़ी होती है और उच्च जाति के लोगों के सामने अपनी आवाज उठाती है। छौआ माँ के पास एक जुझारू स्वभाव है, और वह अपनी बातों में दृढ़ रहती है।

कल्लू के माता-पिता : कल्लू के माता-पिता अपनी जाति के कारण उच्च जाति के लोगों के दुर्व्यवहार और अत्याचार से अवगत हैं, लेकिन वे इस परिस्थिति से समझौता करने की कोशिश करते हैं। वे अपने बेटे कल्लू के प्रति देखभाल और सुरक्षा की भावना रखते हैं, और उसकी भलाई के लिए चिंतित रहते हैं।

2.3.3 भाषा शैली

इस कहानी की भाषा शैली साधारण और ग्रामीण है, जो कहानी की पृष्ठभूमि और विषयवस्तु के साथ मेल खाती है। कहानी में भारतीय ग्रामीण जीवन की झलक मिलती है, और भाषा में उर्दू शब्दों, आंचलिक शब्दों और मुहावरों का प्रयोग किया गया है, जिससे ग्रामीण वातावरण को और अधिक वास्तविकता मिलती है। कहानी में संवाद भी सीधे और सहज हैं, जो पात्रों के जीवन की जटिलताओं और संघर्षों को दर्शाते हैं। भाषा में आम बोलचाल के शब्दों का उपयोग किया गया है, जिससे पाठकों को पात्रों के भावनात्मक अनुभव और सामाजिक स्थितियों का बेहतर समझ आता है। कहानी की भाषा शैली सरल और प्रभावी है।

2.3.4 उद्देश्य

इस कहानी का उद्देश्य जातिगत भेदभाव और अत्याचार के खिलाफ संघर्ष के महत्व को उजागर करना है। कहानी दलित समुदाय के लोगों को उच्च जाति के लोगों से मिलने वाले दुर्व्यवहार, अपमान, और अत्याचार के बारे में बताती है। यह दिखाती है कि किस तरह से एक दलित लड़का, कल्लू, अपनी गरिमा और आत्मसम्मान के लिए खड़ा होता है। कहानी में कल्लू के संघर्ष, उसकी माता और परिवार के समर्थन के माध्यम से यह संदेश मिलता है कि दलित समुदाय के लोग अपनी स्थिति से निपटने के लिए मजबूती से खड़े हो सकते हैं और अपने अधिकारों के लिए लड़ सकते हैं। यह कहानी समानता, न्याय, और आत्मसम्मान के महत्व को भी दर्शाती है। कहानी यह बताती है कि भेदभाव और अत्याचार के बावजूद, अगर व्यक्ति में साहस और आत्मसम्मान हो, तो वह अपने अधिकारों की रक्षा कर सकता है और अन्याय के खिलाफ खड़ा हो सकता है। यह सामाजिक परिवर्तन और जागरूकता की आवश्यकता को भी उजागर करती है, जिससे समाज में समानता और न्याय की स्थापना हो सके।

2.4 सिलिया

2.4.1 कथानक

'सिलिया' कहानी सिलिया नाम की एक दलित कन्या की है, जो अपने बलबूते पर उच्च शिक्षा प्राप्त करती है और समाज में एक प्रसिद्ध दलित नेत्री बन जाती है। सिलिया का असली नाम शैलजा था, परन्तु उसे प्यार से 'सिलिया' कहा जाता था। वह मैट्रिक की पढ़ाई कर रही थी और खेल-कूद में भी होशियार थी। उसका जन्म अस्पृश्य कुल में हुआ था, जिससे वह समाज में अछूतों को मिलने वाली मुश्किलों से परिचित थी। एक बार एक अखबार में विज्ञापन छपा कि एक युवा नेता मैट्रिक पास दलित कन्या से विवाह करना चाहता है, लेकिन सिलिया के माँ-बाप ने सिलिया की शादी नहीं करना चाहते थे और उसकी उच्च शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया।

कहानी में एक घटना आती है जब मालती ने कुएं से पानी निकालने की कोशिश की, जो उसकी मामा की बेटी थी। लेकिन उच्च जाति के लोगों ने उसे रोक दिया और उसकी मां ने उसे बहुत मारा। क्योंकि दलित लोगों को कुएं से पानी निकाल के पीने की अनुमति नहीं थी।

इससे यह स्पष्ट होता है कि उच्च जाति के लोग निम्न जाति के लोगों के साथ भेदभाव करते आ रहे हैं। स्कूल के दिनों में सिलिया ने अछूतों के प्रति होने वाले भेदभाव का अनुभव किया था। एक बार उसकी सहेली हेमलता उसे अपने बहन के घर ले गई, जहां उसे जाति के आधार पर पानी देने से मना कर दिया गया, जिससे वह आहत हुई। इन चुनौतियों का सामना करते हुए सिलिया 'दलित मुक्ति आन्दोलन' की कार्यकर्ता बन गई। वह प्रसिद्ध लेखिका, भाषणकार, और क्रियाशील कार्यकर्ता के रूप में उभरी और उसने करीब बीस वर्षों तक दलितों के अधिकारों के लिए मेहनत की। इस वजह से वह राष्ट्रीय दलित नेत्री बन जाती है।

2.4.2 <u>पात्र एवं चरित्र चित्रण</u>

'सिलिया' कहानी में सिलिया, सिलिया की माँ, हेमलता, मालती, सिलिया की मामी, मौसी और बकरी वाली यह पत्र मिलते हैं। इस कहानी में सिलिया मुख्य पात्र है, और बाकी के सभी गौण पात्र हैं।

सिलिया : सिलिया एक साहसी और प्रेरणादायक व्यक्तित्व वाली महिला है। उसका असली नाम शैलजा है, लेकिन उसे प्यार से 'सिलिया' कहा जाता था। बचपन से ही वह खेल-कूद में भी होशियार थी और मैट्रिक की पढ़ाई कर रही थी। उसकी बुद्धिमत्ता और दृढ़ संकल्प उसे अन्य बच्चों से अलग बनाते थे। सिलिया का जन्म एक दलित परिवार में हुआ, जिससे वह समाज में जाति के आधार पर होने वाले भेदभाव को अच्छी तरह समझती थी। लेकिन वह अपने कठिनाइयों को उसे रोकने नहीं देती और आगे बढ़ने के लिए दृढ़ निश्चय करती है। सिलिया का साहस और करुणा उसे दलित मुक्ति आन्दोलन में सक्रियता से शामिल होने के लिए प्रेरित करता

है। उसने बचपन में अछूतों के प्रति समाज की असहमति और उत्पीड़न का अनुभव किया था, जिससे उसकी आत्मा को चोट पहुंची। इन अनुभवों ने उसकी इच्छा को और मजबूत किया कि वह दलित समुदाय के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़े। उसकी मेहनत, प्रतिभा और प्रतिबद्धता ने उसे एक प्रसिद्ध लेखिका, भाषणकार और क्रियाशील कार्यकर्ता के रूप में उभारा। उसकी प्रतिष्ठा और नेतृत्व क्षमता के कारण वह राष्ट्रीय दलित नेत्री बन गई। उसकी कहानी एक संघर्षमय यात्रा की है, जिसमें उसने खुद को समाज में एक प्रमुख स्थान दिलाया और दलितों के लिए आवाज उठाई।

मालती : मालती एक साहसी और हिम्मती लड़की है। वह उन चुनौतियों का सामना करती है जो उसकी जाति के कारण उसे मिलती हैं। वह निडर है और उसे समाज की सीमाओं से बंधकर नहीं रहना पसंद है। हालाँकि, उसकी हिम्मत उसे कभी-कभी मुवि 56/132 है, जैसे कि कुएं से पानी लेने की घटना में। वह अपने फैसलों की कीमत चुकाती है, लेकिन वह अपनी गलतियों से सीखने और आगे बढ़ने के लिए तैयार है।

सिलिया की मामी: मामी एक परंपरागत सोच वाली महिला है जो अपनी जाति के साथ जुड़ी हुई है। वह मालती को समाज की सीमाओं में रहने की सिखाने की कोशिश करती है, ताकि वह मुश्किलों से बच सके। हालांकि, उसकी सख्ती कभी-कभी मालती पर कठोर हो जाती है, जैसे कि जब वह उसे मारती है और डांटती है। मामी की चिंता मालती की भलाई के लिए होती है, लेकिन वह इसे सख्ती के माध्यम से दिखाती है।

बकरी वाली: बकरी वाली उच्च जाति की है और अपनी श्रेष्ठता का दावा करती है। उसकी सोच में जातिवाद है और वह अपनी जाति के अधिकारों को बनाए रखने के लिए तैयार है। वह अपने कुएं से पानी लेने पर मालती का विरोध करती है और इसे अपने अधिकार के उल्लंघन के रूप में देखती है। उसकी प्रतिक्रिया कठोर और नकारात्मक होती है, जो समाज में जातिगत भेदभाव को दर्शाती है।

सिलिया की माँ : सिलिया की माँ एक दुद और सावधान व्यक्तित्व वाली महिला हैं। उनके विचारों में स्पष्टता और परिपक्वता है, जो उन्होंने जीवन के अनुभवों से अर्जित की है। वह अपनी बेटी के लिए एक सुरक्षित और सम्मानजनक भविष्य चाहती हैं, लेकिन वह इस बात से भी अवगत हैं कि समाज में जाति के आधार पर भेदभाव होता है। वह अपनी बेटी की शिक्षा को महत्वपूर्ण मानती हैं और उसे अच्छी तरह पढ़ाई करने की सलाह देती हैं। वह समाज के दिखावे और आडंबर से दूर रहना चाहती हैं और यह मानती हैं कि उनकी बेटी को उच्च जाति के परिवार में विवाह करना जोखिम भरा हो सकता है। वह समझती हैं कि ऐसी शादी से उनकी बेटी का जीवन अस्थिर हो सकता है, और उसे अपने ही परिवार और समाज से दूर कर सकती है। सिलिया की माँ का यह विश्वास है कि उनकी बेटी अपनी पढ़ाई और कड़ी मेहनत से खुद अपनी किस्मत बना सकती है। उनकी चिंता सिर्फ अपनी बेटी के लिए नहीं है, बल्कि वह उसकी लंबी अवधि की भलाई को ध्यान में रखती हैं। वह अपनी बेटी को सही दिशा में मार्गदर्शन करने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं, ताकि उसकी बेटी अपनी खुद की पहचान बना सके और समाज में सम्मान पा सके।

हेमलता : हेमलता एक समझदार और सहानुभूति रखने वाली लड़की है। वह पांचवीं कक्षा में सिलिया के साथ पढ़ती है और उसकी सहेली है। हेमलता ने सिलिया को अपने बड़ी बहन के घर लाया, जहाँ वह उसकी मौसी से मिली। हेमलता के व्यवहार में उसके और सिलिया के बीच दोस्ती और एकता दिखती है, क्योंकि वह मौसी से सिलिया के बारे में बात करती है और उसकी पहचान छुपाने की कोशिश नहीं करती। वह सिलिया के प्रति संवेदनशील रहती है, लेकिन उसकी अपनी सीमाएँ हैं, क्योंकि वह मौसी के साथ संवाद में सिलिया की जाति का नाम धीरे से बताती है।

मौसी : मौसी जी एक पारंपरिक और जातिगत भेदभाव के मानकों पर विश्वास करने वाली महिला हैं। वह हेमलता की बड़ी बहन की सास हैं और जब सिलिया की जाति का नाम सुनती हैं, तो वह चौंक जाती हैं और तत्काल उसे साइकिल पर बिठाकर घर छोड़ने का वादा करती हैं। मौसी जी का व्यवहार जातिगत भेदभाव को दर्शाता है, जब वह पानी का गिलास लेकर अंदर चली जाती

हैं और सिलिया को बिना पानी दिए छोड़ देती हैं। वह सिलिया की जरूरतों को नजरअंदाज करती हैं और उसकी जाति के आधार पर उसके साथ भेदभाव करती हैं। उनके इस व्यवहार से जातिगत भेदभाव और असमानता के मुद्दे की झलक मिलती है।

2.4.3 भाषा शैली

इस कहानी की भाषा सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा है। यह कहानी एक ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित है, इसलिए इसकी भाषा में देहाती और स्थानीय शब्दों का प्रयोग किया गया है। लेखिका ने पात्रों के संवादों और घटनाओं को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया है, जिससे पाठक आसानी से कहानी से जुड़ सकते हैं। कहानी में पात्रों की भावनाओं और विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए सीधी भाषा का उपयोग किया गया है। संवादों में विशेष रूप से बोलचाल की भाषा का उपयोग किया गया है, जिससे पात्रों के व्यक्तित्व और सामाजिक पृष्ठभूमि को समझना आसान हो जाता है। कुल मिलाकर, कहानी की भाषा शैली पाठक को कहानी के पात्रों के जीवन और उनकी चुनौतियों से जोड़ने में सक्षम है, और यह कहानी को जीवंत और वास्तविक बनाती है।

2.4.4 उद्देश्य

इस कहानी का उद्देश्य समाज में जातिगत भेदभाव और दलितों के प्रति होने वाले अन्याय को उजागर करना है। कहानी सिलिया नाम की दलित कन्या के संघर्ष और उसकी जीवन यात्रा को दर्शाती है, जो ऊँची शिक्षा प्राप्त करने और अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा देती है। कहानी में दिखाया गया है कि कैसे उच्च जाति के लोग दलितों के साथ भेदभाव करते हैं, जिससे उनकी मूलभूत आवश्यकताएँ जैसे कि पानी पीने का अधिकार भी छीन लिया जाता है। कहानी बताती है कि दलितों को समाज में समानता और सम्मान पाने के लिए किस तरह की कठिनाइयों

का सामना करना पड़ता है। सिलिया के संघर्ष और उसकी मेहनत के माध्यम से कहानी यह दर्शाती है कि दलितों के अधिकारों के लिए काम करना और उनके लिए एक बेहतर समाज बनाने की कोशिश करना कितना महत्वपूर्ण है। सिलिया की यात्रा एक प्रेरणा है कि कठिनाइयों के बावजूद भी सही दिशा में प्रयास करके सफलता हासिल की जा सकती है। कहानी का उद्देश्य समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव को समाप्त करने और दलितों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए जागरूकता फैलाना है।

2.5 छौआ माँ

2.5.1 कथानक

'छौआ माँ' कहानी का कथानक भारतीय समाज के एक दलित महिला की जीवन की कठिनाइयों और उसकी संघर्षों पर केंद्रित है। छौआ माँ एक दलित जाति की महिला है। वह गांव में दायमा का काम करती है, जिसमें जच्चा-बच्चा की देखभाल, सफाई, और अन्य घरेलू कार्य शामिल हैं। उसकी बेटी तुलसा उसकी चिंता करती है क्योंकि उसकी माँ लगातार मेहनत करती है और आराम नहीं कर पाती।

छौआ माँ को ऊँची जातियों के लोग अपने घरों में उसका आना पसंद नहीं करते, लेकिन फिर भी उसकी सेवाओं का उपयोग करते हैं। कहानी में उसकी बेटी तुलसा को जबरदस्ती उसके काम में धकेला जाता है, जिससे छौआ माँ को गुस्सा आता है। ऊँची जातियों के लोग तुलसा को काम करने के लिए कहते हैं, लेकिन तुलसा यह काम नहीं कर पाती है क्योंकि उसने इसे सीखा नहीं है। कहानी में सामाजिक भेदभाव और दलितों के प्रति असमानता की झलक मिलती है। छौआ माँ इन चुनौतियों का सामना करते हुए अपने अधिकारों के लिए लड़ती है और अंत में फैसला करती है कि वह अब से इस तरह के काम नहीं करेगी। कहानी में उसकी दृढ़ता और संघर्ष की भावना को दर्शाया गया है।

2.5.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण

छौआ माँ कहानी में दो ही पात्र मिलते हैं जो है छौआ माँ और छौआ माँ की बेटी तुलसा।

छौआ माँ : छौआ माँ एक मेहनती और परिश्रमी महिला है, जो अपनी उम्र के बावजूद भी गाँव की दाई के रूप में काम करती है। वह जच्चा-बच्चा की देखभाल करती है, तेल मालिश करती है, गंदे कपड़े धोती है, और घर की साफ-सफाई का काम भी संभालती है। उसकी जिम्मेदारियों की कोई सीमा नहीं है, और उसकी सेवा पूरे गांव की बहू-बेटियों के लिए अनमोल है। छौआ माँ के लिए आराम करने का कोई समय नहीं है। उसकी जाति के कारण, उसे कई बार भेदभाव और असमानता कामना करना पड़ता है। उच्च जाति के लोग छौआ माँ को केवल अपने काम के लिए ही मानते हैं और उसकी जरूरत पर ही उसकी ओर रुख करते हैं। जब छौआ माँ किसी कार्य को मना करती है या विरोध जताती है, तो उसे गालियाँ सुनने को मिलती हैं और उसे दबाव में डालने की कोशिश की जाती है। यह उसकी सामाजिक स्थिति की कठिनाइयों को दर्शाता है, जहां उसकी जाति के कारण उसे सम्मान के बजाय असमानता और अपमान का सामना करना पड़ता है। छौआ माँ का चरित्र उसकी दृढ़ता, साहस, और सेवा भावना को दर्शाता है। वह अपनी परिस्थितियों के बावजूद भी अपने काम को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभाती है, लेकिन उसकी जाति की वजह से उसे कई बार अनुचित व्यवहार और भेदभाव का सामना करना पड़ता है।

तुलसा : तुलसा, छौआ माँ की बेटी, एक संवेदनशील और स्पष्टवादिता रखने वाली युवती है, जो अपनी माँ के कठिन और श्रमसाध्य जीवन को देखते हुए उसकी चिंता करती है। उसकी माँ की सेवा और संघर्षों को देखकर तुलसा को उसके प्रति सहानुभूति होती है। वह अपनी माँ के प्रति समर्पित है और उसकी देखभाल करना चाहती है, लेकिन उसके सामने सामाजिक और जातीय भेदभाव की जटिलताएँ हैं। तुलसा अपनी माँ के काम को पसंद नहीं करती है, क्योंकि वह जानती है कि यह कार्य उसकी माँ को थका देता है और उसे असमानता का सामना करना पड़ता है। उसने देखा है कि उसकी माँ कैसे उच्च जातियों के दबाव में काम करती है, लेकिन

उसका मनोबल ऊँचा रखने के लिए संघर्ष करती है। तुलसा को इस व्यवस्था के कारण गुस्सा आता है, क्योंकि वह चाहती है कि उसकी माँ को वह सम्मान और सम्मान मिले, जिसकी वह हकदार है। तुलसा अपनी माँ की कठिन परिस्थितियों से नाखुश है और यह चिंता करती है कि यह चक्र उसे भी प्रभावित कर सकता है। वह उच्च जातियों के दबाव और भेदभाव से बचना चाहती है, लेकिन अपनी माँ की सेवा और मार्गदर्शन के प्रति उसकी जिम्मेदारी भी समझती है। तुलसा का गुस्सा और विरोध उसे एक साहसी और स्वतंत्र सोच वाली युवा महिला के रूप में प्रस्तुत करते हैं। तुलसा के चरित्र में सहानुभूति, निडरता, और न्याय के प्रति जागरूकता देखने को मिलती है। वह अपने जीवन में समानता और सम्मान की उम्मीद करती है और अपनी माँ के अनुभवों से प्रेरित होकर अन्याय के खिलाफ खड़ी होने का साहस दिखाती है।

2.5.3 भाषा शैली

इस कहानी की भाषा सहज, ग्रामीण, और सजीव है। लेखिका ने गांव के माहौल और चरित्रों के बीच संबंधों को चित्रित करने के लिए स्थानीय भाषा और अभिव्यक्तियों का उपयोग किया है। भाषा में सीधी और स्पष्ट अभिव्यक्ति है, जो कहानी को प्रामाणिकता प्रदान करती है। इस कहानी में लेखिका ने आंचलिक शब्द, उर्दू शब्द, शब्द युग्म, पुनरुक्ति शब्द का उपयोग किया है। इस कहानी में वर्णनात्मक शैली और पूर्वदिप्ति शैली का भी प्रयोग हमें दिखाई देता है।

2.5.4 उद्देश्य

इस कहानी का उद्देश्य समाज में जातीय भेदभाव, असमानता, और उच्च जातियों के लोगों द्वारा निम्न जातियों के प्रति अन्यायपूर्ण व्यवहार को उजागर करना है। कहानी में छौआ माँ और उसकी बेटी तुलसा की परिस्थितियों के माध्यम से जातिगत भेदभाव और सामाजिक दबावों को दिखाया गया है, जो भारतीय ग्रामीण समाज में लंबे समय से मौजूद हैं। कहानी यह दिखाती है कि कैसे

छौआ माँ जैसे दलित महिलाओं को उच्च जातियों के लोगों द्वारा सिर्फ अपने काम के लिए ही इस्तेमाल किया जाता है, जबकि उन्हें सम्मान और समानता से वंचित किया जाता है। तुलसा के चरित्र के माध्यम से कहानी यह भी बताती है कि नई पीढ़ी इन भेदभावपूर्ण प्रथाओं के खिलाफ खड़ी हो रही है और समानता की मांग कर रही है। कहानी का उद्देश्य पाठकों को जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता के खिलाफ जागरूक करना और सोचने पर मजबूर करना है। यह कहानी समाज में परिवर्तन की आवश्यकता को दर्शाती है और सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करने के महत्व को रेखांकित करती है।

2.6 नयी राह की खोज

2.6.1 <u>कथानक</u>

'नयी राह की खोज' कहानी में लालचंद के संघर्ष और उसके परिवार के अनुभवों की व्याख्या की गई है। रामचंद ने लालचंद को अंग्रेजी माध्यम स्कूल में दाखिल कर बड़े सपने देखे थे, लेकिन परिवार की शिक्षा की अनुकूलता नहीं होने के कारण लालचंद को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। ट्यूशन के बावजूद, घर पर अभ्यास नहीं हो पाने और आर्थिक दबाव के कारण, उसे हिंदी माध्यम के स्कूल में स्थानांतरित करना पड़ा। यहाँ भी कठिनाइयाँ झेलते हुए, लालचंद की पढ़ाई छूट गई और जब वह बड़ा हुआ, तो वह सफाई मजदूर बन गया। लालचंद के पिता रामचंद ने दलित और पिछड़ी जातियों की समस्याओं को समझा और उनके निराकरण के लिए एक सामाजिक संस्था "जागरूक" बनाई। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने समाज के लोगों को शिक्षित करने और बच्चों को नए अवसर प्रदान करने की दिशा में काम किया। रामचंद और उनकी संस्था ने समाज में चेतना जगाई और लोगों को शिक्षा और नए अवसरों के महत्व को समझाया। इसका परिणाम यह हुआ कि कई लड़के-लड़कियों ने मैट्रिक पास किया, और कुछ कॉलेज जाने लगे। इस तरह, समाज की प्रगति हुई और लोग उद्योगों, व्यवसायों, और शिक्षा में आगे बढ़ने लगे।

रामचरण इस सफलता से खुश हुए और समाज के लिए और बेहतर भविष्य की कामना की। कहानी समाज के जागरूकता, शिक्षा, और नए अवसरों की ओर बढ़ने के प्रयासों की एक सकारात्मक तस्वीर पेश करती है, जिसमें पिछड़ी जातियों के लोगों के जीवन में बदलाव की संभावना दिखाई देती है।

2.6.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण

रामचंद और लालचंद दोनों ही इस कहानी में महत्वपूर्ण पात्र हैं, जिनके माध्यम से लेखक ने परिवार, शिक्षा, और समाज के संघर्षों और परिवर्तन की व्याख्या की है। दोनों के चरित्रों में विशिष्ट विशेषताएँ हैं जो कहानी को गहराई और सजीवता प्रदान करती हैं।

रामचंद : रामचंद एक मेहनती और दूरदर्शी पिता है, जिसने अपने बेटे लालचंद के लिए बेहतर भविष्य की कामना की। उसकी इच्छा थी कि उसका बेटा अंग्रेजी माध्यम स्कूल में पढ़े और समाज में सम्मान प्राप्त करे। अपने सीमित संसाधनों के बावजूद, उसने अपने बेटे की शिक्षा के लिए आर्थिक प्रयास किए। रामचंद की प्रेरणा उसके बेटे के प्रति उसके प्यार और उसके समाज को आगे बढ़ाने की इच्छा से प्रेरित है। हालांकि, रामचंद को सामाजिक परिस्थितियों और पारंपरिक सीमाओं का भी सामना करना पड़ा। जब उसके सपनों के विपरीत, उसका बेटा अंग्रेजी माध्यम स्कूल में संघर्ष करने लगा, तो उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद, रामचंद ने हार नहीं मानी और सामाजिक संस्था "जागरूक" के माध्यम से समाज में बदलाव लाने का प्रयास किया। यह दिखाता है कि रामचंद एक संघर्षशील, धैर्यवान, और सामुदायिक नेता है।

लालचंद : लालचंद के चरित्र में युवा उत्साह, संघर्ष, और निराशा की झलक मिलती है। उसकी आरंभिक शिक्षा अंग्रेजी माध्यम स्कूल में शुरू हुई, जहाँ उसे भाषा और विषयों में कठिनाइयाँ आईं परिवार की अनपढ़ता और ट्यूशन की सीमित मदद के कारण, वह अपनी पढ़ाई में सफल

नहीं हो सका। बाद में, उसे कॉरपोरेशन के स्कूल में जाना पड़ा, जहाँ भी उसे संघर्ष करना पड़ा और अंततः उसकी पढ़ाई छूट गई। लालचंद के भीतर समाज में परिवर्तन की आवश्यकता को समझने की क्षमता है। जब वह बड़ा होता है, तो वह अपने समाज की समस्याओं पर विचार करने लगता है और अपने बेटे के भविष्य के लिए चिंतित रहता है। उसकी असफलताओं और निराशाओं के बावजूद, लालचंद का चरित्र बदलाव के प्रति सजग है।

2.6.3 भाषा शैली

इस कहानी की भाषा शैली में विविधता और समृद्धता है। यह ग्रामीण पृष्ठभूमि के अनुरूप अनुकूल है, जहाँ पात्रों की बोली-भाषा, मुहावरे, और कहावतें कहानी को यथार्थवादी और जीवंत बनाती हैं। कहानी में ग्रामीण भाषा का उपयोग किया गया है, जिसमें स्थानीय शब्दावली, बोलचाल के शब्द, और स्थानीय मुहावरे शामिल हैं। यह भाषा कहानी के पात्रों के अनुभवों, जीवनशैली, और परिवेश को सजीव बनाती है। कहानी की भाषा शैली पात्रों के भावनात्मक और मानसिक अनुभवों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करती है। यह पाठकों को पात्रों के संघर्षों, उनके विचारों, और उनके सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों से जोड़ने में सक्षम बनाती है। कहानी की भाषा शैली एक तरफ यथार्थवादी है, तो दूसरी तरफ यह पाठकों को ग्रामीण जीवन के जीवनशैली और सोच से परिचित कराती है।

2.6.4 उद्देश्य

इस कहानी का उद्देश्य शिक्षा के महत्व और समाज में बदलाव की आवश्यकता पर प्रकाश डालना है, विशेषकर पिछड़ी जातियों और आर्थिक रूप से कमजोर समुदायों में। कहानी में लालचंद और रामचंद के संघर्षों के माध्यम से समाज की विभिन्न चुनौतियों को दिखाया गया है, जैसे कि आर्थिक कठिनाइयों, पारंपरिक विचारधाराएँ, और शिक्षा की कमी। कहानी इस बात

की ओर इशारा करती है कि शिक्षा एक व्यक्ति और समाज के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन कई परिवारों को शिक्षा के अवसरों तक पहुँचने में कठिनाई होती है। रामचंद के प्रयासों के माध्यम से, कहानी यह दिखाती है कि सामाजिक जागरूकता और समुदाय के प्रयासों से समाज में बदलाव लाया जा सकता है। कहानी यह संदेश देती है कि समाज के पिछड़े वर्गों को शिक्षा और अवसर प्रदान करना उनके उत्थान के लिए आवश्यक है। यह भी दिखाती है कि व्यक्ति और समुदाय जब मिलकर काम करते हैं, तो वे सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। कहानी प्रेरणा देती है कि कठिनाइयों के बावजूद, शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से समाज में सुधार और प्रगति संभव है।

2.7 धूप से भी बड़ा

2.7.1 कथानक

'धूप से भी बड़ा' कहानी का कथानक रमा नाम की एक लड़की के जीवन के इर्द-गिर्द घूमता है। रमा पंडित भारद्वाज की बेटी है और उसे कॉलेज में बंटी नाम के लड़के से प्रेम हो जाता है। वे कोर्ट मैरिज करते हैं और रमा का नाम बदलकर रोमा डी' सोसा हो जाता है। हालांकि, बंटी की आवारा आदतें और बेरोजगारी के कारण उनके रिश्ते में समस्याएं उत्पन्न होती हैं। कहानी में सुनील नाम का एक और मुख्य पात्र है, जो एमबीबीएस का छात्र है और रमा के परिवार के पड़ोस में रहता है। वह शेड्यूल कास्ट से संबंधित है और रमा को उसकी जाति के कारण उसे गंभीरता से नहीं लेती। रमा और बंटी के रिश्ते के बिगड़ने के बाद, रमा बंटी से तलाक ले लेती है। इस बीच, रमा के मन में सुनील के प्रति सम्मान और प्रेम भाव बढ़ने लगता है। सुनील के प्रेम की उपेक्षा करने के बाद, रमा अंततः समझने लगती है कि सुनील एक बहुत ही सम्मानजनक, समझदार, और देखभाल करने वाला व्यक्ति है। एक दिन, सुनील रमा के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखता है और रमा उसे स्वीकार कर लेती है।

कहानी में रमा और सुनील के प्रेम, विवाह, और खुशहाल जीवन के बारे में बताया गया है। कहानी के अंत में, रमा सुनील के प्रति अपने फैसले से खुश है और महसूस करती है कि उसने सही व्यक्ति को चुना है। इस तरह, कहानी जातिवाद, सामाजिक विभाजन, प्रेम, और विवाह के संदर्भ में रमा के जीवन में आए बदलाव और उसके विकास को दर्शाती है।

2.7.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण

इस कहानी में चार पात्र मिलते हैं। रमा, सुनील, बंटी और बंटी की आंटी।

रमा : रमा एक उच्च जाति के परिवार से आने वाली लड़की के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसे पारंपरिक संस्कारों और समाज की अपेक्षाओं से बंधा हुआ दिखाया गया है। उसकी सोच में जातिवाद और सामाजिक भेदभाव की झलक मिलती है, जब वह सुनील की निम्न जाति के कारण उसे गंभीरता से नहीं लेती और उसके प्रति नकारात्मक रवैया अपनाती है। उसकी परंपरागत सोच और समाज की अपेक्षाएं उसे सीमित करती हैं और वह सुनील के साथ विवाह करने की संभावना को नकार देती है। हालांकि, रमा की सोच में एक विरोधाभास भी देखा जा सकता है जब वह क्रिश्चियन बंटी से प्रेम करती है और उसके साथ विवाह करती है। यह निर्णय उसकी पारंपरिक सोच और उच्च जाति की मान्यताओं के विपरीत है। उसने बंटी के प्रति अपने प्रेम को महत्व दिया, न कि उसकी धार्मिक पृष्ठभूमि को। "बंटी के लिए उसने अपना धर्म बदल लिया, राम से वह रोमा बन गयी-रोमा डिसूजा।" रमा की जीवन यात्रा में वह अपने पूर्वाग्रहों से बाहर निकलती है अपने अनुभवों से सीखते हुए एक नए दृष्टिकोण को अपनाती है। शादी के बाद की कठिनाइयों और बंटी की अव्यवहारिक आदतों के कारण वह अंततः बंटी से तलाक ले लेती है। इससे उसकी मानसिकता में बदलाव आता है। वह सुनील के प्रति सम्मान और प्रेम की भावना को स्वीकार करती है। और अंत में सुनील से विवाह करती है।

सुनील : सुनील एक शांत, संवेदनशील, और समझदार व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। उसकी जाति के कारण उसे समाज में चुनौतीपूर्ण स्थिति का सामना करना पड़ता है, लेकिन वह अपने लक्ष्यों के प्रति दृढ़ है। वह एमबीबीएस की पढ़ाई कर रहा है। उसकी उदारता, सहानुभूति, और प्रेम भाव रमा के प्रति उसकी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

बंटी : बंटी एक आकर्षक और आधुनिक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो रमा के प्रति आकर्षित होता है। शुरुआत में उनके संबंधों में प्यार और खुशी होती है, लेकिन बंटी की बेरोजगारी और आवारा आदतों के कारण उनके रिश्ते में तनाव उत्पन्न होता है। बंटी की यह अव्यवहारिकता रमा को कठिनाइयों में डालती है और अंततः उनके तलाक का कारण बनती है।

बंटी की आंटी : आंटी का चित्रण व्यावहारिक और यथार्थवादी व्यक्ति के रूप में किया गया है। वे रोमा की देखभाल करने के लिए मौजूद हैं, उसके दुख और परेशानियों के समय उसे समझाने और शांत करने की कोशिश करती हैं। आंटी ने अपने जीवन में स्थिरता और संतोष पाया है, और वे रोमा को भी उसी तरह के दृष्टिकोण के लिए प्रेरित करती हैं। आंटी का अपना जीवन भी सरल और सामान्य है। उन्होंने कभी अपने भविष्य के बारे में ज्यादा चिंता नहीं की है और न ही अपने पारिवारिक सुख के लिए बहुत अधिक चिंतित दिखाई दी हैं। वे अपनी बहन के पास रहती हैं और जीवन के छोटे सुखों का आनंद लेती हैं, जैसे कि अच्छी तरह खाना, पहनना, घूमना, और आराम करना। यह साधारण जीवन और उनकी उम्र के बावजूद अविवाहित रहने की स्थिति उन्हें एक रहस्यमय और निस्सारता से भरी हुई छवि प्रदान करती है।

2.7.3 भाषा शैली

इस कहानी की भाषा कई विशेषताओं को शामिल करती है। लेखिका ने मुख्यतः हिंदी भाषा का उपयोग किया है, लेकिन कहानी में अंग्रेजी शब्द भी आए हैं, जो आधुनिक जीवन शैली को दर्शाने के लिए उपयोग किए गए हैं। यह कहानी के पात्रों के युवा, शहरी पृष्ठभूमि को दर्शाने में सहायक है। कहानी में फ्लैशबैक शैली का भी उपयोग किया गया है, जिससे रमा के पिछले अनुभवों और घटनाओं की झलकियों के माध्यम से कहानी को आगे बढ़ाने में मदद मिलती है।

इससे पाठक रमा के विचारों और भावनाओं को बेहतर समझ सकते हैं और उसके निर्णयों को अधिक स्पष्टता से देख सकते हैं। लेखिका ने एक मुहावरे का भी उपयोग किया है, जिससे कहानी की भाषा में जीवंतता और प्रभावशीलता आती है। यह मुहावरा कहानी की स्थिति या पात्रों के मनोभावों को सारगर्भित तरीके से व्यक्त करता है। कुल मिलाकर, कहानी की भाषा शैली पारंपरिक हिंदी के साथ-साथ आधुनिक अंग्रेजी शब्दों का मिश्रण है, जो पात्रों की पृष्ठभूमि और जीवन शैली को दर्शाता है। फ्लैशबैक शैली और मुहावरे का उपयोग कहानी को गहराई और विविधता प्रदान करता है।

2.7.4 उद्देश्य

इस कहानी का उद्देश्य सामाजिक भेदभाव, जातिवाद, और पारंपरिक मान्यताओं के बीच संघर्ष के मुद्दों को उजागर करना है। कहानी में रमा के माध्यम से दिखाया गया है कि कैसे जातिवाद और सामाजिक विभाजन के कारण व्यक्ति के विचार, निर्णय, और जीवन के अनुभव प्रभावित होते हैं। रमा का व्यक्तित्व पारंपरिक संस्कारों और समाज की अपेक्षाओं से बंधा हुआ है, जिससे वह सुनील के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण अपनाती है। कहानी में बंटी और रमा के विवाह और उसके बाद आने वाली कठिनाइयों के माध्यम से प्रेम, विवाह, और पारिवारिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है। बंटी की अव्यवहारिक आदतों और बेरोजगारी के कारण रमा को उसके साथ अपने जीवन में संघर्ष का सामना करना पड़ता है। इससे वह अंततः बंटी से तलाक ले लेती है। इसके बाद, रमा का सुनील के प्रति बदलता दृष्टिकोण और उसके साथ विवाह करना यह दर्शाता है कि व्यक्ति अपने पूर्वाग्रहों और सामाजिक भेदभाव से बाहर निकलकर सही निर्णय ले सकता है। कहानी यह संदेश देती है कि प्रेम, समझदारी, और सहानुभूति के आधार पर सही निर्णय लेने से व्यक्ति अपने जीवन में खुशहाल रह सकता है। कुल मिलाकर, इस कहानी का उद्देश्य सामाजिक और व्यक्तिगत संघर्षों को उजागर करना है, जिसमें जातिवाद, पारंपरिक मान्यताएं, प्रेम, और विवाह के मुद्दों को शामिल किया गया है।

2.8 संभव असंभव

2.8.1 कथानक

'संभव असंभव' कहानी में मनाली नामक दलित महिला के जीवन के अनुभवों, संघर्षों और आंतरिक यात्रा को दर्शाता है। कहानी में मनाली सामाजिक असमानताओं और जातिगत भेदभाव से जूझ रही है। उसकी मुलाकात राजीव नामक ब्राह्मण युवक से होती है, जिसके प्रति वह आकर्षित होती है, लेकिन उनकी जाति और उम्र के अंतर के कारण वह उनके रिश्ते के भविष्य को लेकर अनिश्चित रहती है। कहानी में मनाली के जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित किया गया है, जिसमें वह अपने जीवन में सामाजिक परिवर्तन और न्याय के लिए काम कर रही है। मनाली की मुलाकात राजीव से होती है, जो उसे समानता और आदर्शों के प्रति प्रेरित करता है। वह अपने परिवार और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाते हुए भी अपनी आंतरिक उथल-पुथल का सामना करती है।

कहानी में मनाली की आंतरिक उथल-पुथल और उसके संघर्ष को दिखाया गया है, जिसमें वह अपने आदर्शों और मूल्यों के प्रति अपने जीवन की दिशा तय करने का प्रयास करती है। एक महत्वपूर्ण क्षण में, मनाली अपने आदर्शों को बनाए रखने और अपने जीवन को सुधारने के लिए एक रास्ता चुनती है। कहानी में मनाली के साहस, आत्मविश्वास और उसकी नेतृत्व क्षमता को उजागर करती है, जिससे वह समाज में परिवर्तन के लिए प्रेरित होती है और अन्य लोगों के लिए एक प्रकाशस्तंभ बनती है। कहानी का अंत मनाली की प्रतिबद्धता और उसकी आत्मनिर्भरता को दर्शाता है, जिसमें वह अपने आदर्शों को जीने और दूसरों के लिए रोशनी का स्रोत बनने के लिए प्रतिबद्ध होती है।

2.8.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण

'संभव असंभव' कहानी में हमें सिर्फ दो ही पत्र मिलते हैं जो है मनाली और राजीव।

मनाली : मनाली एक दलित महिला है जो सामाजिक असमानताओं और जातिगत भेदभाव के खिलाफ संघर्ष करती है। वह एक बुद्धिमान, दृढनिश्चयी, और संवेदनशील महिला है, जो अपने जीवन में न्याय और समानता के लिए काम कर रही है। उसकी जाति और पृष्ठभूमि ने उसे एक मजबूत सामाजिक चेतना और समाज सुधार की दिशा में प्रेरित किया है। मनाली अपने समाज के प्रति जागरूकता रखती है और उसकी यात्रा उसे आत्मनिरीक्षण करने और अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक जिम्मेदारियों को समझने की ओर ले जाती है।

राजीव : राजीव एक ब्राह्मण युवक है, जो अपनी युवा ऊर्जा और सहानुभूति के साथ मनाली के जीवन में प्रवेश करता है। वह मनाली के प्रति आदर और सम्मान का भाव रखता है, और उनके बीच उम्र और जाति के अंतर के बावजूद उसकी ओर आकर्षित होता है। राजीव का चरित्र एक संवेदनशील और खुले विचारों वाला व्यक्ति है, जो सामाजिक सीमाओं को पार कर मनाली के साथ जुड़ता है। राजीव का व्यवहार मनाली को नई संभावनाओं और आशाओं की दिशा में प्रेरित करता है। उसकी सहानुभूति और समर्थन मनाली के लिए एक नया अनुभव है, जो उसके जीवन में संदेह और अनिश्चितता को जन्म देता है। हालांकि, राजीव के प्रति उसके आकर्षण के बावजूद, मनाली उनके रिश्ते के भविष्य को लेकर सतर्क रहती है, विशेष रूप से सामाजिक और सांस्कृतिक असमानताओं के कारण।

2.8.3 भाषा शैली

'संभव असंभव' कहानी की भाषा साधारण, सहज, और प्रवाहमय है। लेखक ने कहानी को आम बोलचाल की भाषा में प्रस्तुत किया है, जिससे पाठक कहानी के पात्रों के विचारों और भावनाओं से आसानी से जुड़ सकते हैं। कहानी में मनाली और राजीव के बीच की बातचीत और

उनके विचारों का वर्णन स्पष्ट और प्रभावी ढंग से किया गया है। कहानी में संवादों का उपयोग प्राकृतिक तरीके से किया गया है, जिससे पात्रों का व्यक्तित्व स्पष्ट हो जाते हैं। लेखक ने कहानी के भावनात्मक पहलुओं को उजागर करने के लिए भाषा का कुशलतापूर्वक उपयोग किया है। मनाली की आंतरिक उथल-पुथल, संघर्ष, और राजीव के प्रति उसके आकर्षण और अनिश्चितता को व्यक्त करने के लिए लेखक ने संवेदनशील और विचारशील भाषा का प्रयोग किया है।

2.8.4 उद्देश्य

'संभव असंभव' कहानी का उद्देश्य स्त्री की स्वतंत्रता, विचारों और संघर्षों को दर्शाना है। इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने स्त्री के समाज में अपने विचारों और आदर्शों को स्थापित करने के लिए संघर्ष को चित्रित किया है। कहानी में मनाली के चरित्र के माध्यम से लेखिका ने दिखाया है कि एक स्त्री को अपनी आवाज और विचारों को व्यक्त करने के लिए किस तरह की बाधाओं का सामना करना पड़ता है। मनाली की यात्रा उसकी आंतरिक उथल-पुथल और अपने विश्वासों और आदर्शों को बनाए रखने की उसकी लड़ाई को दर्शाती है। कहानी में स्त्री को अपने विचारों को लेकर किस तरह संघर्ष करना होता है, यह विशेष रूप से उसकी जाति, सामाजिक पृष्ठभूमि, और व्यक्तिगत जीवन के संदर्भ में चित्रित किया गया है। लेखिका कहानी के माध्यम से समाज में स्त्री की स्थिति और उसकी स्वतंत्रता के महत्व पर ध्यान आकर्षित किया है। यह पाठकों को स्त्री के संघर्ष, उसकी चुनौतियों, और उसकी आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रेरित करता है। कहानी का उद्देश्य समाज में स्त्री की आवाज को उठाने और उसके अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने की दिशा में प्रेरित करना है।

2.9 दमदार

2.9.1 कथानक

'दमदार' कहानी का कथानक सुमन की साहसी और निडर जीवन यात्रा पर केंद्रित है। सुमन एक कंजर जाति की महिला है, जो अपने पति छेदीलाल के बार-बार जेल जाने के बावजूद अपने परिवार को अकेले संभालती है। उसके साहसी स्वभाव के कारण वह अपने दम पर जीवन जीने की कोशिश करती है और अपनी जाति के कठोर नियमों के बावजूद अपने बलबूते पर खड़ी होती है। कहानी में जातिगत भेदभाव और पूर्वाग्रहों की झलक मिलती है, जहां सुमन और उसकी जाति के लोगों को दोषी माना जाता है, भले ही वे निर्दोष हों। कहानी के अंत में सुमन का साहसिक सामना जग्गू पहलवान के साथ होता है, जहां वह उसकी चुनौती का सामना करती है और साबित करती है कि स्त्री भी आत्मविश्वास और साहस से पुरुषों से कम नहीं है। कहानी सुमन की ताकत और निडरता को दर्शाती है, जिससे वह अपने जीवन की कठिनाइयों का सामना करती है और समाज के भेदभावपूर्ण दृष्टिकोणों का डटकर मुकाबला करती है।

2.9.2 पात्र एवं चरित्र चित्रण

'दमदार' कहानी में सुमन, छेदीलाल, जग्गू पहलवान, लड़की और पागल औरत यह पत्र मिलते हैं।

सुमन : सुमन एक साहसी और निडर महिला है, जो कंजर जाति से संबंध रखती है। वह कठिन परिस्थितियों में भी आत्मनिर्भर है और अपने परिवार को अकेले संभालने की कोशिश करती है। उसके पति छेदीलाल के बार-बार जेल जाने के बावजूद वह अपने दम पर परिवार का ख्याल रखती है, जिससे उसके साहस और दृढ़ संकल्प का पता चलता है। सुमन का व्यक्तित्व साहसी है, क्योंकि वह समाज में मौजूद जातिगत भेदभाव का डटकर मुकाबला करती है। वह अपने अधिकारों के लिए लड़ने में हिचकिचाती नहीं है, और जब उसे कोई चुनौती देता है, तो वह

उसका सामना पूरी ताकत और आत्मविश्वास के साथ करती है। सुमन के चरित्र की एक और विशेषता उसकी सहृदयता है। वह अपने समुदाय की महिलाओं के साथ मिलकर रहती है और उनकी मदद भी करती है। इसके अलावा, वह अपनी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता को बनाए रखते हुए अपने जीवन को अपने तरीके से जीने की कोशिश करती है। जग्गू पहलवान के साथ उसके संघर्ष में सुमन का साहस और शक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वह साबित करती है कि एक महिला भी पुरुषों से कम नहीं है और अपनी मर्यादा के लिए दृढ़ता से खड़ी हो सकती है। कुल मिलाकर, सुमन एक साहसी, आत्मनिर्भर, सहृदय, और निडर महिला है, जो अपने परिवार और स्वयं के लिए न्याय और स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ती है।

जग्गू पहलवान : जग्गू पहलवान एक दुबला-पतला, मरियल और चरित्रहीन व्यक्ति है, जो अपने बड़े भाई भग्गू पहलवान की छवि का फायदा उठाते हुए खुद को "पहलवान" कहलवाना पसंद करता है। उसके स्वभाव में हिंसक प्रवृत्ति है, और वह निर्दयता से काम करता है। जग्गू बहुत ही दुष्ट और गुंडा किस्म का व्यक्ति है, जिसे दूसरों को डराने और उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाने में कोई हिचकिचाहट नहीं होती। जग्गू का व्यवहार बुराई से भरा है। वह बाजार में पागल औरत के प्रति हिंसक व्यवहार दिखाता है, जिससे उसकी क्रूरतों का पता चलता है। इसके अलावा, रामू सेठ की बेटी प्रेमलता के साथ दुर्व्यवहार करने की घटना भी उसकी बुरी प्रवृत्ति को दर्शाती है, जहां उसने लड़की का हाथ पकड़कर उसे डराने की कोशिश की। सुमन के साथ उसके संबंध ने उसकी दुष्टता को और स्पष्ट किया है। जग्गू ने सुमन के साथ एक संबंध स्थापित किया, जिससे उसकी चालाक और धोखेबाज प्रवृत्ति का पता चलता है। उसका व्यवहार अहंकारी और बेशर्म है, जिससे वह समाज में नकारात्मक छवि बनाता है। कुल मिलाकर, जग्गू पहलवान एक दुष्ट, निर्दय, और अहंकारी व्यक्ति है, जिसकी क्रूरता और दुष्टता उसे एक बुरा चरित्र बनाती है।

पागल औरत : कहानी में पागल औरत एक विशेष और रहस्यमय चरित्र के रूप में दिखाई जाती है। वह बाजार में बैठी होती है और उसकी उपस्थिति असामान्य और अप्रत्याशित होती है। उसकी मानसिक स्थिति के कारण उसे "पागल" कहा जाता है, और वह अक्सर लोगों के प्रति

अजीब और अनिश्चित व्यवहार करती है, जैसे बंदर की तरह दांत दिखाना और जीव दिखाना। पागल औरत की उपस्थिति लोगों को हंसाने का कारण बनती है, जिससे जग्गू पहलवान जैसे व्यक्ति को गुस्सा आता है। उसकी मानसिक स्थिति के कारण वह समाज में कमजोर और असुरक्षित महसूस करती है। जग्गू पहलवान जैसे दुष्ट व्यक्ति उसकी इस कमजोरी का फायदा उठाते हैं, जिससे वह हिंसक व्यवहार का शिकार होती है।

प्रेमलता : प्रेमलता एक सोलह साल की युवा लड़की है, जो दसवीं कक्षा में पढ़ रही है। वह सुंदर, मासूम, और आत्मविश्वास से भरी है। जग्गू पहलवान के सामने खड़े होने पर वह दृढ़ता और साहस दिखाती है, लेकिन जब जग्गू उसे पकड़कर सड़क पर खींचता है, तो वह डर जाती है और चिल्लाने लगती है। उसकी मासूमियत और नासमझी उसके डर और असहायता को प्रकट करती है। प्रेमलता अपने परिवार के सम्मान की चिंता करती है और सामाजिक दबावों का सामना करती है, जिससे उसका चरित्र उसकी उम्न के अनुसार चुनौतियों से जूझने वाली एक युवा लड़की के रूप में उभरता है।

2.9.3 भाषा शैली

कहानी की भाषा में वास्तविकता का स्पर्श है, जिससे पाठक कथा में आसानी से जुड़ाव महसूस कर सकते हैं। भाषा शैली में वर्णनात्मकता का भी उपयोग किया गया है, जो कहानी के घटनाक्रम और पात्रों के चरित्र चित्रण को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है। कुल मिलाकर, कहानी की भाषा शैली साधारण, स्पष्ट, और वास्तविकता से जुड़ी हुई है, जो कथा को जीवंत बनाती है।

2.9.4 उद्देश्य

इस कहानी का उद्देश्य समाज में मौजूद जातिगत भेदभाव, सामाजिक असमानता, और लैंगिक असमानता जैसी समस्याओं को उजागर करना है। कहानी में सुमन, प्रेमलता, और पागल औरत के चरित्रों के माध्यम से विभिन्न सामाजिक मुद्दों को प्रस्तुत किया गया है। सुमन की कहानी से जातिगत भेदभाव का पता चलता है, जिसमें कंजर जाति के लोगों को अपराधी मानकर उनके साथ अन्याय किया जाता है। प्रेमलता के साथ हुई घटना से समाज में महिलाओं की असुरक्षा और उनकी प्रतिष्ठा की चिंता दिखाई देती है। वहीं, पागल औरत के प्रति जग्गू का हिंसक व्यवहार समाज में कमजोर और असुरक्षित व्यक्तियों के प्रति क्रूरता और दुष्टता को दर्शाता है। कहानी इन मुद्दों को प्रस्तुत करके समाज में बदलाव की आवश्यकता पर जोर देती 'है। यह पाठकों को समाज में व्याप्त अन्याय और असमानता के प्रति जागरूक करती है और उन्हें सोचने पर मजबूर करती है कि कैसे समाज में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि सुशीला टाकभौरे की कहानियों से यह ज्ञात होता है कि दलितों की समाज में क्या स्थिति है? सवर्णीय लोगों की दृष्टि से दलित लोग उनके नौकर ही है। मनमाने ढंग से इन्होंने दलितों के साथ व्यवहार किया है। पर अब दलित लोग उनकी मनमानी चलने देना नहीं चाहते। सवर्ण समाज के बहकावें में आकर अपने आप को दलदल में न फंसाये। यह कहानीयों में दलितों के संघर्ष की ओर ईशारा करती है। जहां समाज देश उन्नति की ओर अग्रसर है वहीं निम्न जाति के लोग और निम्नतर होते जा रहे हैं। दलित जाति अपने हक के लिए संघर्ष करती नजर आ रही है। लेखिका ने दर्शाया है कि समाज दलित नारी को किस नजरिये से देखता है। नारी हमेशा यही सोचती है कि मेरी स्थिति में सुधार आयेगा। पुरुष वर्ग कभी न कभी तो उसे मनुष्य होने का दर्जा देगा। लेकिन यह उसका वहम था। अब नारी खुद अपने अधिकारियों

के प्रति जागृत्त हो चुकी है। दलितों के प्रति सहानुभूति का स्वर समाज में धीरे-धीरे उभरने लगा है। समाज के कुछ लोग यह विचार करने लगे हैं, समाज के इस वर्ग को कब तक अलग रखा जाये। क्या उन्हें हमारे समान जीने का अधिकार नहीं हैं। ऐसे लोग समाज जिन्हें दलितों का साथ देते हुए उनकी बात का समर्थन करते हैं। सवर्ण लोगों की दृष्टि से निम्न जाति के लोगों का मान-अपमान इज्जत स्वाभिमान आदि बातें नहीं होती है। पर सुशीला टाकभौरे ने अपने साहित्य में दिखा दिया कि इन बातों का ख्याल जितना सवर्णों को होता है उतना निम्न वर्ण के लोगों को भी होता है। लेखिका ने अपनी लेखनी से दलित समाज को एक नई दिशा प्रदान की है।

संदर्भ

1) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ. 99

तृतीय अध्याय

सुशीला टाकभौरे की कहानियों में संघर्ष

संघर्ष मानव जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है, जो व्यक्ति के मन और बाहरी दुनिया दोनों में होता है। यह एक निरंतर प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति, परिवार, समाज, राज्य, राष्ट्र, और विश्व के बीच प्रतियोगिता और स्पर्धा की भावना होती है। संघर्ष व्यक्ति की उन्नति और प्रगति के लिए आवश्यक होता है, क्योंकि यह उसे नए अवसरों और चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करता है। संघर्ष के माध्यम से व्यक्ति बुराई का विरोध करके अपनी उन्नति कर सकता है और अपनी सीमाओं को पार कर सकता है। संघर्ष व्यक्ति के उत्थान और पतन के इतिहास से जुड़ा होता है। समाज में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक संघर्ष की उपस्थिति होती है, जिससे व्यक्ति और समुदाय के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

आज के विज्ञान और तकनीकी प्रगति के युग में, संघर्ष की बढ़ती तीव्रता संपूर्ण मानव जाति के लिए खतरा बन सकती है। साहित्य और संघर्ष का भी गहरा संबंध है, क्योंकि महान साहित्य जन-संघर्ष की उपज होता है। सच्चा साहित्यकार समाज की कड़वाहट को समाप्त कर उसे आनंद प्रदान करता है और इस प्रकार समाज का सृजक माना जाता है।

संघर्ष मानव जीवन की विविध अनुभूतियों को साहित्य में अभिव्यक्त करता है और इसे व्यापक और सार्थक रूप में प्रस्तुत करता है। संघर्ष की इस व्याख्या में यह समझ आता है कि यह न केवल व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करता है, बल्कि समग्र समाज और विश्व को भी प्रभावित करता है।

3.1 सामाजिक संघर्ष

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसके क्रिया कलाप समाजानुमोदित होते हैं। व्यक्तिगत होते हुए भी उसकी समस्त क्रियाओं का व्यापार क्षेत्र समाज ही होता है। साधारण अर्थ में हम व्यक्तियों के समूह को समाज मान लेते हैं। डॉ. मोहनलाल रत्नाकर-भारतीय समाज में सामाजिक संघर्ष को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं- "सामाजिक दूरी से ऊंची स्थिति वाला वर्ग, नीची स्थिति वाले वर्ग को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। उसमें कुछ पूर्वाग्रह हो जाता है और यह पूर्वाग्रह संघर्ष को जन्म देता है।"[1]

सामाजिक संघर्ष दो या दो से अधिक राज्यों में अथवा दो या दो से अधिक विचारधाराओं में सामाजिक विषयों को लेकर परस्पर विरोध उत्पन्न होने से होता है। इसका स्वरूप युद्ध लड़ाई-झगडे, हिंसा, मार-पीट, वैर-द्वेष की भावना एक-दूसरे को हानि पहुंचाने की भावना, क्रोध, बातचीत एवं कई बार शांतिपूर्ण ढंग से समझौते आदि हो सकते हैं। जब समाज में रहते हुए व्यक्तियों या समूह के मध्य जब किसी विषय पर समझौते की सभी संभावनाएं समाप्त हो जाती हैं और व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को हानि या चोट पहुंचाकर अपने स्वार्थों, हितों को सिद्ध करने का प्रयास करते हैं और नियंत्रण के साधन व्यक्ति को नियन्त्रित नहीं कर पाते हैं तब समाज में संघर्ष की प्रक्रिया शुरू हो जाती है।

भारतीय समाज में जातिवाद एवं सांप्रदायिकता ने कई भयानक संघर्षों को जन्म दिया। सांप्रदायिक झगडों में भी रक्तपात का नंगा नाच होता है। गांव हो या शहर सांप्रदायिकता की आग की लपटों के घेरे में है। यहां तक कि बच्चों तक का कत्लेआम दिन दहाडे किया जाता है। नारियों की अस्मत से खिलाड किया जाता है। यहां तक कि बलात्कार जैसे कुकृत्य भी सांप्रदायिकता की आड़ में किया जाता है। भाषावाद के कारण पंजाब और दक्षिण भारत में संघर्ष हो चुके हैं। डॉ. नगेन्द्र इस पर चिंतन करते हुए कहते हैं, "समाज से अभिप्राय सामुदायिक जीवन की ऐसी अनवरत एक नियामक व्यवस्था से है, जिसका निर्माण व्यक्ति पारस्परिक हित तथा सुरक्षा के लिए निर्मित कर लेता है किन्तु विकास के साथ वह क्रमशः जटिल होकर वर्ण- व्यवस्था में परिणत हो जाता है।"[2] आज भी ग्रामीण परिवेश में उक्त संघर्ष चरम पर है। आज भी अछूतों, दलितों को जिन्दा जलाने

की घटना होती रहती है। मिर्चपुर कांड इसका ज्वलंत उदाहरण है। इसी प्रकार हिन्दु-मुस्लिम में धर्म के नाम पर संघर्ष चलता है। एक प्रदेश का निवासी दूसरे प्रदेश के निवासी के साथ भेदभाव करता है।

3.1.1 छुआछूत

प्राचीन काल से दलितों को अस्पृश्य माना गया है। दलितों को सार्वजनिक कुएँ, तालाब से पानी लेना, पीना मना था, जबकि उस तालाब से जानवर तक पानी पीते थे। सवर्णों के घर के अंदर तो दूर, उनके मुहल्लों में चलने के लिए भी पाबंदी थी। भारतीय संविधान के अनुसार यह अस्पृश्यता नष्ट की गई। परंतु आज भी हमारे देश में छुआछूत की भावना कायम है।

'संघर्ष' कहानी में शंकर नाम का एक दलित लड़का है। जो बहुत जिद्दी और साहसी है। उसकी नानी गांव में जूठन उठाने का काम करती है, और शंकर अक्सर नानी के पीछे-पीछे गांव में चलता है। अपनी जिद्दी स्वभाव के कारण, वह जानबूझकर उच्च जाति के लोगों या उनकी वस्तुओं को छूता है। इससे उच्च जाति के लोग शंकर को अपमानजनक बातें कहते हुए भगाते हैं। वे उसे "कुत्ता" और "सुअर" जैसे अपमानजनक शब्दों से बुलाते हैं और उसे डंडे से मारने के लिए दौड़ाते हैं और कहते हैं- "अरे... अरे, हट... हट, चल भाग... छूत कर रहा है।... पाजी कहीं का...कुत्त... सुअर...."[3] इस प्रकार, कहानी में छुआछूत भेदभाव की संघर्ष के गंभीर पहलू को दर्शाया गया है।

'सिलिया' कहानी में मालती एक दलित लड़की है, जिसे बहुत प्यास लगती है और वह कुएं से पानी निकालकर पीने का प्रयास करती है। लेकिन कुएं के पास रहने वाली बकरीवाली उसे और उसकी माँ को बुरी तरह डांटती है। वह चिल्लाकर सारा मोहल्ला इकट्ठा करती है और कहती हैं – "अरी बाई, दौड़ो री, जा मोड़ी को समझाओ, देखो तो मना करने के बाद भी कुएँ से पानी भर रही है हमारी रस्सी बाल्टी खराब कर दई जाने...."[4] इस घटना से कहानी में सामाजिक भेदभाव

और जातिगत अन्याय की समस्या को उजागर किया गया है। मालती को पानी भरने के अधिकार से वंचित किया जाता है और उसे उच्च जाति के लोगों के गुस्से का सामना करना पड़ता है। बकरीवाली का व्यवहार उसकी असहिष्णुता और जातिगत पूर्वाग्रह को दर्शाता है, जबकि मालती की प्यास और पानी भरने की आवश्यकता उसकी बुनियादी ज़रूरतों को दर्शाती है। कहानी के इस हिस्से में दलितों के प्रति समाज की भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण और उनके अधिकारों के हनन की गंभीरता को चित्रित किया गया है। इससे छुआछूत का संघर्ष चित्रित होता है।

'बदला' कहानी में कल्लू ने अपने उच्च जाति के सहपाठियों की पिटाई की, जिससे उनके काकां और उनके भाई नाराज हो गए। वे कल्लू के घरवालों को गालियाँ देते हैं और धमकी देते हैं कि वे कल्लू को बाहर निकालें ताकि वे उसका भुर्ता बना दें। वे यह सवाल उठाते हैं कि कल्लू ने उनके लड़कों पर हाथ उठाने की हिम्मत कैसे की। वे कल्लू और उसके परिवार को उनकी जात और औकात याद दिलाने की कोशिश करते हैं। उच्च जाति के सहपाठी के काका और उनके भाई आकर कल्लू के घरवालों को बहुत भला बुरा कहते हैं – "छौआ डोकरी, अपने नाती को बाहर निकाला हम अभी उसका भुर्ता बना देंगे...। हमारे लड़कों पर हाथ उठाने की उसने हिम्मत कैसे की?... क्या तुम अपनी जात और औकात भूल गये...?"[5] इस घटना से कहानी में जातिगत भेदभाव, उत्पीड़न, और ऊँची जाति के लोगों के अधिकार को चुनौती देने पर दलितों को किस तरह प्रताड़ित किया जाता है, यह दर्शाया गया है।

'जरा समझो' कहानी में खेमचंद एक चपरासी है, जो ऑफिस में काम करता है। जब वह ऑफिस के स्टाफ को पानी देने जाता है, तो ऑफिस की महाराष्ट्रीयन स्वर्ण महिला कर्मचारी और पदाधिकारी अक्सर उससे पूछती हैं "खेमचंद ठीक से हाथ धोये थे न? गिलास को अच्छे से धोया था न?"[6] इस प्रश्न से कहानी में जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता की समस्या उजागर होती है। खेमचंद दलित होने के कारण, उसे स्वर्ण जाति की महिलाएं संदेह की नजर से देखती हैं और उसकी सफाई पर शक करती हैं। यह दर्शाता है कि समाज में किस प्रकार जातिगत

पूर्वाग्रह और भेदभाव और छूआछूत की भावना अब भी मौजूद हैं और कैसे वे दलितों को छोटे कार्यों के माध्यम से भी अपमानित करते हैं।

3.1.2 जातिभेद

यद्यपि आज यह नहीं कहा जा सकता कि समाज से जातिभेद की भावना पूरी तरह से मिट गई है। आज भी जातिवाद के बंधन काफी सदृढ़ हैं। जाति-पाँति या वर्णव्यवस्था को जन्म के आधार पर स्वीकार नहीं करना चाहिए, क्योकि मनुष्य मात्र की एक ही जाति है। गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार ही मनुष्य उंच-नीच होता है। अतः मनुष्य को अपने कर्म अच्छे बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। परंतु जाति का प्रभाव इतना व्यापक और गहरा है कि समाज में व्यक्ति की पहचान उसके गुण, कर्म, योग्यता या व्यवसाय से न होकर उसकी जाति से होती हैं। आज भी हर जगह, हर स्तर पर किसी-न-किसी रूप में जातीयता विद्यमान है। सुशीला टाकभौरे के कहानियों में जाति भेद को लेकर संघर्ष दिखाई देता है।

'जन्मदिन' कहानी में मास्टर जी का व्यवहार जातिगत भेदभाव और अन्याय का उदाहरण है। जब सवर्ण बच्चों की गलती होती है, तो मास्टर जी उन्हें प्यार से समझाते हैं, लेकिन जब दलित बच्चों की गलती होती है, तो मास्टर जी उन पर गुस्सा करते हैं और बेरोक-टोक मारते- पीटते हैं। मास्टर जी दलित बच्चों को गालियाँ देते हैं और उनका पीछा करते हैं, जिससे बच्चे स्कूल छोड़ने तक उनसे परेशान रहते हैं। वे इन बच्चों को जातिबोधक नाम जैसे "भंगी की औलाद"[7] कहकर उनका अपमान करते हैं, जो उनकी जातीय पहचान को नीचा दिखाने का एक रूप है।

'सिलिया' कहानी में सि सिलिया अपनी सहेली हेमलता के साथ उसकी बड़ी बहन के घर जाती है। जब हेमलता के बहन की सास सिलिया से उसकी जाति पूछती है और उसकी जाति का नाम सुनती है, तो वह चौंक जाती है। "पानी का गिलास लेकर अंदर चली गई मौसी जानती थी उसे प्यास लगी है फिर भी जाति का नाम सुनकर वह पानी का गिलास वापस ले गई थी।"[8] हाथ में

पानी का गिलास होते हुए भी वह सिलिया को पानी नहीं देती है, क्योंकि सिलिया दलित जाति से है। यह घटना कहानी में जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता को उजागर करती है। बहन की सास का सिलिया के प्रति व्यवहार उसकी जातीय पहचान के आधार पर उसे अपमानित करता है और उसे बुनियादी ज़रूरतों से वंचित करता है।

'धूप से भी बड़ा' कहानी में रमा उच्च वर्ण, संपन्न तथा बड़े घर की बेटी है। सुनील पिछड़े वर्ग का डॉक्टर है। वह रोमा से बहुत प्रेम करता है। परंतु रोमा उसके प्रेम को स्वीकार नहीं करती है। वह सुनील को शूद्र और परंपरावादी मानती है। राम उसे सुनते हुए जोर से कहती- "हंसों के बीच रहने से कौवा हंस नहीं कहलाता। पैरों की जूती पैरों में ही रहती है, सिर पर नहीं रखी जाती।"[9] इस तरह के जातिवादी विचारों के कारण वह सुनील के गुणों को समझ नहीं सकती है। इस प्रकार से हमें इस कहानी में जातिवाद का संघर्ष मिलता है।

'दमदार' कहानी में सुमन और जग्गू पहलवान के बीच का संवाद जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता की समस्या को दर्शाता है। जब सुमन ने जग्गू पहलवान को उल्टा जवाब दिया, तो जग्गू पहलवान गुस्से में आ गया और सुमन को अपमानित करने के लिए उसकी जातीय पहचान पर हमला किया। उसने सुमन को "कंजरी" कहकर पुकारा और उसकी जाति पर कटाक्ष करते हुए कहा कि "तू ठीक करेगी?... कंजरी... तू है ही कंजरी, तुमको कोई शर्म नहीं है। नीची जाति के लोग नीचे ही रहते हैं-"[10] जग्गू पहलवान का यह व्यवहार उसकी जातिगत पूर्वाग्रहों और उच्च जाति के लोगों की श्रेष्ठता की मानसिकता को दर्शाता है। वह सुमन की पहचान और आत्मसम्मान पर हमला करता है, जो जातिगत भेदभाव और उत्पीड़न की एक सामान्य प्रवृत्ति है। यह घटना सुमन के लिए अपमानजनक है और उसकी सामाजिक स्थिति को कमजोर करती है।

3.1.3 शोषण

दलितों के ऊपर सदियों से अन्याय-अत्याचार होते आ रहे हैं। आज भी यह समाज अन्याय, शोषण, दुख, पीड़ा और वेदना की चक्की में पिस रहा है, क्योंकि आज भी जातिवादी भावना की जड़े मजबूत हैं। सवर्ण लोग उनको अपने समान न मानकर वर्णभेद को किसी-न-किसी रूप में बनाए रखना चाहते हैं। दलित समाज के लोग सवर्ण समाज के मोहल्ले में नहीं रह सकते, उनसे कोई व्यवहार नहीं कर सकते। वे जातीय बंधन में जखड़े हुए होते हैं। इस समाज के लोगों के व्यवसाय की ओर भी उपेक्षा से देखा जाता है। ये लोग निम्न स्तर का काम करने में बुराई नहीं मानते। बस बाप- वादा करते हैं, इसलिए हम भी कर रहे हैं, यह विचार पद्धति उन्हें अधिक सोचने नहीं देती है। ये लोग इसी रोजगार से चिपके रहते हैं।

'बदला' कहानी में दलितों का शोषण और उत्पीड़न स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जब उच्च जाति के लोग कल्लू के खिलाफ हिंसा पर उतारू हो जाते हैं। छौआ माँ दौड़ती, चिल्लाती आई- "अरे दौड़ो रे... अरे बचाओ रे... अरे मेरे कल्लू को बचाओ रे... अरे मेरे कल्लू को मार डालो रे... पापियों ने... मेरे कल्लू को... मार डालो रे..." हाँफती, चिल्लाती आते ही छौआ माँ कल्लू के ऊपर झुककर आंधी हो गई। लाठी वाले हाथ रुक गए। वे बोले- "छौआ माँ, तू हट जा। हमारे बीच में मत आ, नहीं तो ठीक नहीं होगा..."[11] यह उनके जातिगत पूर्वाग्रहों और शक्ति के दुरुपयोग को दर्शाता है, जिससे दलित लोगों को प्रताड़ित किया जाता है। यह कहानी समाज में जातिगत असमानता और दलितों के संघर्ष की वास्तविकता को उजागर करती है। उच्च जाति के लोग अपने अधिकारों और विशेषाधिकारों का उपयोग करके दलितों पर अत्याचार करते हैं, जिससे दलितों को शारीरिक और मानसिक रूप से पीड़ा होती है।

3.1.4 व्यसनाधीनता

व्यसनाधीनता दलित वर्ग की सबसे बड़ी कमजोरी है। इसका शिकार होकर वे न केवल सवर्णों की सतत गुलामी में रहते हैं बल्कि स्त्रियों, बच्चों पर अन्याय भी करते हैं। अपनी दिनभर की कमाई शराब में उड़ाते हैं। शराब की लत तथा आपसी झगड़ा इस समाज की सबसे बड़ी खराबी है। इस समाज को सुधारना है तो इन लोगों को नशाखोरी से अलग करना होगा। इन सब बुराइयों को छोड़कर ही समाज आगे बढ़ेगा।

सुशीला टाकभौरे की कहानियों में व्यसनाधीनता का संघर्ष इस प्रकार मिलता है।

'धूप से भी बड़ा' कहानी में व्यसनाधीनता के संघर्ष का चित्रण एक गंभीर और दुखद पहलू के रूप में प्रस्तुत किया गया है। रोमा और बंटी का प्रेम विवाह खुशी से आरंभ होता है, लेकिन जल्दी ही बंटी की शराब की आदत उनकी शादी और गृहस्थी को प्रभावित करने लगती है। शराब की लत के चलते बंटी रोमा के साथ दुर्व्यवहार करने लगता है, उसे गालियाँ देता है, मारपीट करता है, और घर देर से या कभी-कभी रात भर नहीं आता है। व्यसनाधीनता के कारण बंटी की नशीली आदतें उसकी पूरी जीवनशैली को प्रभावित करती हैं। यह स्थिति उसकी व्यक्तिगत और वैवाहिक जीवन को प्रभावित करती है। व्यसनाधीनता की वजह से बंटी की जिम्मेदारियाँ कम हो जाती हैं, जिससे उनका पारिवारिक जीवन मुश्किलों से घिर जाता है। कहानी इस तरह के कठिनाइयों का चित्रण करती है, जिससे पाठक व्यसनाधीनता के विनाशकारी प्रभावों को समझ सकते हैं और यह देखने में सक्षम होते हैं कि कैसे एक परिवार पर इसका असर पड़ता है।

3.1.5 आत्मविश्वास की कमी

दलित समाज के लोगों में आत्मविश्वास की कमी दिखाई देती है। इसी कारण वे हमेशा स्वयं को निम्न और हीन मानते हैं। इन लोगों में आत्मविश्वास तथा विचारों में परिवर्तन होना जरूरी है।

सुशीला टाकभौरे की कहानियों में आत्मविश्वास की कमी यह इन कहानियों में दिखाई देता है।

'सिलिया' कहानी में कहानी 'सिलिया' में आत्मविश्वास की कमी का संघर्ष मुख्य किरदार के माध्यम से दर्शाया गया है। जब सिलिया बकरीवाली बाई द्वारा मालती को सार्वजनिक कुएँ का पानी पीने के कारण डांटे जाते और उसकी माँ मालती को मारा जाता देखती है, तो वह स्थिति उसे परेशान करती है। हालांकि, सिलिया संकोच के कारण उस स्थिति में हस्तक्षेप नहीं कर पाती है और चुपचाप सहन करती है। यह आत्मविश्वास की कमी के संघर्ष को दर्शाता है। सिलिया की स्थिति से यह समझ आता है कि उसके पास उस समय हस्तक्षेप करने की हिम्मत नहीं है। वह इस तरह की कठिन परिस्थितियों में खुद को असहाय महसूस करती है और दूसरों की मदद करने में असमर्थ रहती है। कहानी में आत्मविश्वास की कमी के इस संघर्ष को दिखाकर लेखक ने पाठकों को यह सोचने पर मजबूर किया है कि सामाजिक दबाव और संकोच के कारण कितने लोग अन्याय और अनुचित व्यवहार के खिलाफ आवाज उठाने में असमर्थ हो जाते हैं।

'दमदार' कहानी में जग्गू पहलवान लड़की का हाथ पकड़ कर खींच कर सड़क तक ले आता है यह बात पूरे गांव में फैल जाती है। कई दिनों तक लड़की स्कूल नहीं गई। लड़की के माँ- बाप रिश्तेदारों के घर नहीं गए। शादी-ब्याह, जन्मदिन जैसे-सामाजिक समारोहों में नहीं गए। उन्हें इस बात की लज्जा लगती थी कि उनकी बेटी के कारण, गाँव में उनकी इज्जत चली गई, मगर वे जग्गू पहलवान को कुछ नहीं कह सके, उसका बाल भी बाँका नहीं कर सके।"[12] इस घटना के परिणामस्वरूप लड़की के माँ-बाप और परिवार को भारी लज्जा का सामना करना पड़ता है। लड़की के माता-पिता और परिवार की आत्मविश्वास की कमी इस बात से जाहिर होती है कि वे जग्गू पहलवान के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं कर पाते हैं। उन्हें इस बात का डर होता है कि उनकी बेटी के कारण गाँव में उनकी प्रतिष्ठा प्रभावित हुई है, और वे जग्गू पहलवान से टकराने की हिम्मत नहीं जुटा पाते हैं।

3.1.6 नारी उत्पीड़न

यह मानवाधिकार समस्या है जो समाज में असमानता और न्याय की कमी को दर्शाती है। बिना किसी आधिकारिक अनुमति के नारी को भला-बुरा कहना या उसे अपमानित करना, उसके विचारों और भावनाओं को अनदेखा करना, उसके साथ व्यक्तिगत या सामाजिक रूप से उत्पीड़न करना, और उसे न्यायाधीशों और कानूनी प्रक्रियाओं से वंचित करना, इस समस्या का हिस्सा है।

'छौआ माँ' कहानी में छौआ माँ जचकी का काम करती है। एक दिन जब छौआ माँ घर पर नहीं थी तब उसकी बेटी को यह काम जबरदस्ती करने के लिए कहा इसी बात पर छौआ मॉ ने उच्च जाति के लोगों के ऊपर सवाल उठाए तब लोगों ने व्यंग्य के साथ कहा- "कैसे नहीं करेगी वा ये काम? तेरी मोड़ी का बामन-बनिया की छोरी है?"[13] जातिगत भेदभाव और जाति के आधार पर उत्पीड़न को स्पष्ट करता है। इससे यह दिखाया जाता है कि कैसे समाज में उच्च जातियों के लोग निचली जातियों के लोगों पर अधिकार जताते हैं और उन्हें निम्न दर्जे के काम करने के लिए मजबूर करते हैं। यह नारी उत्पीड़न की समस्या को दर्शाता है, जिसमें महिलाओं को न केवल उनकी जाति, बल्कि उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और सामाजिक स्थिति के आधार पर भेदभाव का सामना करना पड़ता है।

'दमदार' कहानी में सुमन कंजर जाति की महिला है। सुमन कंजर जाति की महिला है और उसकी जाति की पहचान के कारण उसे अन्य जातियों की महिलाओं द्वारा तिरस्कार और उपहास का सामना करना पड़ता है। भंगी जाति की महिलाएँ उसके बच्चे के रंग-रूप को लेकर मजाक करती हैं और पूछती हैं कि बच्चा किसके जैसा दिखता है। इस प्रकार के भेदभाव और उत्पीड़न का सामना सुमन को उसकी जाति और सामाजिक स्तर के कारण करना पड़ता है। यह घटना नारी उत्पीड़न की व्यापक समस्या को उजागर करती है, जिसमें महिलाएं अपनी पहचान, जाति, और सामाजिक स्तर के आधार पर भेदभाव का शिकार होती हैं। कई बार भंगी जाति की महिलाएं

उसके बच्चे को देखकर मजाक के लहजे में पूछती – "कौन के जैसे दिखे हैं... भंडारी के जैसे?... नहीं, ये तो रामरतन ढाई दिखे है?..."[14]

सुशीला टाकभौरे आधुनिक युग की लेखिका हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में दलितों पर होनेवाले अन्याय और अत्याचार को वाणी देने का प्रयास किया है। सुशीला जी स्वयं दलित होने के कारण दलितों का दुख, दर्द, पीड़ा और वेदना को उन्होने स्वयं महसूस किया है। इसीलिए उन्होने अपनी कहानियों में दलितों की पीड़ा, वेदना का चित्रण किया है। उन्होंने दलित संघर्षों के अंतर्गत छुआछूत, अशिक्षा, शोषण एवं जातिभेद नारी संघर्षों को भी उठाया है।

3.2 आर्थिक संघर्ष

सामाजिक व्यवस्था में अर्थ एक महत्वपूर्ण घटक है और आर्थिक स्थितियों के बिना यह पल्लवित पुष्पित नहीं हो सकता। अर्थमूलक संघर्ष चेतना का सामाजिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे समाज की आम धारणा है कि धनवान ही समाज, परिवार, राष्ट्र, देश, विदेश में उच्च स्थान रखता है। गरीब हमेशा धनपतियों के गुलाम रहते आए हैं। आर्थिक क्षमताओं के आधार पर ही मनुष्य का संतुलित विकास संभव है। वास्तविकता यह है कि आज के समाज में मनुष्य का जीवन अर्थ से ही संचालित होने लगा है।

आर्थिक संघर्ष से हमारा अभिप्राय उस संघर्ष से होता है जिसमें व्यक्ति जीवन की संघर्ष चेतना का अध्ययन उसकी आर्थिक क्षमताओं के आधार पर किया जाता है। व्यक्ति जीविकोपार्जन के लिए तरह-तरह के कार्य में रत है। हमेशा से धनपतियों गुलाम रहते आए हमारा समाज दो वर्गों में विभक्त है जो आर्थिक संघर्ष से संबंधित है। उच्च वर्ग व निम्न वर्ग (धनी और निर्धन) रूपों में देख सकते हैं। जमींदार किसान, मालिक मजदूर, सरकारी कर्मचारी आम आदमी। प्राचीन काल से महाजन निर्धन, मजदूर का शोषण करता रहा है। जब शोषण इतना बढ़ जाता है कि निम्न वर्ग का सांस लेना दूभर हो जाए तो शोषत वर्ग विद्रोह कर उठता है। इस प्रकार आर्थिक संघर्ष का

उदय होता है। हमारे राष्ट्र में आर्थिक विषमता आवश्यकता से अधिक है। एक वर्ग के पास अपार, अकूत धन-सम्पदा है तो दूसरी और अथाह गरीबी। एक वर्ग के पास ऐशो-आराम की भव्यता दूसरे के पास मूलभूत आवश्यताओं (रोटी, कपड़ा, मकान) भी मयस्सर नहीं। निर्धन वर्ग के पास पैसों की कमी से हजारों परेशानियां, धनी वर्ग के पास धन के भण्डारों की सुरक्षा की चिंता। एक तरफ निर्धन व्यक्ति अपने बच्चों की जरूरतों को पूरा न कर पाने के कारण चिंतित व उच्च शिक्षा दिलवाने में असमर्थता के कारण दुखी, दूसरी ओर धनी वर्ग के पास पैसों का बोलबाला। इस प्रकार की आर्थिक विषमता व आर्थिक विपिन्नता कई अपराधों को बढ़ावा देती है। निर्धन व्यक्ति ऋण के बोझ तले दबकर अपनी ऋण मुक्ति का उचित मार्ग न सूझने पर अपने बच्चों व पत्नी की हत्या तक करता है। क्योंकि उसके पास सुविधा जुटाने का पैसा नहीं है। वह चोरी, डकैती, लूटपाट, तस्करी, गुण्डागर्दी, हत्या, आत्महत्या करने पर अमादा हो जाता है। यह आर्थिक सघर्ष ही हमारे समाज की बड़ी-बड़ी समस्याओं का कारण बनता है। इस संघर्ष का रूप और दिशा इतनी होती है कि इसे सीमा में नहीं बांधा जा सकता। यदि शोषक वर्ग नहीं होगा तो हमारे समाज में समानता होगी, आर्थिक विषमता की खाई पाट देने से हमारे समाज में सभी सुख-चैन से जीवन बसर कर पाएंगे।

सुशीला टाकभौरे की कहानियों में आर्थिक संघर्ष इस प्रकार मिलता है।

3.2.1 आर्थिक विपन्नता

समाज में अर्थ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। परिवार में जो संघर्ष होते हैं, वे अधिकतर आर्थिक विपन्नता के कारण ही होते हैं। किसी भी अर्थव्यवस्था का परिदृश्य मुख्यतः आर्थिक कारणों से ही संचालित होता है। अर्थ और अर्थव्यवस्था द्वारा ही समाज के व्यवहार, संबंध, रिश्ते आदि सभी कुछ निर्धारित होते हैं। आर्थिक दृष्टि से असमानता के कारण कोई अमीर तो कोई गरीब दिखाई देता है। आधुनिक युग में कुछ लेखकों ने आर्थिक समस्या को केंद्र मानकर रचनाएँ की हैं। आर्थिक समस्या के अंतर्गत उच्च, मध्य तथा निम्न वर्ग की आर्थिक स्थिति को लिया जाता

है। उसके साथ-साथ बेकारी की समस्या, गरीबी आदि का भी अंतर्भाव होता है। लेखिका ने अपने साहित्य – सृजन के लिए मुख्य रूप से निम्न वर्ग को अपनाया है। उनकी कहानियों में निम्न वर्ग की आर्थिक कठिनाइयाँ और उससे उत्पन्न समस्याओं का यथार्थ चित्रण हुआ है।

'नयी राह की खोज' कहानी में रामचंद का बेटा लालचंद अंग्रेजी कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ता है। अंग्रेजी की चौथी कक्षा पास करता है। परंतु स्वार्थ बढ़ने के कारण महंगी किताब-कापिया, स्कूल की फीस, ट्यूशन की फीस आदि का खर्चा घरवाले उठा नहीं पाते हैं। माँ कहती- "और भी तो बच्चे हैं अपने, क्या उन्हें जहर दे दे? आगे की कठिन पढ़ाई है, हिन्दी में ही पढ़ लेगा।"[15]

दादा कहते- "कारपोरेशन की स्कूल में डाल दो, कितना पैसा खर्च करोगे? पैसे वालों की बात अलग है, हम ठहरे गरीब मजदूर। हमारे बीच से भी कभी कोई सॉब बना हैं?"[16]

दादी कहती हैं "अरे, आगे चलकर तो बाप का काम ही करना है। क्या जरूरत है अंग्रेजी पढ़ाई लिखाई की। साँब बाबू की नौकरी हम लोगों के नसीब में कहाँ होती है?।[17]

3.2.2 <u>कर्जदारी</u>

दलित समाज के लोगों के लिए कर्ज और गहने गिरवी रखना एक गंभीर समस्या है। जो उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को और भी कठिन बना देती है। अक्सर वे इसके कारण बड़े ऋणों के बोझ तले दबे रहते हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति और आत्मविश्वास पर बुरा असर पड़ता है। इससे वे समाज में उचित सम्मान और समानता का हक हासिल करने में परेशानी महसूस करते हैं। साथ ही, गहनों के गिरवी रखने से उनकी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता पर भी असर पड़ता है। इस समस्या का समाधान केवल आर्थिक सहायता के माध्यम से ही नहीं, बल्कि शिक्षा, रोजगार, और उचित समाजिक संरचना के माध्यम से भी किया जाना चाहिए।

'नयी राह की खोज' कहानी में रामचंद का बेटा लालचंद अंग्रेजी कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ता है। अंग्रेजी की चार कक्षा पास होता है। परंतु स्वार्थ बढ़ने के कारण महंगी किताब-कापिया, स्कूल

की फीस, ट्यूशन की फीस आदि का खर्चा घरवाले उठा नहीं पाते हैं। "कभी कर्ज लेकर और कभी कोई गहना गिरवी रखकर लालचंद को अंग्रेजी की चार क्लास पास करवायी गयी।"[18] लालचंद की शिक्षा के खर्चों को वहन करने के लिए रामचंद को कभी कर्ज लेना पड़ता है, तो कभी गहने गिरवी रखने पड़ते हैं। यह कर्जदारी की समस्या को उजागर करता है, जिसमें एक परिवार को अपने बच्चे की शिक्षा के लिए वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कहानी से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा की महंगी लागत के कारण कई परिवारों को कर्ज में डूबने की समस्या का सामना करना पड़ता है। इससे परिवार की आर्थिक स्थिति और जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। कर्जदारी की समस्या के समाधान के लिए शिक्षा प्रणाली में सुधार और आर्थिक सहायता की आवश्यकता है, जिससे सभी बच्चों को समान रूप से शिक्षा का अधिकार मिल सके।

3.2.3 अशिक्षा

शताब्दियों से दलितों के पिछड़ेपन का कारण उनका अशिक्षित होना है। इस समाज में आज भी शिक्षा की कमी महसूस होती है। शिक्षा के अभाव के कारण वे न कभी अपने अधिकारों को समझ सकें, न उनकी प्राप्ति के लिए आवाज उठा सकें। न ही वे अपने शोषण के कारणों की पड़ताल कर सके और न उससे मुक्ति पाने के लिए संघर्ष कर सके। शोषण का आधार क्या है यह जाने बिना संघर्ष नहीं किया जा सकता। यह ज्ञान शिक्षा से ही प्राप्त हो सकता है। जीवन की लड़ाई को लड़ने के लिए शिक्षा ही सबसे ज्यादा शक्तिशाली अस्त्र है। ये लोग अपने बच्चों के बारे में गंभीरता से सोचते नहीं हैं। अतः बच्चे होशियार और बुद्धिमान होकर भी कुछ नहीं कर पाते। शिक्षा की कमी और गरीबी एक-दूसरे के साथ गहरा संबंध रखती हैं। गरीबी के कारण दलितों के पास विद्या प्राप्ति के लिए उपयुक्त संसाधनों की कमी होती है, जिससे उन्हें शिक्षा का अधिकार प्राप्त करने में परेशानी होती है। इसके अलावा, समाज में उन्हें विभिन्न प्रकार की सामाजिक और

मानसिक असमानताओं का सामना करना पड़ता है, जो उनकी शिक्षा और सामाजिक उत्थान में अवरोध का कारण बनते हैं।

‘नयी राह की खोज’ कहानी में रामचंद अनपढ़ है। वह अपने बेटे लालचंद को अंग्रेजी कॉन्वेंट स्कूल में भेजता है। मगर घर में सभी अनपढ़ होने के कारण उसका आगे विकास नहीं हो पाता है। परिणाम स्वरूप उसे पाँचवी कक्षा से फिर कारपोरेशन की हिंदी प्रायमरी स्कूल में दाखिल किया जाता है। उसे हिंदी अच्छी तरह से न आने के कारण वह स्कूल से भागने लगता है। अतः वह मैट्रिक भी नहीं कर पाता। घर में सभी कहते हैं “अरे आगे चलकर तो बाप का ही काम करना है। क्या जरूरत है अंग्रेजी पढ़ाई लिखाई की। साँब बाबू की नौकरी हम लोगों के नशीब ने कहाँ होती है।”[19]

इस प्रकार अछूत बच्चों की पढ़ाई अधूरी रहती है। घर का वातावरण और अर्थाभाव इन बच्चों को आगे पढ़ने नहीं देते हैं। अतः इन लोगों को शिक्षा के माध्यम से अन्याय और असमानता के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रोत्साहित करना मुश्किल है। उनके जीवन के भविष्य पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। घर का अस्थिर वातावरण, आर्थिक तंगी, और सामाजिक भेदभाव के कारण ये बच्चे अपनी पढ़ाई को पूरा नहीं कर पाते हैं। इस कारण वे शिक्षा के माध्यम से अन्याय और असमानता के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित नहीं हो पाते हैं।

3.3 राजनीतिक संघर्ष

राजनीति मूलतः सत्ता विमर्श है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सत्ता की व्यापत्ति होती है। यह व्याप्ति कई बार दृश्य होती है, तो कई बार अदृश्य भी रहती है। दृश्य हो या अदृश्य, किंतु सत्ता की उपस्थिति वहां जरूर है। तात्पर्य यह है कि सत्ता राजनीति का केन्द्रीय विधान है। ‘राजनीति में तीन प्रकार के तंत्र समाहित है. राजतंत्र, कुलीनतंत्र व प्रजातंत्र। राजतंत्र में राजा के बाद उसका पुत्र उसके राज्य का उत्तराधिकारी होता है चाहे वह योग्य हो या अयोग्य। कुलीन तंत्र में कुलीन

घरानों तक ही सत्ता सीमित रहती है। प्रजातंत्र में प्रजा के बीच से प्रतिनिधि चुनकर प्रजा अपने लिए शासक तैयार करती है और उससे असंतुष्ट होने पर अगले चुनाव में उसे सत्ता च्युत कर देती है। साम्यवाद या मार्क्सवाद शोषित या मजदूर वर्ग को सत्तासीन करना चाहते हैं। इसी प्रकार राजनीतिक क्षेत्र में इन तन्त्रों और वादों में मतभेदों के कारण संघर्ष होता रहता है। इन्हीं राजनीतिक विचारधाराओं के मतभेदों के कारण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मी मतभेद होता रहता है। इस प्रकार राजनीतिक संघर्ष राज्य शासन, शासक की नीतियों तथा सिद्धान्तों से संघर्षरत घटनाओं, परिस्थितियों, क्रियाओं, विचारों, भावनाओं तथा प्रवृतियों में पारत्परिक विरोध या टकराव होने से अर्थात परस्पर राजनीतिक शक्तियों के टकराने से उद्देश्यों में राजनीतिक संघर्ष छिड़ जाता है। राजनीतिक संघर्ष राज्य, शासक तथा उसकी जनता के मध्य हितों एवं अधिकारों के प्राप्त करना हो सकता है। यह दो राज्यों अथवा शासकों एवं भिन्न राज्यों अथवा शासकों के मध्य अपने अच्छे-बुरे उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उस देश की जनता एवं अन्य पड़ोसी राज्यों एवं स्वयं अपने परिवार से भी राजनीतिक संघर्ष करना पड़ता है। तभी वह अपने अस्तितव को सुचारू रूप से बनाए रख सकता है।

3.3.1 अविश्वास

'कड़वा सच' कहानी में लेखिका को राजनीति के बारे में विश्वास का संघर्ष करना पड़ा। उनके मुंह बोले भाई ने उन्हें राजनीति में आने के लिए उत्साहित किया, जिससे उन्होंने एक रंगीन सपना देखा। उन्होंने अपने भाई पर विश्वास करते हुए उनके साथ कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मुलाकात की, जो उन्हें राजनीति में लाने का आश्वासन दे रहे थे। लेखिका ने शुरुआत में राजनीति में आने की अपनी रुचि और अभिलाषा साझा की और लोगों से मिले आश्वासन पर विश्वास किया। हालांकि, जैसे-जैसे वह विभिन्न राजनेताओं और मंत्री के बंगले पर पहुंची, उन्हें धीरे-धीरे महसूस हुआ कि राजनीति के पीछे की दुनिया उनकी कल्पना से अधिक जटिल और खतरनाक है। जब उन्होंने मंत्री और अन्य राजनेताओं का व्यवहार देखा, जो अनुचित और असम्मानजनक था, तब

उन्हें विश्वास में हानि हुई। “मंत्री महोदय भी पहली भेंट मे, बिना कुछ किए बिना कुछ पद स्थान दिए, मेरे नजदीक से नजदीक आने का प्रयास करते नजर आ रहे थे। वे सब मुझे मगरमच्छ और भेड़िए की तरह लगे। उन्हें देखकर मैं डर गई और भाई साहब से अनुरोध करने लगी अब यहां से लौट चलिए।”[20] उन्हें ऐसा लगा कि उनके भाई ने उन्हें यहां लाकर उनका उपयोग किया है और उनका विश्वासघात किया है। इस अनुभव ने लेखिका को राजनीति के बारे में गहरा अविश्वास और भय महसूस कराया। उन्हें राजनीति एक दलदल की तरह लगी, जिसमें वे फंस सकती थीं। इस संघर्ष ने उनके विश्वास को हिला दिया और उन्हें राजनीति की दुनिया से दूर रहने का फैसला करने के लिए प्रेरित किया।

‘जन्मदिन’ कहानी में अविश्वास का संघर्ष स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। चमार जाति के एक व्यक्ति के मंत्री बनने पर उसकी नई स्थिति और उसके अतीत के बीच एक संघर्ष देखा जा सकता है। वह हरिजन मंत्री, जो कि कांग्रेस पार्टी की ओर से चुना गया था, पार्टी की तारीफ करता था, जिससे उसके अतीत और वर्तमान के बीच एक तनाव महसूस होता है। गांधी जी के “हरिजन” शब्द का उपयोग करने के पीछे का विवाद भी संघर्ष को दर्शाता है। “ उसे समय के अछूत हरिजन नाम पाकर ही बहुत खुश और कृतार्थ हो गए थे उन्हें बहुत बाद में मालूम हुआ की हरिजन शब्द लज्जाजनक है।”[21] हरिजन शब्द को शुरू में उद्धारकारी माना गया, लेकिन बाद में यह लज्जाजनक माना जाने लगा। यह विरोधाभास भी अविश्वास के संघर्ष को दर्शाता है क्योंकि एक ओर लोग गांधी जी को उद्धारकर्ता मानते थे, जबकि दूसरी ओर उनके विचारों पर सवाल उठने लगे। मुन्ना हरिजन के अज्ञानता में रहने की स्थिति भी संघर्ष को स्पष्ट करती है क्योंकि वह अपनी स्थिति और पार्टी की विचारधारा के बीच फंसा हुआ है। जब उसे बाद में सच्चाई का पता चलता है. तो उसे अपने विश्वासों और मान्यताओं को पुनर्विचार करना पड़ता है।

3.3.2 लोकप्रियता केलिए भ्रामक वादे

'जन्मदिन' कहानी में चमार जाति के व्यक्ति के मंत्री बनने से समाज में जातिगत भेदभाव और संघर्ष की समस्याएँ भी उजागर होती हैं। हालांकि, मंत्री ने अपने प्रभाव का उपयोग अपनी जाति के लोगों के लिए सुधार करने में मदद करने के लिए किया, फिर भी उसे भ्रामक वादों के द्वारा लोकप्रियता प्राप्त करनी पड़ी। "उन दिनों अछूत मानी जाने वाली चमार जाति का एक व्यक्ति मंत्री बन गया था वह अपने दौरों पर टेशन और तहसील भी आता था। वह हरिजन मंत्री कांग्रेस पार्टी की ओर से चुनकर आया था, इसलिए हर समय हर जगह अपने हर भाषण में वह कांग्रेस पार्टी और गांधी जी की तारीफ करता था।"[22] इस कहानी में यह दिखाया गया है कि कैसे एक व्यक्ति ने अपनी जाति के लिए सुधार के प्रयास किए, लेकिन भ्रामक वादों और प्रशंसा के माध्यम से लोकप्रियता हासिल करने की कोशिश की, जो अंततः उसकी जाति के लोगों के लिए संघर्ष और असंतोष का कारण बना।

'कड़वा सच' कहानी में, लेखिका ने देखा कि लोग उन्हें राजनीति में प्रवेश दिलाने के लिए आश्वासन दे रहे थे और उन्हें एक महान नेता बनने की उम्मीद दिला रहे थे। "सब ने आश्वासन दिया और विश्वास दिलाया कि वे मुझे जरूर राजनीति में लाएंगे, इतना ही नहीं, बड़ी नेता बनायेंगे।"[23] इन वादों ने उन्हें राजनीति में शामिल होने के लिए उत्साहित किया। हालांकि, इन भ्रामक वादों के पीछे छिपी वास्तविकता उन्हें धीरे-धीरे समझ में आने लगी। उन्हें यह अहसास हुआ कि जिन व्यक्तियों से वे मिल रही थीं, वे सब एक ही तरह के आचरण में शामिल थे, जिसमें अनुचित व्यवहार और अनुचित मांगे शामिल । उनके मुंह बोलै भाई ने भी उनके साथ कुछ असम्मानजनक व्यवहार किया, जिससे लेखिका को लगा कि उन्हें एक तरह से इस्तेमाल किया जा रहा है।

इन कहानियों में, लेखिका को राजनीति में लोकप्रियता के लिए किए गए भ्रामक वादे और अविश्वास असल में सामने आने वाले अनुचित व्यवहार के बीच संघर्ष का सामना करना पड़ा।

यह अनुभव लेखिका को राजनीति की जटिलताओं और वास्तविकताओं के बारे में सचेत करता है।

निष्कर्ष

सुशीला टाकभौरे ने दलित लोगों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संघर्षों की कुछ प्रमुख कठिनाइयों को उजागर किया है। सामाजिक समता तथा प्रगतिशीलता के लिए जाति का ध्वंस करना आवश्यक है। इस जातिभेद की भावना से दलित जनता को मुक्त होना चाहिए। जाति-व्यवस्था के कारण अधिकतर नुकसान दलितों का हुआ है। इसलिए इस व्यवस्था का तीव्र विरोध करना उचित है। सुशीला जी ने दलितों को अन्याय और शोषण के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया है। साथ ही उनमें विश्वास तथा आगे बढ़ने का साहस पैदा करने की कोशिश की है। सुशीला टाकभौरे की कहानियों में आर्थिक संघर्ष एक प्रमुख विषय है, जिसे उन्होंने अपने पात्रों की कहानियों के माध्यम से बारीकी से चित्रित किया है। उनकी कहानियों में निम्न और पिछड़े वर्गों के लोगों की वित्तीय कठिनाइयों, कर्जदारी, शिक्षा की महंगी लागत, और सामाजिक भेदभाव जैसे मुद्दों को दर्शाया गया है। इन कहानियों में आर्थिक तंगी के परिणामस्वरूप परिवारों को अपने बच्चों की शिक्षा के लिए कठिन निर्णय लेने पड़ते हैं। आर्थिक संघर्ष की वजह से पात्रों को अन्याय और असमानता का सामना करना पड़ता है, और वे अपनी स्थिति को सुधारने के लिए पर्याप्त संसाधनों की कमी के कारण असहाय महसूस करते हैं।

लेखिका ने दिखाया है कि दलित लोगों को राजनीति में प्रवेश करने के लिए आकर्षक सपने दिखाए जाते हैं, लेकिन वास्तविकता में उन्हें भ्रामक वादों और अनुचित व्यवहार का सामना करना पड़ता है। लेखिका ने अनुभव किया कि दलित लोगों को राजनीतिक क्षेत्र में अपने अधिकारों और अवसरों के लिए संघर्ष करना पड़ता है। उन्हें उच्च पद और प्रतिष्ठा के वादों से आकर्षित किया जाता है, लेकिन अंततः उनका उपयोग स्वार्थसिद्धि के लिए किया जाता है। उन्होंने दिखाया है कि दलित लोग समाज में अपने अधिकारों और अवसरों के लिए संघर्ष करते

हैं, लेकिन उन्हें बार-बार भ्रामक वादों और अनुचित व्यवहार का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार की कठिनाइयां दलित लोगों के लिए राजनीति और समाज में एक कठिन मार्ग बनाती हैं, जिससे उन्हें अपने अधिकारों के लिए सतर्क रहना पड़ता है।

संदर्भ

1) डॉ मोहनलाल रत्नाकर, हिंदी उपन्यास द्वंद्व एवं संघर्ष, पृ.22
2) डॉ नागेंद्र, साहित्य का समाजशास्त्र, पृ.6
3) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.18
4) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.5
5) टाकभौरे सुशीला, जरा समझो, पृ.36
6) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.51
7) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.36
8) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.30
9) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.98
10) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ. 134
11) टाकभौरे सुशीला, जरा समझो, पृ.42
12) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ. 133
13) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.75
14) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ. 130
15) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.82
16) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.82
17) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.82
18) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.82

19) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.82
20) टाकभौरे सुशीला, जरा समझो, पृ.4
21) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.35
22) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.35
23) टाकभौरे सुशीला, जरा समझो, पृ.49

चतुर्थ अध्याय

सुशीला टाकभौरे की कहानियों की भाषाशैली

4.1 भाषा

सामान्य रूप से भाषा ही भावाभिव्यंजना का माध्यम है। अभिष्ट भाव के व्यक्तिकरण के लिए भाषा का उपयुक्त होना आवश्यक है। कहानी की भाषा का दुरूह होना उसकी भावात्मक प्रवाहशीलता में बाधा उत्पन्न कर देता है। सरल, सहज, मुहावरों और कहावतों से युक्त भाषा कहानी को व्यावहारिकता विश्वसनीयता प्रदान करती है। क्लिष्ट भाषा न केवल कहानी को नीरस बना देती है, बल्कि उससे कहानी की प्रभावात्मकता भी नष्ट हो जाती है। निरर्थक शब्द योजना, अकलात्मक, शब्दाडंबर, दुरूह वाक्य-जाल आदि भी कहानी को भाषा तत्व की दृष्टि से हीन बना देते हैं। गोविन्द त्रिगुणायत भाषा का महत्व बताते हुए कहते हैं "काव्य के भाव तत्व कल्पना तत्व और बुध्दि तत्व का सम्बन्ध तो कवि की आन्तरिक क्रियाओं से होता है। इन आन्तरिक क्रियाओद्वारा निर्मित साध्य रूप के प्रत्यक्ष उपस्थित करने का कार्य भाषा द्वारा ही सम्पन्न होता है। अतः कवि की कल्पना, भावना और विचारों को यथातथ्य रूप में प्रकट करने में ही भाषा की सफलता है।"[1]

कहानी की भाषा में प्रवाहत्मकता, भावात्मकता, आलंकारिकता, तथा चित्रात्मकता आदि गुण विद्यामन मिलते हैं। काव्य की भाँति ही कहानी में भी विभिन्न प्रसंगों के अनुसार कोमल अनुभूतियों, मधुर भावनाओं एवं, विशुद्ध सौंदर्य के मानवीय तथा प्रकृतिचित्र भाषा बद्ध किये जाते हैं इसलिए कहानी की भाषा में भी ये विशेषाताएँ समाविष्ट हो जाती है।

4.1.1 भाषा के विविध रूप

हिंदी कहानी साहित्य में उर्दू, फारसी, आरबी, अंग्रजी, फ्रांसीसी, आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। कहानी की भाषा के विविध रूप इस प्रकार हैं- व्यावहारिक भाषा, उर्दू प्रचूर भाषा, संस्कृत प्रचूर भाषा, लोकभाषा, क्लिष्ठभाषा समन्वित भाषा, आदि भाषा के रूप विद्यमान हैं। अतः भाषा का सर्वाधिक प्रचलित रूप वह है जिसमें विभिन्न भाषाओं की शब्दावलियों का समन्वय मिलता है। इसी का व्यवहार हिंदी कहानी क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक हुआ है।

4.1.2 भाषा का महत्व

कहानी में भाषा तत्व के क्षेत्र में जो वैविध्य मिलता है और विभिन्न कालों में भाषा का जो विकास हुआ है, वह भाषा के महत्व का द्योतक है। इस आधार पर कह सकते है कि, भाषा की उपयुक्तता शब्द-सौंदर्य के सामंजस्य विधान पर आधारित हैं। भाषा का महत्व कहानीयों में अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक सुंदर और समर्थ कथा भाषा का उपयोग करके अपना संदेश प्रस्तुत करती है। भाषा का उपयोग उन विचारों और भावनाओं को समझाने में मदद करता है जो कथा के माध्यम से साझा किए जाते हैं।

उचित भाषा उपयोग से पाठकों को कथा में संबंधितता का अनुभव होता है और वे कथा के मुख्य संदेश को समझ पाते हैं। भाषा के सही चयन से कथा का महत्वपूर्ण हिस्सा बनती है जो पाठकों को संवाद के माध्यम से सहजता से संबोधित करती है।

- **<u>शब्द चयन</u>**

1)उर्दू शब्द

सुशीला टाकभौरे की ‘संघर्ष’ और ‘जरा समझो’ कहानी संग्रह में निम्नलिखित उर्दू शब्दों का प्रयोग हुआ है –

उछलकूद, बरसात, मस्ती, औकात, शिकायत, सिक्का, बिगाड़, चीज, दौड़ते, टॉग, इशारा, कानून, चुनौती, तकलीफ, गुस्सा, जानबूझ, मुक्का, गजब, सड़क, तंग, हैरत, शर्म, तूफान, कोशिश, खर्च, लहंगा, इनसान, पैदा, जूठा, तमाशा, छुट्टी, हिम्मत, खामोश, घबरा, कसम, इंतजार, इन्तजाम, उम्र, नमक, टिकिट, प्यार, अक्सर, मुर्गा, जिंदगी, आग, कमजोर, ताकत, दुश्मन, भ्रम, मुखौटा आदि।

2)अंग्रेजी शब्द

सुशीला टाकभौरे की ‘संघर्ष’ और ‘जरा समझो’ कहानी संग्रह में निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है –

फ्लायवुड, सीलिंग, डेस्क, बेंच, चेलेंज, हेडमास्टर, स्कूल, जेल, ब्लेकबोर्ड, प्रोग्राम, ट्रान्सफर, सर्टिफिकेट, बोर्ड, मीटिंग, बस स्टैंड, सेनेट्री इन्सपेक्टर, कम्पास, होमवर्क, प्लेट, हैण्डल, स्ट्रीट लाइट, हाईस्कूल, फोटो, टूर्नामेंट, कॅप्टन, रिपोर्ट, इंजेक्शन, ग्लूकोज, सेफ्टी ब्लेड, फीस, फ्रेम, एडमीशन, यूनिफोर्म, टाई, ए-बी-सी-डी, वन-टू- थ्री, फर्स्ट स्टेंडर्ड, कॉन्हवेन्ट, ट्यूशन, ग्रेजुएट, बी.ए., एम.ए, टाइपिंग, जेरॉक्स, प्रिंटिंग प्रेस, युनिवर्सिटी, प्रोफेसर, आन्टी, मॉर्निंग वॉक, स्टॉप आदि।

3) पुनरुक्ति शब्द

सुशीला टाकभौरे की 'संघर्ष' और 'जरा समझो' कहानी संग्रह में निम्नलिखित पुनरुक्ति शब्दों का प्रयोग हुआ है –

बार-बार, तड़प-तड़प, छिपी-छिपी, चिख- चिख, कभी-कभी, मार- मार, हिलक- हिलक, गोल-गोल बड़े-बड़े, दूर-दूर, उठा- उठा, घर-घर, देखते- देखते, पीछे- पीछे, कैसी- कैसी, गोल- गोल, संभालते- संभालते, बुरी-बुरी, धीरे-धीरे, देखते-देखते, भागते-भागते, हॉफते-हॉफते, एक-एक, जिन-जिन, दो दो बीच-बीच, तीन-तीन, कोई-कोई, बोलते-बोलते, बड़ी-बड़ी, दल-दल, पीछे-पीछे, सुनते-सुनते, गुपचुप- गुपचुप, खुशी-खुशी, पोर-पोर, अलग-अलग, दल-दल, तरह-तरह, चुपके-चुपके, जोर-जोर आदि।

4) शब्द युग्म

सुशीला टाकभौरे की 'संघर्ष' और 'जरा समझो' कहानी संग्रह में निम्नलिखित शब्द युग्म शब्दों का प्रयोग हुआ है -

आचार-विचार, गांव-बस्ती, पेशाब-पानी, रोता-चिल्लाता, पूडी-मिठाई, धूल-मिट्टी, छिपा-छिपाक, डॉट-डॉटकर, गली-मोहल्लों, कभी-कभी, इधर-उधर, किताब-कॉपी, घर-आंगन, आग-बबूला, उल्टा सीधा, अस्त-व्यस्त, झंगा-झोला, मान-सम्मान, सेठ-साहूकारों, लड़के-लड़कियां, चिखता-चिंघाड़ता, खुसुर-फुसुर, चार-पांच, बड़े- बूढ़े, खाने-पीने, मारा-पीटा, मरने-मारने, मान-मर्यादा, कुचला-मसला, अस्त्र-शस्त्र, मां-बप्पा, सोच-विचार, छुआछूत-भेदभाव, तन-मन, लड्डू-जलेबी, पूडी-पकवान, मटन-बिरयानी, अलग-थलग, कुत्ते-बिल्लियों, निम्न-अपावन, माता-पिता, बेरोक- टोक, मारते-पीटते, दीन-हीन, लिपे-पुते, दक्षिण-पश्चिम, रच-बसकर, मानव-मलमूत्र, मरे-सडे, गन्दे-चिन्दे, चिथड़े-कपडे, सास-ससुर, मिठाई-नमकीन, पढ़े-

लिखे, दुख-दर्द, बड़ो-बुजुर्गों, तर्क-वितर्क, ऐड़ी-चोटी, अंधा-बहरा, उलट-पुलटकर, सूझ-बूझ, मामा- मामी, सीधे-सरल, आस-पास, मन-मस्तिष्क, सम्मान-अपमान, लड़ाई-झगड़ो, हँसी-मजाक, हक्का-बक्का, बहू-बेटीयाँ, चढ़-उतर, त्याग-तपस्या, डॉटना-डपटना, हड्डी- पसली, थाना-कचहरी, लंबे-लफे, भाई-बहन, गिरती-पड़ती, बकरा-बकरीयों, साफ- सफाई, झाडू-पौछा, लीपना-पोतना, तेल-मालिस, उँची-जाती, घर-संसार, रात- विरात, उठ-उठकर, दुबली-पतली, धन-लक्ष्मी, पाव-आधा, गाली-गलौज आदि।

▪ मुहावरे

मुहावरे भाषा का एक विशेष रूप होते हैं, जो साधारणतः एक वाक्यांश के रूप में उपयोग किए जाते हैं। ये वाक्यांश विशेष भाव, विचार, या परिस्थिति को अभिव्यक्त करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। मुहावरे प्रायः अलंकारिक भाषा के रूप में होते हैं और इनका अर्थ वाक्य के सीधे शब्दों से भिन्न होता है। मुहावरे भाषा को समृद्ध और प्रभावशाली बनाते हैं, क्योंकि वे संक्षिप्त रूप में गहरे विचार या अनुभव को व्यक्त कर सकते हैं। ये आमतौर पर लोक संस्कृति, परंपरा, और सामूहिक अनुभवों से उत्पन्न होते हैं, जिससे ये भाषा के महत्व तत्व बन जाते हैं। मुहावरे किसी भी भाषा की विशेषता होते हैं और वे भाषा को अधिक जीवंत, रंगीन, और रोचक बनाते हैं।

सुशीला टाकभौरे की 'संघर्ष' और 'जरा समझो' कहानी संग्रह में निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग हुआ है-

'जन्मदिन' कहानी में इस प्रकार मुहावरा आया है- "सदा दिन गरीबी में रहने वाले जब शहंशाही पर उतरते हैं, तब शहंशाहों के भी शहंशाह बन जाते है, इसके लिए बाद में भले ही भी जिंदगी भर कर्ज भरते रहे उनके हालात सदा दिन वैसी ही रहती है **ढाक के तीन पात।**"[2]

'बदला' कहानी में इस प्रकार मुहावरा आया है- **"अब हम किसी से नहीं डरेंगे।... हम भी ईंट का जवाब पत्थर से देंगे।"**[3]

'संघर्ष' कहानी में मुहावरा इस प्रकार आया है- **"शंकर समझ गया था लातों के भूत बातों से नहीं मानते।** जो काम सौ बार की विनती और मनुहर नहीं कर पाती, वही काम गुस्से का लोहार अपने हथौड़े के भाई से करवा लेता है।"[4]

'धूप से भी बड़ा' कहानी में मुहावरा इस प्रकार आया है- **"राम के पैर भारी हो गए,** वह मां बनने वाली है सबके दिल खुशियों से भर गए।"[5]

'नयी राह की खोज' कहानी में मुहावरा इस प्रकार या है- "घर में सभी के लिए **काला अक्षर भैंस बराबर**।"[6]

▪ आंचलिक भाषा

आंचलिक भाषा किसी विशेष क्षेत्र या स्थान में बोली जाने वाली भाषा होती है। ये भाषा उस क्षेत्र के लोगों द्वारा सामान्य रूप से दैनिक जीवन में उपयोग की जाती है और वहां की संस्कृति, इतिहास, और पहचान से जुड़ी होती है। भारत में कई आंचलिक भाषाएँ हैं, जैसे कि बंगाली, मराठी, तेलुगू, तमिल, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, पंजाबी, गुजराती, असमिया, और हिंदी। आंचलिक भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन महत्वपूर्ण है क्योंकि वे क्षेत्रीय संस्कृति और विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा होती हैं।

'बदला' कहानी में आंचलिक भाषा का प्रयोग इस प्रकार दिखाई देता है- "हओ बेटा, मैं बूढ़ी डोकरी... तुम सबकी सेवा करते करते बूढ़ी हो गई... तुम सबका गूं मूत कियो... तुम सबकी माँ का दाईपनों मैंने कियो, सबसे पहले तुमको मैंने ही देखो, सबसे पहले मैंने ही तुम्हें आसीस दी।

बेटा, मैं तो तुमको अपनी सन्तान जैसे मानूं हैं। सभी को माँ जैसो प्रेम करूँ हूँ। माँ जैसी आशीष देऊँ हूँ...तुम तो बड़े नाराज हो गए बेटा...?"[7]

'छौआ माँ' कहानी में आंचलिक भाषा का प्रयोग इस प्रकार दिखाई देता है- "अरे बाई, दाई माँ के विना काम नहीं होयगो, तू वाहे जल्दी बुलवा दे-"[8]

○ शैली

वर्तमान हिंदी कहानी में इस तत्व को विशिष्ट महत्व प्रदान किया जाता है। शैली का संबंध कहानी के किसी एक तत्व से नहीं वरन् सब तत्वों से हैं और उसकी अच्छाई या बुराई का प्रभाव पूरी कहानी पर पडता है। कला की प्रेषनीयता अर्थात दूसरों को प्रभावित करने की शक्ति शैली पर ही निर्भर करती है। किसी बात के कहने या लिखने के विशेष प्रकार को शैली कहते हैं। इसका संबंध केवल शब्दों से ही नहीं है बल्कि विचार और भावों से भी है। जिज्ञासू, मोहनलाल प्रस्तुत करते है कि, "भाषा और शैली में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। भाषा की सुन्दरता और सशक्तता साहित्य की उच्च अवस्था पर तथा लेखक की योग्यता पर निर्भर है। साहित्य जितना उच्चावस्था में होगा और लेखक जितना योग्य होगा, वह उतनी ही उच्चकोटी की शैली को जन्म दे सकेगा। अतः भाषा की शक्ति पर ही शैली की उत्कृष्ठता अवलंबित है।" सामान्य रूप से कहानी की शैली में आलंकारिक, प्रतिकात्मक, रोचक, भावात्मक, आंचलिक तथा व्यंग्यात्मक, आदि गुणों का समावेश रचना को कलात्मक परिपूर्णता प्रदान करता है।

4.2.1 प्रमुख शैलियाँ

हिंदी कहानी के क्षेत्र में अनेक शैलियों का प्रयोग हो रहा है। ये शैलियाँ अपने स्वरूपगत वैविध्य के माध्यम से एक ओर कहानी की कलात्मकता परिपक्वता का दयोतन करती है। साथ ही दूसरी ओर इनसे समकालीन प्रवृत्तियों का भी परिचय मिलता है। कहानी की प्रमुख शैलियाँ इस प्रकार हैं-

विश्लेषणात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, संवादात्मक शैली, नाटकीय शैली, डायरी शैली, पत्र शैली, वर्णनात्मक शैली, आंचलिक शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली काव्यात्मक शैली, लोककथात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, व्यंग्यात्मक शैली आदि।

4.2.2 शैली का महत्व

आधुनिक दृष्टिकोण से शैली कहानी का एक विशिष्ट उपकरण है। अनेक विचारकों ने शैली के महत्व का निरूपण करते हुए उसे रचनाकार के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बताया है। शैली का वैशिष्ट्य कहानी लेखक के व्यक्तित्व की मौलिक प्रतिभा संपन्नता का व्योतक होता है। शैली के महत्व का एक प्रमुख पहलू यह है कि यह संचार को प्रभावी बनाती है। व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, और अनुभवों को एक विशेष शैली में प्रस्तुत करके दर्शकों के साथ एक मजबूत कनेक्शन बना सकता है। यह शैली व्यक्ति के काम को यादगार बनाती है और उसे दूसरों से अलग करती है। शैली के माध्यम से, व्यक्ति अपनी विशेषता और रचनात्मकता को दिखा सकता है। यह कला, साहित्य, या संगीत जैसे क्षेत्रों में नवाचार और उत्कृष्टता को बढ़ावा देती है। शैली का विकास करने से व्यक्ति की पहचान और उसकी कला का स्तर बढ़ता है।

सुशीला टाकभौरेकी कहानियों में प्रस्तुत शैली

4.2.2.1 वर्णनात्मक शैली

हिंदी कहानियों में आरंभ से ही इसी शैली का प्रयोग होता आ रहा है। इस शैली में किसी भी दृश्य या पात्र का सरल और सीधे ढंग से वर्णन किया जाता है। पात्रों की स्थितियों और उनके परिवेश के चित्रण द्वारा संपूर्णता का आभास दिलाने में यह शैली विशेष रूप से उपयोगी होती हैं।

सुशीला टाकभौरे ने अपनी कहानीयों में लेखक की स्थिति वस्तु घटना पात्र आदि का चित्रित कि है। जिससे वर्णन संजीव और चित्रात्मक बन गया है।

'संघर्ष' कहानी मे लेखिका घर के सामने पेड़ का वर्णन करते समय वर्णनात्मक शैली का इस प्रकार प्रयोग किया है- "घर के सामने आम के बड़े पेड़ हैं। घर के पीछे भी आम का बगीचा है।'आम के मौसम में पेड़ों पर मंजरी आती, मंजरी की भीनी-भीनी सुगन्ध से वातावरण महकने लगता। बरसात के दिनों में आम के पेड़ों पर कोयल कुहुकती रहती। गलगल, गौरव्या जमीन पर फुदक-फुदक कर अपना खाना-दाना ढूँढती रहतीं। "कुहू... कुरू..." कोयल की आवाज की नकल करके शंकर कोयल को चिढ़ाता। जमीन पर बैठी दाना चुगती चिड़ियों को वह भाग-भाग कर उड़ाता। कभी आम के पेड़ों पर काले मुँह के बन्दर आते। वे घर के ऊपर भी चढ़ जाते। शंकर उनको चिढ़ाने के लिए- "हूप... रूप" चिल्लाता और उनके सामने बन्दर की तरह उछलकूद करता, तब बन्दर भी ज्यादा उछलकूद मचाते। वे घर के कवेलू तोड़कर और गिराकर बड़ा नुकसान करते।"[10]

'छौआ माँ' कहानी में बच्चा होने पर छौआ माँ बच्चा का आवल किस प्रकार गिराती है यह लेखिका ने वर्णनात्मक शैली प्रयोग करके बताया है- "छौआ माँ ने अपनी कुशलता और तकनीक से आंवल गिराई। गरम पानी, नरम टॉवल, सेफ्टी ब्लेड और मजबूत मोटा धागा वह पहले ही पास में रखवा लेती है। उसने बच्चे की नाल नाभि से चार-पाँच ऊँगल दूर से काटकर मजबूत धागे ते कस कर बांध दी। बच्चे को कुनकुने पानी से नहलाकर नरम टॉवल में लपेट दिया। "ऊआं-ऊआं" बच्चा रोये जा रहा है। उसके ऊआं-ऊआं" से घर में मानो खुशियाँ बरस रही है। छौआ दाई माँ भी खुश है।"[11]

4.2.2.2 विश्लेषणात्मक शैली

विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग मनोवैज्ञानिक कहानियों में किया जाता हैं। इसमें पात्रों के चेतन-अचेतन विचारों को घटना परिस्थिति के माध्यम से अभिव्यक्ति देने की कोशीश की जाती है। इसमें विश्लेषण को प्रमुखता दी जाती है।

सुशीला टाकभौरे की कहानियों में विश्लेषणात्मक शैली का इस प्रकार का प्रयोग दिखाई देती है-

'सलीम की अनारो' कहानी में लेखिका ने सलीम की माँ का और सलीम का इस प्रकार विश्लेषण किया है – "वही सफेद झाग जैसा रंग, वही नूरानी आँखें, वही कद- काठी, वही तराशा हुआ चेहरा। बाल कुछ सफेद जरूर हो गये हैं, मगर घने लम्बे वैसे ही हैं। सलीम भी बड़े सुन्दर हैं। बिल्कुल अपनी माँ पर गये हैं। वही गोरा रंग, वही घने काले बाल, मध्यम कद-काठी, सलीकेदार रहन-सहन। उनका हँसना-मुस्कुराना भी बड़ा सुन्दर और सलीकेदार लगता है।"[12]

4.2.2.3 संवाद शैली

संवाद शैली में अक्सर किसी वार्ता, बातचीत या दो या अधिक चरित्रों के बीच संवाद होता है। यह चरित्रों के विचार, भावनाएं, और व्यक्तित्व को प्रकट करने का एक अच्छा तरीका होता है। संवाद शैली में प्रस्तावना किसी समस्या, घटना, या संदर्भ के माध्यम से चरित्रों को प्रस्तुत करती है, जिससे पाठक को कहानी की मुख्य थीम और प्रसंग का परिचय मिलता है।

'सलीम की अनारो' कहानी में संवाद शैली इस प्रकार मिलती है –

"सर इसने मेरी किताब फाड़ दी-"

"सर इसने मेरी कॉपी चुरा ली-"

"सर इसने मेरा पेन ले लिया"

'संभव असंभव' कहानी में संवाद शैली इस प्रकार से आयी है-

"नहीं-"

"पति से झगड़ा करोगी?"

"नहीं-"

"माँ से झगड़ोगी?"

"नहीं-"

"जिन्दा रहना चाहोगी?"

"हाँ"

"किसके लिए?"

"…"[13]

'सूरज के आसपास' कहानी में संवाद शैली इस प्रकार से आयी है –

"आप अन्दर नहीं थीं?"

"आप बाहर कैसे आयीं?"

"आप बाहर क्यों रहीं?"

"आप अन्दर क्यों नहीं रहीं?"[14]

4.2.2.4 <u>आत्मकथात्मक शैली</u>

लेखक या पात्र किसी-न-किसी रूप में अपने संबंध में कुछ कहता है। कभी- कभी यह कार्य सीधे वर्णन द्वारा तथा तीसरे व्यक्ति द्वारा भी किया जाता है। इसमें घटनाओं की अपेक्षा व्यक्ति को महत्व दिया जात है।

'छौआ माँ' कहानी में आत्मकथात्मक शैली इस प्रकार मिलती है –

छौआ माँ दाईपने का काम छोड़ती है तब वह दूर तारों को देखती हुई अपने जीवन की पिछली घटनाओं को याद करती है और अपने आप से बातें करने लगती है" अब का गाँव की बहू-बेटियों के पाँव भारी होना बन्द हो गए हैं? बहुत दिनों से किसी की खबर ही नहीं मिली ?...हाँ, अब तो गाँव में डॉकदर अस्पताल भी ज्यादा हो रहे हैं। वैसे भी आजकल फेमली पिलानिंग की बात खूब चलती है- 'ज्यादा बच्चे पैदा मत करो' सरकार ऐसा सबसे कहे है। मगर सरकार को का करनो है। कोई कितने भी बच्चे पैदा करे, सरकार थोड़े ही उन्हें खिलाये है। बच्चों का पालन-पोषण तो बच्चों के माँ बाप ही करें हैं। फिर भी लोग सरकार की बात सुन रहे हैं, आदमी-औरतें नसबन्दी कराने लगे हैं। ज्यादा से ज्यादा तीन बच्चे या दो बस। परिवार छोटे होते जा रहे हैं।"[15]

'संभव असंभव' कहानी में लेखिका खुद से बातें करने लगती है। "अपने मन के बढ़ते उद्वेग में डूबकर वह स्वयं से बोली-

"बकवास... एकदम बकवास..."

"क्या सचमुच?"

"कौन था वह?"

"ऊँह-"

"फिर भी?"

"था कोई बन्दर, भालु, उल्लू, गधा-" "ऐसी भी क्या नाराजी?"

"नाराजी नहीं तो क्या? भला यह भी कोई मजाक है?"

"तुमने भी तो मजाक के रूप में ही लिया था। फिर इतना दुख क्यों?"

"दुख?... पता नहीं दुख क्यों है?"

"तुम तो समझदार हो, फिर पश्चाताप का दुख होने की गलती भला क्यों? मनाली सोच में डूब गई।"[16]

4.2.2.5 आंचलिक शैली

आंचलिक शैली में कहानी की प्रस्तावना में सामान्यतः किसी गाँव या छोटे शहर का वर्णन होता है, जिसमें लोगों की दैनिक जीवनशैली, संस्कृति और परिवेश का बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कहानी की प्रस्तावना में आंचलिक शैली में आम लोगों की आम समस्याओं, खुशियों, उनकी सोच और भावनाओं का विवरण होता है। इसमें स्थानीय रंग, भाषा और परंपराओं का परिचय भी होता है, जिससे पाठक को कहानी के परिवेश में भटकने का अनुभव होता है।

'सिलिया' कहानी में आंचलिक शैली का प्रयोग इस प्रकार दिखाई देता है- "वह बकरी वाली कैसे चिल्ला रही थी- "अरी बाई, दौड़ो री, जा मोड़ी को समझाओ। देखो तो मना करने के बाद भी कुएँ से पानी भर रही है, हमारी रस्सी बाल्टी खराब कर दई जाने...." और मामी को डाँटते हुए उसने कितनी बातें सुनाई थीं-"क्यों बाई, जई सिखाओ हो तुम अपने बच्चों को? एक दिन हमारे मूड पर मूतने की कह देना... तुम्हारे नजदीक रहते हैं, तो क्या हमारा धरम-करम नहीं है?... का मरजी है तुम्हारी? साफ- साफ कह दो..."[17]

4.2.2.6 भावात्मक शैली

भावात्मक शैली में व्यक्तियों के भावनात्मक संघर्ष, आनंद, दुःख, उत्साह, और उनकी भावनाओं का विवरण होता है। इस शैली में कहानी की शुरुआत वाणीज्यिक शब्दों का प्रयोग करके चरित्रों की मनोभावनाओं को प्रकट करने के लिए की जाती है। यह शैली पाठक को कहानी के विभिन्न पहलुओं की गहराई से जोड़ती है और उन्हें कहानी के विषय पर सोचने और आत्म-अवलोकन करने के लिए प्रेरित करती है। 'बदला' कहानी में आक्रोश भावात्मक शैली इस प्रकार आयी है "भंगी की औलाद... अछूत शूद्र... भिखारी... भिखमंगे... हमारी दया पर जीने वाले.... हमारे टुकड़ों पर पलने वाले... आजकल इनको बहुत घमंड आ गया है... बहुत गर्रा गये हैं... संडे-मुसंडे हो गये हैं... इनको तो गाँव में घुसने नहीं देना चाहिए... इनके लिए पहले वाले नियम ही ठीक थे... अंग्रेजों ने हमारे धर्म का सत्यानाश कर दिया अछूतों को हमारे सिर पर बैठा दिया। हमारी सरकार भी इनको बहुत बढ़ावा देती है।... इनके हौसले बहुत बढ़ गये हैं... इनको ठीक करना ही पड़ेगा... एक-एक को मार डालेंगे... इनके घरों में आग लगा देंगे..."[18]

'छौआ माँ' कहानी में भावात्मक शैली इस प्रकार आयी छौआ माँ आक्रोश के भाव से कहने लगी "गाँव वाले ऐसी कहे हैं- मेरी बेटी वामन बनिया की छोरी है। इनके मुँह में आग लग जाए, इनको शरम नहीं आए? मोहे झूठो पाप लगाये हैं... इनको सत्यानाश हो।" उसका सहनशील हृदय इस व्यथा को झेल नहीं पाया। वह भी पलट कर गुस्से से फुफकार उठी "अरे, इस गाँव की एक-एक बात को मैं जानूं हूँ। सबका काला-पीला मैं जानूं हूँ। वामन-वनिया कौन से भले होय हैं? सब में कालो-पीलो भरो है। वे हमको बुरा कहें हैं, वे तो हमसे हजार गुना बुरे होय है..।"[19]

'धूप से भी बड़ा' कहानी में भावात्मक शैली इस प्रकार आयी है – "पलंग पर लेटी हुई रोमा छत को देख रही थी। अनेक विचार मस्तिष्क में कौंध रहे थे। उसने सोचा वह कितनी निर्दयी है, उसने सुनील के विषय में कभी विचार नहीं किया-केवल इसलिए कि वह सेडयुलकास्ट है, एस.सी. है, निम्न वर्ण हैं? उच्च वर्ण की सुसंस्कृत बेटी होने के कारण वह उससे विवाह नहीं कर सकती थी। फिर उसने क्रिश्चियन बन्टी से विवाह क्यों किया? क्या इसलिए कि वह अधिक सुन्दर

था? अधिक फॉरवर्ड, मॉर्डन, रसिया, हीरो था? बन्टी के लिए उसने अपना धर्म भी बदल लिया, रमा से वह रोमा बन गयी- रोमा डिसूजा।"[20]

4.2.2.7 व्यंग्यात्मक शैली

व्यंग्यात्मक शैली में सामान्यतः विभिन्न समस्याओं, सामाजिक तथा राजनीतिक स्थितियों, और मानवीय व्यवहारों को हास्यास्पद रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस शैली में कहानी की प्रस्तावना चरित्रों के वाणीज्यिक संघर्ष, अनूठे परिस्थितियों, और अद्भुत घटनाओं के माध्यम से किया जाता है, जिससे पाठक को हास्य और चिंतन का मेल मिलता है।

'छौआ माँ' कहानी में जब छौआ माँ की बेटी तुलसा ने दाईपने का काम करने केलिए इन्कार किया तब छौआ माँ से सुवर्ण जाती के लोगों ने व्यंग्य के साथ कहा- "कैसे नहीं करेगी वा ये काम? तेरी मोड़ी का बामन-बनिया की छोरी है?"[21]

4.2.2.8 पूर्वदीप्ति शैली

पूर्वदीप्ति शैली, जिसे "फ़्लैशबैक" भी कहा जाता है, एक कथा तकनीक है जिसका उपयोग कहानियों, उपन्यासों, फिल्मों, और टेलीविज़न शो में अक्सर किया जाता है। इस शैली में कहानी के पात्र या कथानक एक समय में पीछे जाते हैं ताकि दर्शकों को या पाठकों को किसी महत्वपूर्ण घटना, अनुभव, या जानकारी के बारे में जानकारी मिल सके जो वर्तमान कथानक को बेहतर तरीके से समझने में मदद करती है।

'धूप से भी बड़ा' कहानी में रोमा आराम कुर्सी पर बैठकर पाँच साल पहले की यादों में खो गई। "कितनी छोटी थी वह, केवल सतरह-अठारह साल की, गोरी, सुन्दर, गोल मटोल, निडर, हंसमुख मिलनसार और बातूनी। हाथ खर्च जी खोलकर करती थी। सहेलियों को खिलाना, हँसना, हँसाना,

पढ़ाई से जी चुराना, समय मिलते ही पीरियड छोड़कर कॉलेज से भाग जाना-उसके रोज के काम थे। उसके पिता पंडित देवीप्रसाद भारद्वाज के पास कितने ही शिकायत पत्र आते रहते थे मगर रोमा, रोमा नहीं, कुमारी रमा भारद्वाज ने सीधी राह चलना सीखा ही नहीं था। उसकी जो आदतें जूनियर कॉलेज में थीं, वही बी.ए. फर्स्ट ईअर में थी। इसी तरह उसने बी.ए. सेकण्ड ईअर पास किया था।”[22]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते है कि, भाषा-शैली की दृष्टि से देखा जाए तो सुशीला टाकभौरे की विवेच्य कहानी संग्रहों की कहानियाँ अधिक सफल बन चुकी है। भाषा के विभिन्न प्रयोगों से उनकी कहानियों में निखार आया है। प्रस्तुत कहानियों में जादातर उर्दू, शब्दयुग्म और अंग्रेजी शब्दों का प्रभाव दिखाई देता है। अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग को कहानीकारने पात्रानुकूल बनाकर उसे मरोडा हैं। सुशीला टाकभौरे ने शैली के अनेक रूपों को अपनी कहानियों के लिए चुना है, जैसे वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, आदि शैलियाँ विद्यमान है। बढ़िया शैली के कारण उनकी कहानियाँ प्रभावी लगती है। जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि, भाषा शैली की दृष्टि से सुशीला टाकभौरे की कहानियाँ सफल हो चुकी हैं। सुशीला टाकभौरे की कहानियों में भाषाशैली का उचित प्रयोग हुआ है। भाषा के कुल प्रयोग में संयत-सा व्यक्त होता है।

संदर्भ

1) त्रिगुणायत गोविंद, शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत, पृ. 111
2) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.38
3) टाकभौरे सुशीला, जरा समझो, पृ.43
4) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.30

5) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ. 103
6) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.81
7) टाकभौरे सुशीला, जरा समझो, पृ.36
8) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.73
9) जिज्ञासु, मोहनलाल कहानी और कहानीकार, पृ.29
10) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.15
11) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.69
12) टाकभौरे सुशीला, जरा समझो, पृ.74
13) टाकभौरे सुशीला, जरा समझो, पृ.75
14) टाकभौरे सुशीला, जरा समझो, पृ.8
15) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.7
16) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.11
17) टाकभौरे सुशीला, जरा समझो, पृ.2
18) टाकभौरे सुशीला, जरा समझो, पृ.3
19) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.7
20) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.99
21) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.75
22) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, पृ.97

उपसंहार

सुशीला टाकभौरे ने अपने साहित्य के माध्यम से दलित समाज की पीड़ा, चिंता, और दिशा को गहराई से उजागर किया है। उनका साहित्य दलित समुदाय के संघर्षों, उनके दुखों, और उनके संकल्पों का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत करता है। सुशीला जी के लेखन में दलितों की मार्मिक स्थिति को स्पष्ट रूप से दिखाया गया है, जिसमें उन्होंने दलितों के सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक शोषण को बखूबी दर्शाया है।

प्रस्तुत शोध में 'दलित' शब्द का अर्थ, उसकी परिभाषाएँ और दलित समुदाय के लिए हुए आंदोलनों पर विचार किया है। सुशीला टाकभौरे की कहानियों का विश्लेषण उनके कथानक, पात्र-चित्रण, भाषा शैली और उद्देश्य के माध्यम से किया है। उनकी कहानियों में सामाजिक संघर्ष, जैसे छुआछूत और जातिगत भेदभाव, साथ ही आर्थिक संघर्ष और शिक्षा से जुड़ी कठिनाइयों को बारीकी से प्रस्तुत किया गया है। सुशीला टाकभौरे ने अपने साहित्य में समाज में आज भी दलितों के प्रति मान-सम्मान की कमी को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है। उनके साहित्य में डॉ. भीमराव अंबेडकर की विचारधारा का प्रभाव देखा जा सकता है, जिसमें दलित समुदाय के उत्थान के लिए प्रेरणा दी गयी है और उन्हें अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

सुशीला टाकभौरे की भाषा शैली सरल और प्रभावशाली है, जिससे पाठकों को उनके साहित्य को आसानी से समझने में मदद मिलती है। उन्होंने विभिन्न शैलियों का उपयोग अपने साहित्य में किया है, जैसे वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शैली, जो उनकी कहानियों को और भी आकर्षक बनाती है।

सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलितों के संघर्ष की मार्मिकता, उनके अधिकारों के हनन की पीड़ा, और सामाजिक अन्याय की गंभीरता का चित्रण किया गया है। उनकी कहानियाँ पाठकों को दलित समुदाय के संघर्ष, उनके अनुभव और उनकी इच्छाओं को समझने में सहायता करती हैं। उनका साहित्य न केवल दलित समाज की समस्याओं और चुनौतियों को प्रकट करता है, बल्कि सामाजिक न्याय और समानता की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित भी करता है। टाकभौरे के

लेखन ने दलित समाज की आवाज़ को बुलंद किया है और उनकी कहानियों के माध्यम से पाठकों को दलितों के संघर्ष और उनके जीवन की वास्तविकताओं से परिचित कराया है। उनकी कहानियाँ न केवल दलित समुदाय के शोषण और भेदभाव की गंभीरता को उजागर करती हैं, बल्कि दलितों के आत्मसम्मान, अधिकारों और गरिमा के लिए संघर्ष को भी दर्शाती हैं।

कुल मिलाकर, प्रस्तुत शोध कार्य का मुख्य विषय "सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलित संघर्ष है" जिसमें दलितों पर हुए अत्याचारों और उनके जीवन की कठिनाइयों को गहराई से समझाया है। प्रस्तुत शोध में साहित्य की समृद्धि और विविधता का अध्ययन किया है और उनके माध्यम से दलित समाज के प्रति जागरूकता बढ़ाई है।

सुशीला टाकभौरे के साहित्य ने दलित संघर्ष के विविध पहलुओं को स्पष्ट रूप से उजागर किया है। उनके लेखन से हमें दलित समुदाय के जीवन की जटिलताओं, उनके संघर्ष और उनकी जीत के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इस प्रकार, प्रस्तुत शोध में सुशीला टाकभौरे के साहित्य के माध्यम से दलित समाज के संघर्षों को गहराई से समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलित संघर्ष के विभिन्न पहलुओं का गहन विश्लेषण किया गया है। उनकी कहानियाँ दलित समुदाय की हाशिए पर रहने की स्थिति, समाज में उनके प्रति भेदभाव, और उत्पीड़न के अनुभवों को व्यक्त करती हैं। उदाहरणस्वरूप, उनकी कहानियों में जातिगत भेदभाव, आर्थिक विषमताओं, और शोषण के विरुद्ध संघर्ष को प्रमुखता से दर्शाया गया है। उनकी रचनाएँ दलितों के संघर्षों को मानवीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती हैं, जिसमें उनके जीवन की कठिनाइयों और चुनौतियों के साथ-साथ उनकी संघर्षशीलता और साहस का चित्रण भी किया जाता है।

इसके अलावा, टाकभौरे की कहानियाँ दलितों के आत्मसम्मान, अधिकारों, और न्याय की मांग को भी उठाती हैं। उनकी कहानियों के माध्यम से समाज में जागरूकता लाने की कोशिश की जाती है ताकि दलितों के प्रति भेदभाव को समाप्त किया जा सके। कुल मिलाकर, सुशीला

टाकभौरे की कहानियाँ दलित संघर्ष के यथार्थ को उजागर करने के साथ-साथ समाज में परिवर्तन और समता की दिशा में प्रेरणा देने का कार्य करती हैं।

संदर्भ सूची

- **आधार ग्रंथ**

1) टाकभौरे सुशीला, संघर्ष, ज्योतिलोक प्रकाशन, दिल्ली, 2012
2) टाकभौरे सुशीला, जरा समझो, वाणी प्रकाशन, 2015

- **सहायक ग्रंथ**

1) 'अरूष' हरपालसिंह, दलित साहित्य के आधार तत्व, भारतीय पुस्तक परिषद नई दिल्ली, 2011
2) ओमवेट गेल, दलित दृष्टि, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2011
3) आंबेडकर डॉ. बी.आर, अछूत कौन और कैसे, गौतम बुक सेंटर, दिल्ली, 2005
4) कर्दम डॉ. जयप्रकाश, दलित विमर्श साहित्य के आइने में, साहित्य संस्थान प्रकाशन, गाजियाबाद, 2009
5) कुमार अजय, दलित पैंथर आंदोलन, गौतम बुक सेंटर प्रकाशन, दिल्ली, 2006
6) खान डॉ. एम. फिरोज इकरार अहमद, दलित विमर्श और हम, साहित्य संस्थान प्रकाशन, गाजियाबाद 2010
7) गुप्ता रमणिका, दलित हस्तक्षेप, अक्षर शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली, 2008
8) चंचरीक कन्हैयालाल, आधुनिक भारत का दलित आंदोलन, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2012
9) चंद्र डॉ. सुभाष, दलित मुक्ति आंदोलनः सीमाएं और संभावनाएं, आधार प्रकाशन, हरियाणा, 2010
10) कानपुर जाधव डॉ. सुनील हिंदी साहित्य दलित विमर्श चंद्रलोक प्रकाशन

11) पटेल मनोज कुमार आर., भारतीय दलित साहित्य, वितरक दर्पण प्रकाशन, गुजरात, 2008

12) पांडेय दीपक कुमार, दलित-विमर्श और हिंदी साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2017

13) डॉ. पूरणमल, दलित संघर्ष और सामाजिक न्याय, अविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर, 2002

14) मेघवाल डॉ. कुसुमलता, हिंदी उपन्यासों में दलित वर्ग, कल्चरल प्रकाशन, लखनऊ, 1996

15) सगरे डॉ. भरत, दलित साहित्य अनुसंधान के आयाम, दिव्य डिस्ट्रिब्यूटर्स प्रकाशन, कानपुर, 2011

16) सिंह डॉ. एन दलित साहित्य परंपरा और विन्यास, साहित्य संस्थान प्रकाशन, गाजियाबाद, 2011

17) सुरवाडे डॉ. चंद्रभान, ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में दलित चेतना, रोली प्रकाशन कानपुर, 2016

18) वाघमारे डॉ. जनार्दन, दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली, 2014

• पात्रिका

1) नावरिया अजय, हंस, अक्षर प्रकाशन, प्रा. लिए, नई दिल्ली, 2019

2) मधुसूदन आनन्द, नया ज्ञानोदय, अंक 222, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2023

• <u>वेबसाइट</u>

1) https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A6%E0%A4%B2%E0%A4%BF%E0%A4%A4

2) https://www.hindwi.org/poets/sushila-takbhaure/profile